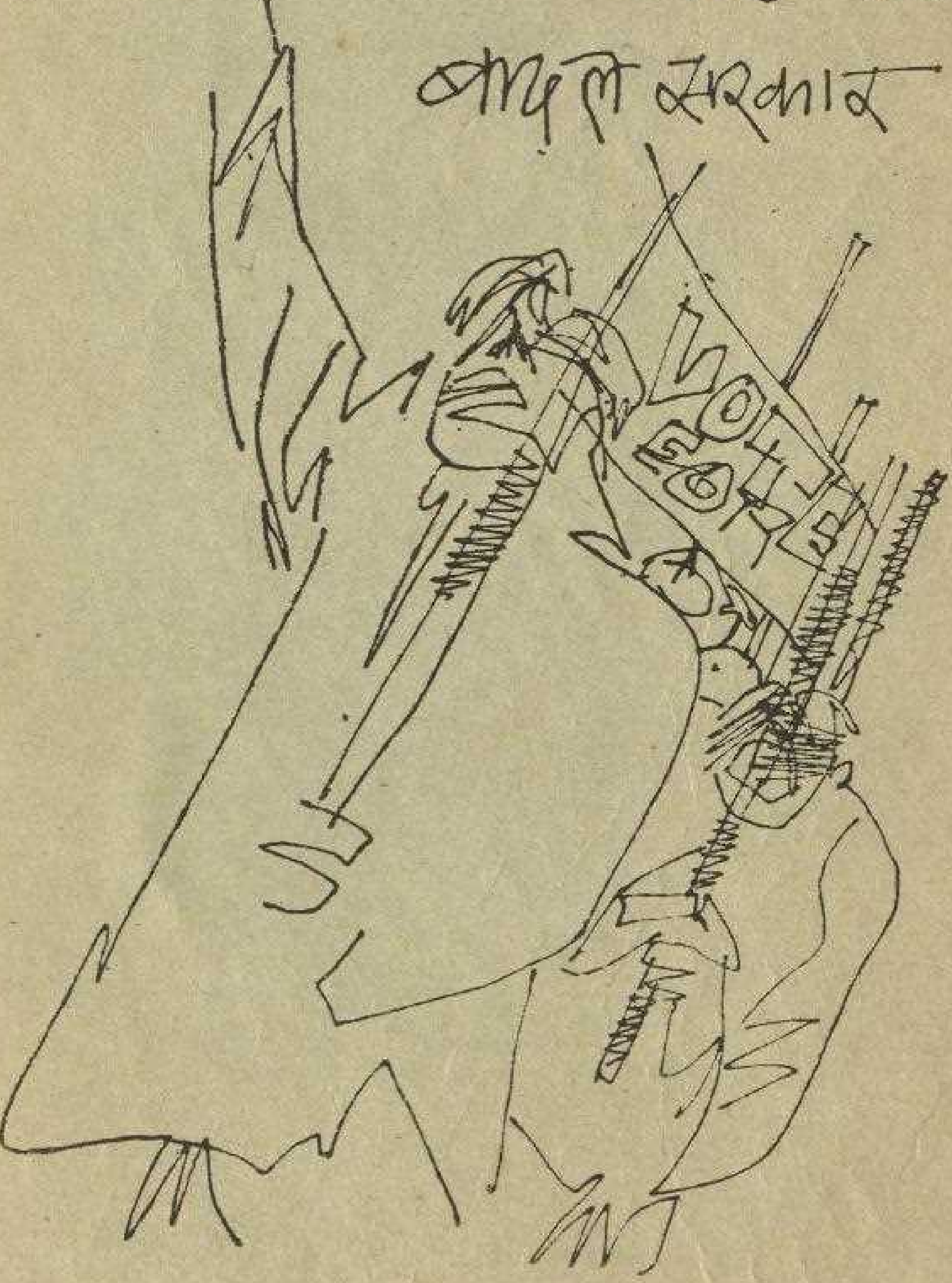
বর্গী কাহিনী

বাদল সরকার



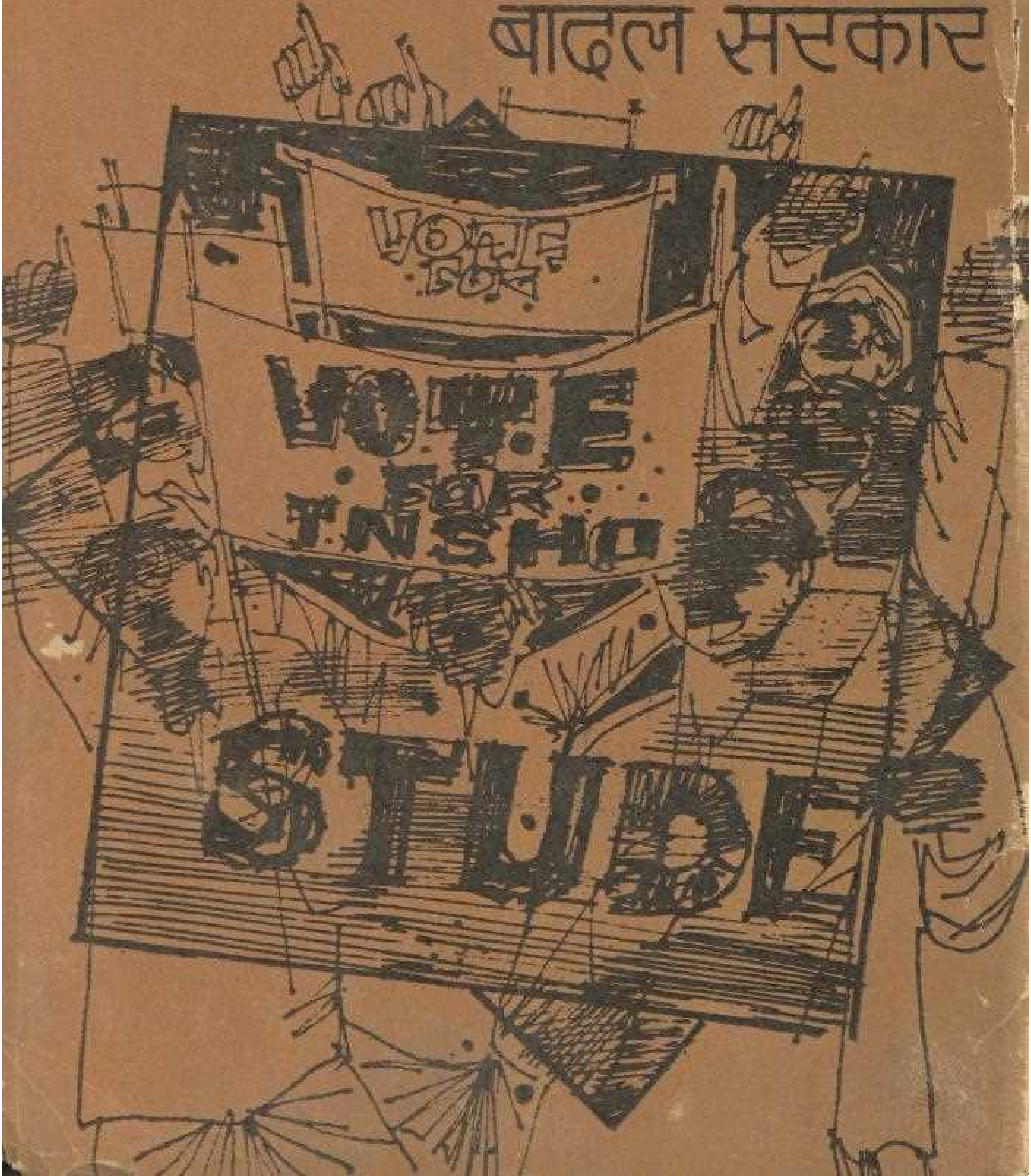
कवि काहिनी

श्री बादल सरकार का
अप्रतिम हास्य नाटक

विद्या प्रकाशन मन्दिर
नई दिल्ली–२

कवि काहिनी

बादल सरकार



मूल्य : [redacted]

संस्करण : प्रथम 1981

प्रकाशक : विद्या प्रकाशन मंदिर
1681 दरियागंज, नई दिल्ली-2

मुद्रक : हिन्दुस्तान प्रिंटर्स, दिल्ली-32

KAVI KAHINI by Badal Sarkar [redacted]

हिन्दी अनुवाद
अशोक भट्टाचार्य

इस नाटक के हिन्दी मंचन के लिए अनुवादक अशोक भट्टाचार्य से से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है।

पत्र-व्यवहार का पता—

श्री अशोक भट्टाचार्य
बी-16, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन
नई दिल्ली

बादल सरकार द्वारा लिखित तथा अशोक भट्टाचार्य द्वारा अनूदित इस नाटक का सर्वप्रथम प्रदर्शन 14 सितम्बर 1971 को 'अग्रदूत' दिल्ली द्वारा फाइन आर्ट थियेटर में हुआ।

निर्देशक—दीनानाथ

कलाकार

अरविन्द	आर. एन. राजा
लिलि	कामिनी चंदिहोक
मणिबाबू	राजेन्द्र कुमार
पांचू	आनंद एस. गुप्ता
मोहन	कीमती आनंद
सुप्रीति	मीना विलियम्स
सनत	अनिल सहगल
अटल बाबू	अशोक सरीन
स्मरजीत सान्याल	कुलभूषण खरबन्दा

नेपथ्य में

सेट	कुलभूषण खरबन्दा
प्रकाश	एस. मुखर्जी

कवि काहिनी

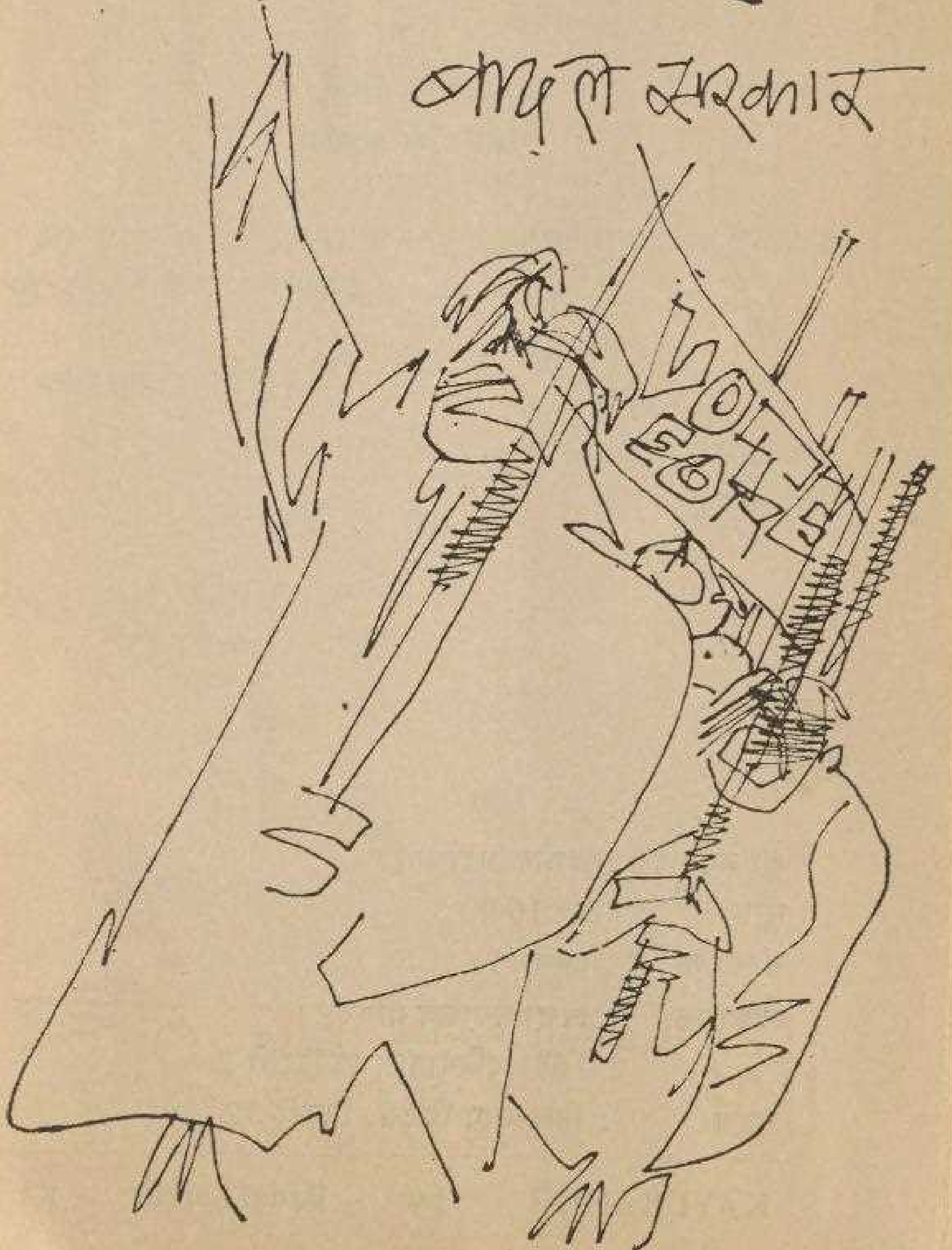
श्री बादल सरकार का
अप्रतिम हास्य नाटक

विद्या प्रकाशन मन्दिर

नई दिल्ली-२

কবি কাহিনী

বাদল সরকার



© अनुवादक : अशोक भट्टाचार्य
मूल्य : रु० 16.00
संस्करण : प्रथम 1981
प्रकाशक : विद्या प्रकाशन मंदिर
1681 दरियागंज, नई दिल्ली-2
मुद्रक : हिन्दुस्तान प्रिंटर्स, दिल्ली-32

KAVI KAHINI by Badal Sarkar Rs. 16.00

हिन्दी अनुवाद
अशोक भट्टाचार्य

इस नाटक के हिन्दी मंचन के लिए अनुवादक अशोक भट्टाचार्य से से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है।

पत्र-व्यवहार का पता—

श्री अशोक भट्टाचार्य
बी-16, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन
नई दिल्ली

बादल सरकार द्वारा लिखित तथा अशोक भट्टाचार्य द्वारा अनूदित इस नाटक का सर्वप्रथम प्रदर्शन 14 सितम्बर 1971 को 'अग्रदूत' दिल्ली द्वारा फाइन आर्ट थियेटर में हुआ।

निर्देशक—दीनानाथ

कलाकार

अरविन्द	आर. एन. राजा
लिलि	कामिनी चंदिहोक
मणिबाबू	राजेन्द्र कुमार
पांचू	आनंद एस. गुप्ता
मोहन	कीमती आनंद
सुप्रीति	मीना विलियम्स
सनत	अनिल सहगल
अटल बाबू	अशोक सरीन
स्मरजीत सान्याल	कुलभूषण खरबन्दा

नेपथ्य में

सेट	कुलभूषण खरबन्दा
प्रकाश	एस. मुखर्जी

प्रथम दृश्य

(पर्दा उठने से पहले ही नेपथ्य से सुनाई देता है—"वोट फॉर, मणि मजुमदार"। ध्वनि धीरे-धीरे दूर होती जाती है। फिर "वोट फॉर—चिदानन्द ब्रह्मचारी" अधिक कंठस्वर और अधिक तीव्र ध्वनि है इस बार। इस ध्वनि के समाप्त होने से पहले ही पर्दा उठता है। एक ड्राईंग रूम है। एक ओर एक आफिस टेबिल और एक कुर्सी, लगता है जैसे इस कमरे में इनका अनाधिकार प्रवेश हो—सामयिक प्रयोजन से। दीवार से टिके कुछ बड़े-बड़े पोस्टर मणि मजुमदार के लिए वोट प्रार्थना कर रहे हैं। टेबिल पर काफी कागज वगैरह फैला हुआ है, वोटर्स लिस्ट आदि। अरविन्द आफिस टेबिल पर कागज पर किसी एक दुरूह रचना पर पसीना-पसीना हो रहा है। लिखता है, पढ़ता है, काटता है, सोचता है फिर लिखता है। एक विशाल शब्दकोश पलट रहा है।

लिलि का उच्छवल प्रवेश। गाते हुए। अरविन्द को देखकर ठिठक कर रुक जाती है।)

लिलि : अरे रे!

अरविन्द : क्या हुआ? अरे—सुनो तो···

लिलि : क्या?

अरविन्द : जा क्यों रही हो?

लिलि : आप व्यस्त हैं।

अरविन्द : ना—हाँ, मतलब काम जरा जरूरी है, यानी तुम्हारे पिताजी···

लिलि : आप काम कीजिए। मैं जाती हूँ।

अरविन्द : नहीं, नहीं, सुनो तो···एक वक्त···

लिलि : क्या, कहिए ?

अरविन्द : लिलि, तुमने मुझे अब तक 'आप' कहना नहीं छोड़ा ?

लिलि : वाह, आप कितने बड़े आदमी हैं, आपको मैं तुम कैसे कह सकती हूँ ?

अरविन्द : बड़ा हूँ, तो क्या हुआ ? और देखा जाए तो ऐसा क्या बड़ा हूँ ? मैं तो···

लिलि : मैं क्या सिर्फ उम्र की बात कर रही हूँ ?

अरविन्द : तो !

लिलि : सभी तरफ से बड़े हैं आप। आप ठहरे घोष एन्ड संस के बड़े सन। आप हैं बाघबन्दी कर्मशियल असोसियेशन के बाईस चेयरमैन···

अरविन्द : फिर मज़ाक शुरू कर दिया ?

लिलि : मज़ाक कब किया ? क्या नहीं हैं आप इनमें से ?

अरविन्द : इनमें से किसी की भी तुम कौड़ी भर कीमत नहीं लगाती हो। मैं तो···

लिलि : आप कुछ कहने वाले थे, बोले नहीं ?

अरविन्द : ऐं, क्या कह रहा था मैं ?

लिलि : आप कह रहे थे न, कुछ बात है।

अरविन्द : बात ? बातें तो बहुत कहनी हैं···कह कहाँ पाते हैं ?

लिलि : (फौरन) रहने दीजिए फिर—बाद में कहिएगा। अभी व्यस्त हैं···

अरविन्द : ना ना···व्यस्त माने···एक ड्राफ्ट बनाने को दिया था तुम्हारे पिताजी ने, उसी को···

लिलि : कैसा ड्राफ्ट ?

अरविन्द : एक लीफलेट का। चिदानंद के एक स्कैण्डल का जवाब। कमाल है, जानती हो तुम्हारी मां साहित्य-प्रेमी हैं, उसमें उन्होंने वे पाईन्ट निकाले हैं जिनका जवाब भी देना है।

लिलि : जरूर निकालेंगे।

अरविन्द : निकालेंगे क्यों ?

लिलि : मां की इस पत्रिका में कई आधुनिक चीजें छपती हैं।

अरविन्द : आधुनिक हुई तो क्या हुआ ? गंदा लेख है एक भी ? एक भी लेख कोई दिखा सकता है जो कुरुचिवाला—यानि शिष्ट न हो ?

लिलि : हाँ, मगर···आप कैसे जान गये ये सब ?

अरविन्द : (आहत) लिलि, क्या तुम सोचती हो, मैं साहित्य की कोई खबर नहीं रखता ?

लिलि : ना ना, ऐसा क्यों सोचने लगी मैं ? पर भास्वती पत्रिका का सब कुछ किसी ने पढ़ा हो—ऐसा सोचा नहीं जा सकता।

अरविन्द : क्यों ? मैंने पढ़ा है। एक-एक लेख पढ़ा है। मौसीजी के साथ कितनी बार डिस्कशन भी हुआ है।

लिलि : सब कुछ पढ़ा है आपने ?

अरविन्द : सब कुछ—एक-एक शब्द।

लिलि : कौन सा अंक पढ़ा है आपने ?

अरविन्द : सारे अंक—पाँच के पाँचों। जो छपने वाले हैं, अगले महीने, वो भी।

लिलि : वो कैसे पढ़ डाले आपने ?

अरविन्द : वाह, प्रूफ जो देखा था मैंने। मौसीजी ने तो सिर्फ फाईनल प्रूफ ही पढ़ा था।

लिलि : इतना काम कब कर लेते हैं आप ? सारे दिन तो बाबूजी के इलैक्शन पर ही मेहनत करते रहते हैं।

अरविन्द : प्रूफ तो मैंने आफिस में बैठकर देखे हैं। पिताजी को कह रखा है मैंने—मौसीजी के इलेक्शन तक मेरी ड्यूटी यहीं होगी।

लिलि : माँ की पत्रिका का प्रूफ देखना भी इलेक्शन का काम है क्या ?

अरविन्द : जरूर! कम से कम मैं तो ऐसा ही समझता हूँ। यही पाईन्ट तो मैं लीफलेट में ऐस्टाब्लिश करने की कोशिश कर रहा था। सुनोगी, क्या लिखा है मैंने ?

लिलि : पढ़िये न ?

अरविन्द : अभी खतम नहीं हुआ है, फिर भी...

लिलि : जितना भी हो गया है, उतना ही पढ़िए।

अरविन्द : (गला खँखारकर) परम स्नेहास्पद बाघबन्दी चुनाव क्षेत्र वासी...

लिलि : क्या बाघबन्दी...?

अरविन्द : परम स्नेहास्पद! माने—"स्नेहास्पद बाघबन्दी कान्स्टिटू-येन्सी के भ्राता और भगिनीगण !

लिलि : हाँ हाँ समझ गयी। आगे पढ़िये (मुश्किल से हँसी रोकती है।)

अरविन्द : "भ्राता भगिनीगण ! आपको ज्ञात है कि परम श्रद्धान्वित, देश प्रेमप्रवीन, कर्ममहावीर श्री मणिभूषण मजूमदार बी० बी० ए० बी० एल० महाशय बाघबन्दी के...

लिलि : क्या महाशय ?

अरविन्द : ए० बी० एल०—डिग्रियां साथ लगा दीं।

लिलि : ओ हाँ-हाँ ! सॉरी। आगे पढ़िये।

अरविन्द : बी० ए० बी० एल० महाशय, बाघबन्दी की सुयोग्य सुसन्तति यानी आप महानुभावों के वोटप्रार्थी हैं। मणिभूषण बाबू की विशिष्ट गुणभूषणोवाले का आप लोगों के समक्ष वर्णन करना बाहुल्य मात्र है, क्योंकि आप सभी को ज्ञात है—यह 'ज्ञात' दो बार आ गया है, इसे बाद में बदल डालूंगा। "आपके समक्ष इस आवेदन का मूलभूत उद्देश्य है इस केन्द्र के दूसरे धरतीफोड़ वोटप्रार्थी। अच्छा, 'धरतीफोड़' के लिए कोई अच्छा सा दूसरा शब्द बता सकती हो ?

लिलि : (हंसी रोककर) भूमिस्फोटक !

अरविन्द : राईट। बात पेट में आ रही थी, मुँह पर नहीं आ रही थी। "दूसरे भूमिस्कोटक बोटप्रार्थी के हास्यप्रद एवं कुत्सित, संस्कार अपकृष्ट प्रचेष्टा का मर्म उद्घाटन करना है। उक्त धरती—" नहीं, यहाँ भी भूमिस्फोटक होगा। "उक्त भूमिस्फोटक महाशय रटना कर रहे हैं कि परम पूजनीय सरस्वती आशीर्वादधन्या श्रीमती मजूमदार की साहित्य—डैश" डैश माने यहाँ मैं पैट्रोनाईजिंग कहना चाहता हूँ। क्या शब्द होगा यहाँ ?

लिलि : पैट्रन तो 'पृष्ठपोषक' होता है।

अरविन्द : हाँ, हाँ, ठीक। श्रीमती मजूमदार की साहित्य पृष्ठ-पोषकता—" साहित्य-पृष्ठ—जरा कुछ यूँ सा नहीं लग रहा ?

लिलि : नहीं तो, बढ़िया लग रहा है, बाकी लिखे के साथ।

अरविन्द : तुम कहती हो तो चलो ऐसे ही रहने दें। "साहित्य पृष्ठ-पोषकता अपराध तुल्य है। हे सुधीजन एवं भ्रातृ-भगिनीगण! आप अवश्य ही इस प्रकार के हास्योद्दीपक प्रलाप सुनकर हास्य विस्फारित हो रहे होंगे।" (अबतक लिलि हास्य से खुद विस्फोटित हो जाती, अगर इसी वक्त मणि भूषण का प्रवेश न होता।)

मणि : अरे लिलि—माँ कहाँ है तेरी ?

लिलि : बाहर गयी हैं।

मणि : बाहर गयी है, यह तो मैं भी जानता हूं। गई कहाँ है, पता है तुझे ?

लिलि : चंचला मौसी के घर गयी हैं।

मणि : चंचला मौसी के घर ? इतनी सुबह ?

लिलि : कहती थीं कि साहित्य-सभा का काम है—

मणि : साहित्य-सभा ? साहित्य को लेकर तो ये पागल हो रही हैं। मैं मर रहा हूँ यहाँ, और ये हैं साहित्य का कद्दू पका रही

हैं। अरविन्द, तुमने वो लिख लिया ?

अरविन्द : जरा सा बाकी है।

मणि : खत्म कर डालो जल्दी-जल्दी। जरा दबा के लिखना। कमाल है, साहित्य-प्रेम साहित्य-चर्चा—ये भी इन कमबख्तों को अपराध लगता है। निरक्षर भट्टाचार्य—साहित्य क्या समझेंगे ? (अरविन्द कागज पर जुट जाता है) कब लौटेगी, कुछ बताकर गयी है ?

लिलि : कुछ पता नहीं। मां काफी अपसेट हैं। स्मरजीत बाबू का जवाब नहीं आया अभी तक और कल साहित्य-सभा है।

मणि : स्मरजीत बाबू कौन हैं ?

लिलि : वाह रे ! स्मरजीत सान्याल ! अभी से भूल गये ?

मणि : ओ हो, वो कवि ? जिसे साहित्य-सभा का प्रेसीडेंट बना रही है तुम्हारी मां।

लिलि : प्रेसीडेंट नहीं, चीफ गेस्ट। प्रेसीडेंट तो तुम हो।

मणि : मैं प्रेसीडेंट हूँ, है ना ? मेरा ख्याल था, मैं चीफ गेस्ट हूँ।

लिलि : वाह ! वो कलकत्ता से आएँगे और आप यहाँ के रहनेवाले हो, आप गेस्ट कैसे हो सकते हो भला ?

मणि : कुछ भी हो, चलता है। क्या लगता है तुझे ? कुछ लाभ होगा तेरी मां को इस साहित्य-वाहित्य की सभा से ?

लिलि : आप भी क्या बात करते हैं ? हमारी सभा में स्मरजीत सान्याल को लाने से लड़कियों के वोट तो सॉलिड हो गये। कालेज की जितनी लड़कियाँ वोटर्स हैं, गर्ल्स स्कूल की टीचर्स—सब सेंट-परसेंट।

(अरविन्द आश्चर्य चकित)

मणि : ये क्या कहती है तू ?

अरविन्द : स्मरजीत सान्याल—कभी देखा नहीं इसका कुछ लिखा हुआ।

लिलि : नहीं देखा ? विदीर्ण-प्रेषणा ? सीता और एन्ड्रोमिडा ?

अरविन्द : मतलब भास्वती में कभी तो···

लिलि : आप क्या भास्वती को छोड़कर कभी कुछ नहीं पढ़ते ?

अरविन्द : ना ना—पढ़ूँगा क्यों नहीं ? माने—

लिलि : अभी इतने नीचे नहीं उतरे हैं स्मरजीत सान्याल कि भास्वती में छपे। उतारने के लिए माँ और चंचला मौसी जान लड़ा-कर कोशिश कर रहीं हैं। शायद अब हो जाए।

मणि : तू कहती है—लड़कियों के वोट सॉलिड हैं ?

लिलि : बिल्कुल। कम-से-कम उन लड़कियों के जो पढ़ी-लिखी हैं।

मणि : तब तो जरा खातिर करनी पड़ेगी। कल कब आ रहे हैं ?

लिलि : कल कहाँ ? आज शाम आने की बात है। और देखो, अब तक चिट्ठी तक नहीं आई।

मणि । आज क्यों ?

लिलि : माँ ने निमंत्रण दिया है। समय अगर ज्यादा न लेतीं तो भास्वती के लिए सान्याल साहब से लिखवा पातीं।

मणि : अच्छा ही किया। आज आ जाएँ तो कल की स्पीच के ऐन्गल पर भी जरा बातचीत की जा सकती है।

अरविन्द : स्मरजीत सान्याल का लिखा क्या सिर्फ लड़कियाँ ही पढ़ती हैं ?

लिलि : ऐसी बात तो नहीं है !

अरविन्द : तुम्हीं ने तो कहा न—लड़कियों के वोट···

लिलि : मैं तो लड़कियों की ही बात जानती हूँ, सो कह दिया। लड़कों की बात मैं भला कैसे जानने लगी।

अरविन्द : हाँ-हाँ। यह भी ठीक है।

मणि : अरे हाँ अरविन्द ! क्या लिखा तुमने जरा सुनाओ तो सही।

अरविन्द : सुनेंगे ? स्नेहास्पद बाघबंदी कान्स्टिटूयेन्सी के भ्रात-भगिनीगण। आपको ज्ञात है, परम श्रद्धान्वित, देशप्रेमिक, कर्ममहावीर श्री मणि भूषण मजूमदार बी० ए० बी० एल० महाशय बाघबंदी के योग्य संतान संतति···

(मणिभूषण हतवाक् हो जाते हैं।)

मणि : जरा देखूँ तो सही ये कागज़···

(कागज पढ़ते हैं और चमत्कृत होते हैं)

अरर···अच्छा बना है। यह मेरे पास ही रहने दो—जरा देख लूँगा।

अरविन्द : अभी तो खत्म नहीं हुआ है ये। और जरा दस मिनिट मिल जाएँ···

मणि : नहीं, नहीं, रहने दो। यह वैसा जरूरी भी नहीं है। और बहुत सारे अरजेन्ट काम पड़े हैं।

अरविन्द : कौन से कहिए। अगर मुझसे कुछ हो सके···

मणि : क्यों नहीं हो सकेगा? तुमसे नहीं हो सकेगा तो किससे होगा? भला, इतने जरूरी काम बाकी हैं···ये—यह लिस्ट लो। (टेबल से एक वोटर्स लिस्ट उठाते हैं) इन नामों को स्लिप्स पर लिखना है। नाम, बाप का नाम, पता और उम्र। मगर बड़ा रेसपॉन्सिबल काम है। इन स्लिप्स की एक्यूरेसी पर वोट हैं···समझ गये न?

अरविन्द : हाँ, समझ गया। नाम, बाप का नाम, पता, उम्र। स्लिप्स कहाँ मिलेंगी?

मणि : स्लिप? स्लिप शायद ऊपर मेरे कमरे में टेबल के नीचे एक ढेर रखा है। लिली, जरा देख तो जाकर।

अरविन्द : मैं लाता हूं।

(परम उत्साह से जाता है। मणिभूषण कागज दुबारा देखते हैं, देखकर सिहर उठते हैं)

लिलि : (भोली बनकर) यह लिखा हुआ तुम्हें अच्छा नहीं लगा बाबूजी?

मणि : ऐं। नहीं, नहीं, बुरा नहीं है। मगर···(लिलि अब सचमुच हंसी के मारे 'विस्फोटित' होती है।) हँसती क्यों है? हंसने की क्या बात है? इसमें अच्छी भाषा न लिखने से कोई··· कोई···ये नहीं हो जाता।

लिलि : बाबूजी, यह मुझे दे दो। इसे मैं अपने पास रखूँगी।

मणि : हँसना तो खूब आता है। लिखकर देना खुद, ठीक से।

लिलि : मैं ? मुझे लिखना कहाँ आता है ?

मणि : लिखना नहीं जानती—कालेज में सीखा क्या है ?

लिलि : मेरे पास तो इकनामिक्स आनर्स था। तुम्हीं ने तो कहा था कि साहित्य का वे आनर्स ही लेते हैं जिनसे कुछ और नहीं हो सकता।

मणि : तब कौन जानता था कि लीफलेट लिखने पड़ेंगे ? जरा देख न बेटा कोशिश करके। अब किससे लिखाएँ ? कल सुबह तक यह निकल जाना चाहिए।

लिलि : कोशिश कर सकती हूँ, पर इससे आपका काम नहीं बनेगा। आप किसी अपने पढ़े-लिखे को बुला लीजिए।

मणि : अरे, अच्छा ही सोचकर तो बुलाया था। (सँभलकर) नहीं, हाँ, ठीक ही कहती है तू। मगर है ही कौन ? इलेक्शन आफिस में तो क्लब के छोकरे हैं। और तो कोई···यस ! वाह ! ये बात अब तक···(घड़ी देखते हैं। देखकर फोन उठाते हैं।) हैलो ! बाघबन्दी हाई स्कूल दीजिए जरा··· नम्बर खुद ही देख लीजिए ना ! मैं मणि मजूमदार बोल रहा हूँ···हैलो···हेडमास्टर हैं ? कौन···जलधर बाबू ? मैं मणि मजूमदार, नमस्कार, नमस्कार। सुनिए, आपके स्कूल में साहित्य कौन पढ़ाता है ? मैं पूछना चाहता था—साहित्य में क्वालिफिकेशन किसकी है ? साहित्य में आनर्स···

(लिलि अब तक अरविन्द की रचना पर हँस रही थी। अरविन्द को प्रवेश करते देखकर हाथ की स्लिप छुपा लेती है और एक किताब उठा लेती है।)

अरविन्द : ये हैं न ?

(मणि फोन करते-करते रुक जाते हैं)

मणि : हूँ। एक मिनट सब्र करो। (फोन के मुँह पर हाथ रख देते हैं।)

अरविन्द : नहीं, नहीं, आप फोन कर लीजिए।

मणि : ठीक है, फोन से ये जरूरी है···हाँ। इन स्लिपों पर इस

लिस्ट से···तुम···तुम···बल्कि अंदर मेरे आफिस में बैठो।

अरविन्द : नहीं-नहीं, मैं तो यहीं ठीक हूँ, अंदर तो आप काम कीजिएगा।

मणि : हाँ-हाँ। अरे ये, जरा देखो तो, आफिस टेबल पर एक कागज़ छोड़ आया था···

अरविन्द : कैसा कागज ?

मणि : एक···एक वो—

लिलि : (भोली बनकर) मैं लाती हूँ, बाबूजी।

(मणिभूषण क्रोध से लिलि को देखते हैं)

अरविन्द : नहीं-नहीं, मैं लाता हूँ।

(आफिस रूम में जाता है।)

मणि : (जल्दी-जल्दी फोन में) हैलो···साहित्य में आनर्स कौन है ?···सनत् बोस कैसा है, होशियार है ?···लिखना-विखना आता है ?···सनत बोस, सनत···ओहो, वही जिसे पिछली बार रखा था ?···ओहो, अच्छा, तब तो प्रोबेशन में होगा अभी···हाँ, चलो अच्छा ही हुआ, सुनिए···(अरविन्द का प्रवेश) एँ···क्या है ?

अरविन्द : कुछ नहीं···ये कागज़···आपने कहा था न ? बहुत सारे कागज थे टेबल पर।

मणि : अरे कोई भी एक···(सँभलकर) एक वो···टाइप की हुई चिट्ठी, सामने ही है। जल्दी···मैं फोन पकड़े हूँ···(अरविन्द फिर दौड़ा) हैलो ! हैलो ! उसे अभी भेज दीजिए मेरे घर···अरे क्लास में है तो क्या हुआ ? क्लास और किसी से मैनेज करा लीजिए।···तो फिर आप ही क्लास ले लीजिए ! या छुट्टी दे दीजिए। स्कूल सेक्रेटरी डूब रहा है और आपको क्लास की पड़ी है···हाँ···अच्छा, देखिए देर न हो, बहुत जरूरी है।

(फोन रखते हैं। अरविन्द का प्रवेश, हाथ में चार चिट्ठियाँ)

अरविन्द : इनमें से कोई है क्या ?

मणि : हाँ, हाँ। यही तो हैं। (बिना देखे ही सारे ले लेते हैं)

अरविन्द : कनेक्शन कट गया क्या ?

मणि : किसका कनेक्शन ?

अरविन्द : फोन का ?

मणि : कटता क्यों ?

अरविन्द : आपने कहा न···फोन पकड़े हूँ। मैंने सोचा शायद चिट्ठी···

मणि : ओ ! हाँ, हाँ, जाने दो, बाद में हो जाएगा। तुम शुरू हो जाओ लिस्ट को लेकर

अरविन्द : हाँ ! मैं अभी शुरू कर देता हूँ।

(पाँचू का प्रवेश)

पाँचू : कप्तान साहब आए हैं।

मणि : कप्तान साहब ?

पाँचू : जी, जटाईतल्ला एथेलिटिक क्लब के कप्तान साहब···

मणि : अरे, मोहन ! बुला ला। (पाँचू का प्रस्थान। मणिभूषण चुरुट निकालते हैं) ग्यारह बज गये, तेरी माँ अब तक··· ये माचिस कहाँ चली गई···

(आफिस की तरफ मुड़ते हैं।)

लिलि : मैं देखती हूँ।

मणि : नहीं-नहीं, तू बैठ···

(आफिस जाते हैं। लिलि किताब हाथ में जमकर बैठती है।)

अरविन्द : लिलि।

लिलि : क्या ?

अरविन्द : ये···कोई आ रहा है।

लिलि : तो क्या हुआ ? मोहन बाबू ही हैं।

अरविन्द : हाँ, मोहन बाबू, फिर भी···

लिलि : मोहन बाबू के साथ बाबूजी की कौन-सी प्राइवेट बात हो सकती है ?

अरविन्द : नहीं, ऐसी बात तो नहीं, मगर···

(मोहन को कमरे में छोड़कर पाँचू चला जाता है। मोहन लिलि को देखकर अत्यन्त उत्साहित होता है।)

मोहन : नमस्कार।

(मोहन के 'श' का उच्चारण अंग्रेज़ी के 'एस' की तरह है।)

अरविन्द : (पीछे से गंभीर आवाज में) नमस्कार।

मोहन : (चौंककर) ऐं! नमस्कार, नमस्कार! ठीक हैं आप?

अरविन्द : (फिर पीछे से) हाँ, बिल्कुल ठीक हूँ।

(मोहन फिर पलटकर लिलि से कुछ बोलना चाहता चाहता है, इसी समय मणिभूषण का प्रवेश)

मणि : क्यों मोहन, क्या खबर है?

मोहन : नमस्कार सर! खबर अच्छी ही है मगर···

मणि : मगर क्या?

मोहन : इस भास्वती पत्रिका को लेकर वो ज रा वो कर रहे हैं।

अरविन्द : करने दो। इसका अब जवाब निकल रहा है, जल्दी ही।

(मणिभूषण अब अरविन्द की तरफ देखते हैं)

मणि : हाँ, हाँ, वो···वह मैंने देखा है। और क्या खबर है?

मोहन : आज सुबह जगदानन्द रोड और आठपुकुर तो थोड़ा-थोड़ा घूम आए हैं। पर आदमी बड़े कम हैं सर।

मणि : अरे आदमी कम कैसे हुए भई? तुम्हारे क्लब में तो डेढ़ सौ मेम्बर हैं?

मोहन : सब मिलते कहाँ हैं सर? सब लोग देश का काम तो नहीं समझते न, कहते हैं दो समोसों में इससे ज्यादा नहीं चला जाता। अब आप ही बताइये सर, देश की इस हालत में इन्हें समोसों की पड़ी है।

अरविन्द : जरूरत नहीं है हमें ऐसे लोगों की।

मणि : (झटपट) ना ना, अरे समोसों की बात ये नहीं सोचते। यह

तुम्हारी भूल है, मोहन।

मोहन : भूल! बुलाकर पूछ लीजिए उनसे। यही तो उस दिन सर्वेश्वर···

मणि : तुम समोसों के साथ केक का बन्दोबस्त कर डालो। ये लड़के तो देश के लिए जान कुर्बान कर सकते हैं···मगर मेरी भी तो कुछ जिम्मेदारी है।

(अरविन्द कुछ कहने जाता है)

नहीं, नहीं अरविन्द। तुम बल्कि इसे खतम कर लो, बड़ा जरूरी है ये।

(अरविन्द बैठ जाता है)

मोहन : क्या है सर ये? स्लिप? ये तो कब के तैयार पड़े हैं इलेक्शन आफिस में।

मणि : नहीं, ये दूसरे स्लिप हैं मोहन। एक और काम के लिए हैं। तुमने···गगनपुर में किसी को भेजने के बारे में कुछ किया?

मोहन : अब किसे भेजें सर? मुझे खुद ही जाना होगा। क्षितिज और खाँदा को लेकर कल उधर हो आऊँगा।

मणि : और इधर?

मोहन : यहाँ वटू हैं, सन्तुदा हैं।

मणि : उनसे चल जाएगा?

मोहन : चलाना ही पड़ेगा, दो दिन की बात है। गगनपुर ठहरा चिदानन्द का ठीया। वहां के लोग इसकी पदवी ब्रह्मचारी पर ही फिसल गये हैं। आपका नाम—बुरा न मानिए सर···वोट के लिए कुछ हलका सा हो गया है।

(अरविन्द फिर कुछ बोलने चला, पर मणिभूषण के इशारे से चुप हो गया।)

लिलि : नाम तो बदला जा सकता है बाबूजी, एफिडेविट से।

मणि : तू चुप रह!

मोहन : चिदानन्द नाम का फायदा उठा रहा है आजकल? भगवा पहनता है। गगनपुर के चंडी मंदिर में पूजा करके उसने वहाँ

सबको वश में कर लिया।

मणि : क्या खयाल है ? गगनपुर में अपना कुछ होगा ?

मोहन : जरूर होगा सर ! दो दिन में शक्ल बदल दूँगा। इसीलिए तो खुद जा रहा हूँ। मगर सर ! पूजा पर खर्चा जरा ज्यादा करना पड़ेगा।

मणि : पूजा ?

मोहन : चंडी मंदिर में पूजा चढ़ाए बिना गगनपुर में कुछ भी नहीं किया जा सकता है सर ! ऊपर से चिदानन्द फैला रहा है कि आप नास्तिक हैं !

मणि : नास्तिक ! मैं नास्तिक ? यह उसे कहाँ से मिल गया ?

मोहन : वही भास्वती पत्रिका सर ! भाद्र अंक। अमानिशा देवी की कविता !

मणि : क्या देवी ?

लिलि : (उठकर) क्या हो गया अमानिशी देवी की कविता को ?

मोहन : (उत्साह से) वो जो दो लाइनें हैं ना ? वो वो

हे ईश्वर, यदि मैं जानती,
तुम हो,
तो कहती चिल्लाकर—

लिलि : कहती पुकारकर।

मोहन : हाँ, हाँ पुकारकर ! ये आधुनिक कविताएँ—सर-पैर कुछ याद नहीं रहता है।

लिलि : स्वाभाविक है।

मोहन : ऐं ?

मणि : यदि मैं जानता—ओ आई सी ! अर्थात दरअसल जानती है—नहीं है !

मोहन : एक्जैक्टली सर ! उन्होंने यही मतलब निकाला है।

मणि : आः, ये सब क्या-क्या छापते रहते हैं ! देखे-सुने बिना ही···

अरविन्द : मुझे भी कुछ ऐसा ही लगा था कि इसका छापना कुछ ठीक नहीं···

(लिलि सहसा कमरे से निकल जाती है)

अरे, क्या हुआ ?

मणि : क्या पता ? अमावस्या देवी की कविता की भक्त है शायद।

मोहन : अमानिशा देवी सर !

मणि : एक ही बात है। (अनुतप्त अरविन्द ठोड़ी खुजाने लगते हैं) ठीक कहते हो तुम मोहन। लीफलेट में इस पाइंट का जरा तगड़ा जवाब देना पड़ेगा।

अरविन्द : (बैठकर) हाँ, उस लिखे को जरा बदलना जरूरी है।

मणि : नहीं-नहीं, तुम उस लिस्ट को बना डालो, वो पहले चाहिए···

मोहन : तो मैं चलता हूँ सर ! गगनपुर का बन्दोबस्त कर डालूं जरा।

मणि : अच्छा तुम चलो।

मोहन : अ···फंड में अब कुछ खास बाकी नहीं है। अगर केक देना हो तो···

मणि : कल तक तो चल जाएगा ?

मोहन : हाँ, हाँ सर ? कल क्यों परसों हो तो भी चलेगा। (अरविन्द के साथ नजरें मिलती हैं, पर कोई भ्रातृभाव प्रगट नहीं होता। मोहन जाता है।)

अरविन्द : आपका खयाल है इन छोकरों से कुछ काम बनेगा ?

मणि : मोहन बड़े काम का लड़का है। उसके क्लब के लड़के भी बड़े मेहनती हैं।

अरविन्द : हाँ, मेहनत करते हैं मगर समोसे के लिए। पीछे कोई आई-डियोलोजिकल···

मणि : नहीं, नही, आईडियोलोजी—आईडियोलोजी की ही बात लो—तो समझो कि···स्वाधीन भारत में खाद्य-समस्या ही सबसे बड़ी समस्या है। खाद्य को तो याद रखना ही पड़ता है।

अरविन्द : मगर ये तो अपनी-अपनी खाद्य चिन्ता···

मणि : हाँ, हाँ, ये बड़ा इन्टरेस्टिंग प्वाईन्ट है। एक दिन बैठकर बात करेंगे इसपर। मैं···जरा तब तक इससे···निपट लूं।(आफिस प्रस्थान) ।

(अरविन्द काम पर जुट जाता है, फिर उठता है, कुछ सोचकर लिलि की तलाश में अंदर की ओर बढ़ता है। पर विवेक बुद्धि की ताड़ना से फिर लौटकर आता है और स्लिप लिखने लगता है। लिलि की माँ सुप्रीति का प्रवेश। अरविन्द उठ खड़ा होता है।)

सुप्रीति : बैठो-बैठो। क्या कर रहे हो ये ?

अरविन्द : इस लिस्ट से स्लिपों पर नाम, बाप का नाम, पता···

सुप्रीति : ये तो इलेक्शन आफिस में किया है उन्होंने ! तुम फिर से···

अरविन्द : ना-ना ! ये दूसरे काम के लिए हैं। मौसा जी ने कहा है।

सुप्रीति : कहा है ? पर इन्हें तुम्हें देने का क्या मतलब हुआ ? और कोई काम नहीं मिला इन्हें ?

अरविन्द : जी, ये बड़ा रेस्पान्सिबल काम है। इसी की एक्यूरेसी पर वोट है।

(सुप्रीति अरविन्द के मुख की ओर एक मुहूर्त्त देखती है।)

सुप्रीति : ऐसा कहा उन्होंने ?

अरविन्द : हाँ ! इसके अलावा ये चाहिए भी फौरन।

सुप्रीति : ओ ! ···अच्छा, लिलि कहाँ गई ?

अरविन्द : यहीं तो थी। अभी थोड़ी देर पहले अन्दर गई है।

सुप्रीति : मैं लिलि को भेज देती हूँ। यह काम अकेले नहीं किया जा सकता। अगर कोई साथ पढ़ता रहे···

अरविन्द : नहीं, नहीं, आप फिज़ूल···

सुप्रीति : फिजूल क्यों ?बाप का इलेक्शन है मगर लड़की मौज से फिर रही है। (अंदर के दरवाजे तक जाती है) लिलि ! तुम आफिस नहीं गये आज ?

अरविन्द : नहीं, आज जाना नहीं हो सका। इधर बहुत काम···

सुप्रीति : तो फिर खाना यहीं खाना।

(मणिभूषण का प्रवेश)

मणि : चलो आ गई तुम आखिर। घर में इलेक्शन है और तुम मौज से घूम रही हो।

सुप्रीति : मौज से घूम रही हूँ ? मैं कहती हूँ यह साहित्य-सभा क्या इलेक्शन का काम नहीं है ?

मणि : साहित्य-सभा ? साहित्य-सभा में कितने वोट होंगे ?

सुप्रीति : कितने वोट होंगे ? अगर स्मरजीत सान्याल आये तो जितनी महिला-वोटर सभा में उपस्थित होंगी, वो और जितनी लड़कियाँ उनको सुनेंगी वो और जितनी लड़कियों को वो फिर जाकर बताएंगी।

मणि : तुम भी ऐसा कहती हो ?

सुप्रीति : मैं भी···मतलब ?

मणि : लिलि भी यही कह रही थी।

(लिलि का प्रवेश)

सुप्रीति : लिलि जानती है, तभी ऐसा कह रही थी।

लिलि : क्या जानती है लिलि ?

मणि : तेरी माँ कह रही थी कि शरत् सान्याल को देखकर···

लिलि : स्मरजीत सान्याल।

मणि : चलो, वही सही।

सुप्रीति : वही सही, मतलब ?

मणि : नहीं, नहीं, स्मरजीत, स्मरजीत, भूल हो गई बाबा !

सुप्रीति : और अगर भास्वती के इस अंक में कुछ छाप सकी उनका, तो फिर कहना ही क्या।

मणि : तुम्हारी इस भास्वती पत्रिका को लेकर चिदानन्द ने बड़ा शोर मचा रखा है।

सुप्रीति : अगर ऐसा करता है तो अपनी ही बेवकूफी जाहिर करता है। हमारा तो भला ही है इसमें।

मणि : हाँ, मगर वह नास्तिक कहता है।

सुप्रीति : नास्तिक ?

मणि : हाँ ! किसी एक अमावस्या देवी की कविता छापी है तुमने···?

सुप्रीति : अमावस्या देवी ?

अरविन्द : (झट से) अमानिशा देवी ?

मणि : वो एक ही बात···नहीं-नहीं, हाँ-हाँ ठीक—अमानिशा ! अमानिशा देवी।

(सुप्रीति लिलि की तरफ देखती है, लिलि मुँह फिरा लेती है।)

सुप्रीति : (मणिभूषण को) कौन सी कविता ?

मणि : कौन सा अंक था अरविन्द ?

अरविन्द : भाद्र अंक में। "हनन किया है मुझे।"

मणि : हाँ-हाँ, हनन। क्या दो लाइनें थीं—भगवान तुम अगर हो तो···

अरविन्द : हे ईश्वर, यदि मैं जानती, तुम हो।

(सुप्रीति फिर लिलि की तरफ देखती है, पर लिलि फूलदान के फूलों में उलझी है।

सुप्रीति : तो क्या हुआ ?

अरविन्द : मुझे तो कुछ भी नहीं लगता। अच्छी ही है कविता।

मणि : वाह ! "यदि जानती"। क्या मतलब हुआ ?

सुप्रीति : क्या मतलब ?

मणि : अरे सोचकर देखो जरा। 'यदि जानती' कहने से क्या फिर भगवान बाकी रह जाता है ? प्रूफ देखते वक्त अगर जरा दिमाग लगाकर 'यदि' काट देते, तो भगवान रह जाता। झमेला ही नहीं होता।

सुप्रीति : बताओ, कविता के नाम का क्या मतलब है ?

मणि : ऐं ?

सुप्रीति : "हनन किया है मुझे।" किसने हनन किया ?

मणि : (सोचकर) भगवान ?

सुप्रीति : और नहीं तो ? और आखिर की दो लाईनें ? क्या मतलब है उनका ?

मणि : हत्तेरी, मैंने आखिरी दो लाईनें पढ़ी हैं क्या जो मुझे मतलब पता होगा ?

सुप्रीति : तो बिना पढ़े ही बात क्यों करते हो बेकार की ?

मणि : मैं करता हूँ या चिदानन्द करता है ?

सुप्रीति : चिदानन्द को जवाब नहीं दिया जा सकता ?

मणि : जरूर दिया सकता जा है। सकता है क्या माने दिया जाएगा। तुम जरा मुझे भाद्र अंक दो जी। सनत आते ही उससे···हूँ-हूँ। मैं जरा आखिरी दो लाईनें तो देख लूँ।

सुप्रीति : कौन आते ही ?

मणि : वो—सनत। हाई स्कूल का टीचर। इलेक्शन में काम करना चाहता है मैंने कहा आ जाए।

सुप्रीति : अरविन्द ! तुमने पढ़ा है न—'हनन किया है मुझे ?'

अरविन्द : हाँ-हाँ। बड़ी शक्तिशाली कविता है।

सुप्रीति : तुम एक जवाब का ड्राफ्ट बना डालो तो अभी।

मणि : नहीं-नहीं, अरविन्द दूसरा काम कर रहा है—बड़ा जरूरी। इसके अलावा उसे आफिस भी जाना है।

अरविन्द : नहीं, आज आफिस नहीं जाऊँगा।

मणि : तो फिर जाओ खाना-वाना खा आओ।

सुप्रीति : जाएगा कहाँ भई। खाना तो यहाँ खा रहा है।

मणि : ओहो, चलो अच्छा है, बहुत अच्छा। तो अब तुम नहा लो, दिन चढ़ आया है।

अरविन्द : मैंने अभी जरा तेलेनीपाड़ा रोड पकड़ा है···

मणि : तेलेनीपाड़ा बाद में होगा। इलेक्शन के लिए नहाना खाना तो नहीं छोड़ा जा सकता। जाओ नहा लो।

सुप्रीति : हाँ, जाओ अरविन्द। दिन काफी चढ़ गया है। लिलि जा तो—इन्हें तौलिया-वौलिया दे।

लिलि : (बिना घूमे) बाथरूम में सब कुछ है।

अरविन्द : हाँ-हाँ। आप फिक्र न करें।

(अरविन्द का प्रस्थान)

सुप्रीति : तौलिया है ये सबको पता है। जरा जाकर देने से क्या हो जाता तुझे ? अतिथि···

मणि : तुम बड़ी मुसीबत में फँसा देती हो मुझे कभी-कभी।

सुप्रीति : क्यों ?

मणि : क्यों ? वह कागज कहाँ गये रे लिलि तुझे जो दिया था ? (लिलि कागज निकालकर देती है) हां। ये देखो। पढ़कर देखो और बताओ अरविन्द से अब क्या लिखाऊँ मैं ! (लिलि फिर हँस उठती है) तुझे हँसने की कोई जरूरत नहीं है। खुद तो एक लाईन नहीं लिख सकती···

सुप्रीति : (मुँह उठाकर) कौन नहीं लिख सकती ?

लिलि : माँ !

मणि : तुम्हारी लड़की। कहती है इकनामिक्स में आनर्स था।

सुप्रीति : जो इकनामिक्स में···

लिलि : तुम पढ़ो तो !

(फिर पढ़ती है, देखती है)

सुप्रीति : अरविन्द ने लिखा है यह ?

मणि : अब भी कहोगी उससे लीफलेट लिखवाने को !

सुप्रीति : हर आदमी को हर चीज़ आना जरूरी है क्या ?

मणि : मैंने कब कहा जरूरी है। इसीलिए तो उसे स्लिप लिखने बैठा दिया है।

सुप्रीति : इसका मतलब यह थोड़े ही है कि उसे स्लिप लिखने को दे दो।

मणि : देखो ! अरविन्द के पिता और अरविन्द का कार्मसियल एसोसियेशन, मेरे लिए यही काफी है। अरविन्द के काम की

मुझे कोई जरूरत नहीं।

सुप्रीति : पर अरविन्द बड़ा अच्छा लड़का है।

मणि : लो ! मैंने कब कहा बुरा है। मेरी बुआ भी बड़ी अच्छी हैं। बहुत ही अच्छी। मगर इसका मतलब ये तो नहीं कि बुआजी मेरा बिजनेस चला लेंगी।

सुप्रीति : किससे लिखाया जाए फिर ? लिलि···

लिलि : मुझसे नहीं होगा।

मणि : मैंने इसका बन्दोबस्त कर लिया है, तुम चिंता न करो। सनत् से लिखाऊँगा मैं। हाई स्कूल का साहित्य का टीचर है।

सुप्रीति : साहित्य आनर्स होने से ही अच्छी भाषा लिख लेगा, यह जरूरी नहीं है।

मणि : जितना कर सकेगा उतने से ही मेरा काम चल जाएगा। तुम्हारे शरत् शान्—मतलब उन सान्याल साहब के क्या हाल हैं ?

सुप्रीति : चिट्ठी तो आई नहीं अब तक।

मणि : अरे चिट्ठी-पत्री से कभी ये सब होता है क्या ?

सुप्रीति : चिट्ठी में तो मैंने सिर्फ तारीख ही लिखी थी आने की। कलकत्ते में मिसेज गुप्ता खुद जाकर उन्हें राजी कराएँगी—हमसे वादा कर गयी थीं।

मणि : मिसेज गुप्ता कौन हैं ?

सुप्रीति : स्मरजीत सान्याल के बहनोई की सगी चचेरी बहन की खास मित्र हैं। वे न होतीं तो मैं कहाँ से आ जाती ? हमें पहचानता ही कौन है ? काफी कह सुनकर···

लिलि : सिर्फ कह सुन कर ? मिसेज गुप्ता की एक बकवास कहानी भास्वती में छापकर···

सुप्रति : तू चुप कर···ऐसी क्या बकवास कहानी है जी ?

लिलि : बकवास नहीं है ? तुम खुद ही तो कह रही थीं—बकवास है।

सुप्रीति : स्मरजीत सान्याल का कुछ लिखा मिल जाए तो सब पूरा हो जाएगा।

मणि : बस साफ-साफ यह बताओ कि वह आएँगे या नहीं आएँगे।

सुप्रीति : अब अगर उन्हें चिट्ठी न मिली हो तो···

मणि : सारे शहर में ढिंढोरा तो पिटवा दिये हैं उनके आने का। अब ?

सुप्रीति : मैं ज़रा स्टेशन जाकर शाम की ट्रेन देख लूंगी आज। अगर न आए तो कल सुबह गाड़ी लेकर खुद कलकत्ता चली जाऊँगी। मिसेज गुप्ता को साथ लेकर उन्हें उनके घर से उठा लाऊँगी।

मणि : अगर यही इन्तजाम शुरू से करतीं जरा अक्ल से तो···

सुप्रीति : मिसेज गुप्ता ने कहा था इसकी जरूरत नहीं होगी। इसके अलावा जान न पहचान·—धड़ाम से किसी के घर···

मणि : तुम नहीं पहचानतीं तो जो पहचनता है उसे भेजतीं।

सुप्रीति : कौन पहचानता है? इस शहर में कोई नहीं पहचानता। मिसेज गुप्त की कहानी क्या मैंने किसी शौक के मारे छपवाई थी ?

मणि : तो अब स्टेशन जा रही हो पहचानोगी कैसे ?

सुप्रीति : वाह ! इतने बड़े साहित्यिक हैं, देखते ही जान जाऊँगी।

लिलि : कितने साहित्यिक उतरते हैं तुम्हारे इस बाधवंदी स्टेशन पर ?

(पाँचू का प्रवेश)

पाँचू : स्कूल के मास्टरसाब आए हैं।

मणि : चलो सनत् आ गया। उसे बैठा, अभी आता हूं।

सप्रीति : क्यों, यहीं बुलबालो ना। देखूं तो सही एक बार। लिलि जा तो जरा भाद्र अंक ले आ एक।

(लिलि का प्रस्थान)

मणि : ठीक है, यहीं बुला ला।

(पाँचू का प्रस्थान)

तुम भी जरा दो मिनट के लिए अन्दर चली जाओ। उसके प्रोवेक्सन की बात कर लें, थोड़ी सी।

(सुप्रीति अन्दर गई। पाँचू सनत को छोड़ गया। निरीह चेहरा, कृशांग। उम्र अधिक नहीं।)

सनत् : नमस्कार सर।

मणि : नमस्कार, आ गए तुम। बैठो-बैठो। 'तुम' कह रहा हूँ भाई, बुरा न मानना! क्या उमर होगी तुम्हारी?

सनत् : आप तुम ही कहिए मुझे।

मणि : अच्छा-अच्छा! कितने दिन हो गए तुम्हें स्कूल में।

सनत् : नौ महीने।

मणि : अच्छा-अच्छा। कैसे चल रहा है? लड़के क्लास में गोल-माल तो नहीं करते?

सनत् : जी नहीं। छात्रों के साथ मेरे रिलेशन अच्छे ही हैं।

मणि : बहुत अच्छा। मगर ज्यादा मेलजोल न कर बैठना छात्रों के साथ। यह एक फैशन चला हुआ है आजकल, इससे छात्रों के मन से श्रद्धा, भय, सब जाता रहता है।

सनत् : नहीं-नहीं, उस तरफ से मैं बड़ा सावधान हूँ। वो मेरा काफी सम्मान करते हैं।

मणि : हाँ, और प्रोबेशन चल रहा है न आजकल। टीचिंग लाईन में प्रोबेशन बड़ा इम्पार्टेंट होता है, सिर्फ खानापूरी नहीं है। जानते हो ना?

सनत् : (डरते-डरते) हाँ सर! बिलकुल जानता हूँ।

मणि : इस गाँठ को पार करने के बाद काफी तसल्ली हो जाती है। खैर तुम्हें कोई खास परेशान होने की जरूरत नहीं है, मेरे ही हाथ में है सब कुछ। मैं कर दूंगा।

सनत् : आपकी कृपा है सर!

मणि : फिलहाल इलेक्शन में फँसा हूँ। स्कूल की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दे पाता। जीतूँगा जरूर, मगर टफ फाईट होगी। तुम पांच जनों की सहायता के वगैर तो मुश्किल ही है।

सनत् : जरूर। आप कहिए···हमारे लायक···

मणि : नहीं-नहीं, बेकार के काम तुम्हें नहीं दूंगा। उसके लिए तो लड़के हैं। जो ज़रा ब्रेन का काम हो, पढ़ा-लिखी का काम मामला हो। जैसे कि···

(पत्रिका हाथ में लिए लिलि का प्रवेश)

लिलि : माँ कहाँ हैं ?

मणि : अंदर गई है। बुला ला तो।

(लिलि का प्रस्थान)

मणि : समझ लो कि औपोजिट पार्टी एक स्केण्डल फैला रही है। इसका एक जवाब लिखना है। साधारण आदमी तो हमेशा सच-झूठ नहीं समझ पाता। तुम क्या कहते हो ?

सनत् : हाँ। वो तो है ही।

मणि : ये देखो, अभी एक प्राबलम है। मेरी पत्नी एक पत्रिका निकालती हैं। उसमें एक कविता छपी—और इसलिए मैं बन गया नास्तिक।

सनत् : वो कैसे ?

मणि : उन्होंने कविता का उल्टा अर्थ कर दिया—भगवान नहीं है। और इधर देखो—कविता का नाम ही है "हनन किया है मुझे"। किसने हनन किया ? औबियसली भगवान ने। भगवान ही अगर ना हो तो हनन किसने किया ?

सनत् : बिल्कुल ठीक।

मणि : तुम एक इन्टेलिजेन्ट आदमी हो, इसलिए झट से समझ गए। मगर सारे वोटर्स तो बी० ए० आनर्स नहीं हैं। उन्हें मिस लीड कर दिया। अब इसका एक···

(पाँचू का प्रवेश)

पांचू : कप्तान साब आए हैं। कहते हैं बड़ा जरूरी काम है।

मणि : अब क्या हो गया ? जा बुला ला। (पाँचू का प्रस्थान) अब एक चुभता-सा जवाब लिख डालो। सिर्फ इस प्वाईन्ट पर ही नहीं, मेरी पत्नी की पत्रिका को लेकर उन्होंने काफी हल्ला मचा रखा है। जैसे साहित्य की चर्चा करना ही…

(उत्तेजित मोहन का प्रवेश)

मोहन : ऐसे नहीं चलेगा सर !

मणि : क्यों-क्यों ? क्या हुआ !

मोहन : ये देखिए सर।

(एक सचित्र लीफलेट देता है)

मणि · अरे यह क्या ? यह तो मैं हूँ। ओ…हाँ-हाँ, वो कालेज में …यह तस्वीर उन्हें कैसे मिली ?

मोहन : तीस साल पुरानी कालेज मेग्जीन से ढूंढ़कर निकाला है। अब बताइए सर मैं इसका क्या करूँ ?

मणि : तो…मैं कालेज फंक्शन में प्रेसीडेन्ट को माला पहना रहा हूँ तो हो क्या गया ?

मोहन : प्रेसीडेन्ट अंग्रेज जो है। क्या लिखा है, पढ़िए न।

मणि : (पढ़कर) ब्रिटिश साम्राज्य का पिट्ठू ! वाह-वाह—सो कैसे हो गया ?

मोहन : साहब प्रेसीडेन्ट जो ठहरा। मजिस्ट्रेट साहब।

मणि : उस जमाने में अंग्रेज ही मजिस्ट्रेट होते थे, प्रेसीडेन्ड भी होते थे, तो मैं क्या कर सकता हूँ ? छात्र जीवन में चिदानन्द ने ऐसा नहीं किया, यह कौन कह सकता है ?

मोहन : एक्जैक्टली सर ! मैं भी आपको यही कहना चाहता हूँ।

मणि : क्या कहना चाहते हो ?

मोहन : उन्होंने सर आपकी जन्मपत्री (कुंडली) तक ढूंढ़ डाली। और हमने क्या किया ? चिदानन्द की पुरानी ज़िंदगी के बारे में क्या जानते हैं हम ?

मणि : हाँ, मगर इलेक्शन हो रहा है आज, और तीस साल पहले···

मोहन : सर, बुरा न मानिये, आप बुजुर्ग हैं। मगर सर, मैं भी चौदह साल की उम्र से इलेक्शन में हूँ। जब मैं निक्कर पहनता था और किरमिज की गेंद मे खेलता था तब से। ऐसे काम नहीं चलता···।

मणि : कैसे नहीं चलता? (लिलि सुप्रीति का प्रवेश) ये लो। फिर एक गड़बड़ हो गई। तुम लोग सनत् के साथ मेरे आफिस रूम में बैठो। उसे लाईन समझा दो।

सुप्रीति : चलो।

(सुप्रीति, लिलि और सनत् आफिस जाते हैं)

मणि : हाँ, अब कहो।

मोहन : एँ। हाँ, मैं कह रहा था—सिर्फ वोट फौर, वोट फौर चिल्लाने से इलेक्शन नहीं होता। स्कूप चाहिए, स्कूप।

मणि : स्कूप!

मोहन : जी! आपोनेन्ट की हंडिया से खबर निकालनी पड़ती है। चिदानन्द ने तीस साल पहले आपकी तरह किसी अंग्रेज की बटरिंग नहीं की, पैर नहीं चाटे, क्या यह दावे से कहा जा सकता है?

मणि : मतलब?

मोहन : नहीं-नहीं। मतलब···बटरिंग है इलेक्शन टर्म। अगर कुछ मिल गया तो हम भी बटरिंग ही लिखेंगे।

मणि : उसकी शक्ल देखी है? उसे कौन प्रेसीडेंट के गले माला पहनाने भेजेगा?

मोहन : मैंने तो एक बात की बात की है। ढूंढने से शायद कोई और चिट्ठा निकल आए। चरित्रदोष निकल आए तो बेस्ट है। मोटी सी बात है—स्कूप चाहिए। स्कूप के बगैर इलेक्शन नहीं हो सकता है।

मणि : स्कूप कहाँ से मिलेंगे भाई?

मोहन : आदमी लगाने पड़ेंगे, सर! खर्चा करना होगा।

मणि : आदमी हैं तुम्हारी पहचान में?

मोहन : बिल्कुल हैं। अगर कलकत्ते में हो ...

मणि : क्या हो?

मोहन : कालेज लाईफ ही बेस्ट है सर! खून गरम होता है, नयी जवानी...बुरा न मानिए सर...

मणि : ना ना, तुम आगे बोलो।

मोहन : कलकत्ते में किस कालेज में पढ़ता था, अगर आप बता सकें।

मणि : कलकत्ते में नहीं पढ़ा है ये।

मोहन : (बुझ सा गया) मर गये। फिर कहाँ पढ़ा है?

मणि : विष्णु नगर कालेज।

मोहन : (उछलकर) विष्णु नगर! लक सर लक! इसे कहते हैं इलेक्शन लक। विष्णु नगर में मेरे मामा रहते हैं—सब जाने पहचाने हैं मेरे।

मणि : कुछ मिल जाएगा वहाँ?

मोहन : मैं आज ही दोपहर जाता हूँ विष्णु नगर सर! कल तक अगर कोई खबर न लाया तो मेरे नाम से कुत्ता पालना आप।

मणि : अगर कुछ हो ही नहीं तो फिर कहाँ से...

मोहन : कैसे नहीं होगा सर! किस आदमी के नहीं होता? उस पर इसने जब भगवा पहना है तो बिना कुछ हुए रह ही नहीं सकता!

मणि : फिर यूँ करो, तुम अभी चल पड़ो।

मोहन : कुछ पैसों की जरूरत है सर! फंड के पैसे तो सन्तु दा को दे जाऊँगा...

मणि : हूँ...ये लो।

(मोहन नोट गिनता है—पर्दा गिरता है।)

द्वितीय दृश्य

(पर्दा उठने से पहले, पहले की तरह, 'वोट फॉर' की ध्वनि सुनाई देती है। तुलनात्मक रूप से इस बार चिदानन्द के पक्ष में ध्वनि ज्यादा जोरदार है।

पर्दा उठने पर अरविन्द उसी स्थान पर दिखाई देता है। एकाग्रमन लिस्ट से नाम लिखे जा रहा हैं। 'उन्तीस नम्बर तेलेनीपाड़ा रोड, महावीर महतो···बाप शिवशरण महतो, उम्र छब्बीस'। थोड़ी देर में सुप्रीति का प्रवेश। दरवाजे के पास खड़ी हो किसी अदृश्य भृत्य को चिल्लाकर उपदेश दे रही हैं।)

सुप्रीति : ऐं! हां-हां, नीले पर्दे। और कितनी बार कहना पड़ेगा? और कमरा···समझा···कमरा बिल्कुल झाड़पोंछ कर साफ कर देना। ऐं! सुबह साफ किया तो क्या···फिर साफ कर दे। जो कहती हूं वो समझा करो···

(अन्दर आती है)

अरे,! तुम तब से लगातार लिखे ही जा रहे हो?

अरविन्द : जी, बहुत सारे नाम हैं।

सुप्रीति : लिलि को तुम्हारे साथ बैठा गई थी, वह कहां गई?

अरविन्द : थोड़ी देर पढ़ दिया था उसने।

सुप्रीति : थोड़ी देर? अजीब लड़की है। (दरवाजे पर जाकर) लिलि!

अरविन्द : जी मैं अकेला ही कर लूंगा।

सुप्रीति : तुम रहने दो अभी इस काम को। पांच बजने वाले हैं···जरा घूम-फिर आओ तब तक।

अरविन्द : ये जरा जरूरी काम था,

सुप्रीति : होने दो जरूरी। इलेक्शन का मतलब ये तो नहीं कि स्वास्थ्य का ख्याल भी न रखा जाए। लिलि को भी साथ ले जाओ चाहो तो। आलसी हुई जा रही है लड़की।

अरविन्द : आप कहती हैं तो···

(लिलि का प्रवेश, हाथ में पेंटिंग ब्रश)

लिलि : मुझे बुला रहीं थीं ?

सुप्रीति : शाम को पांच बजे क्या कर रही है कमरे में बैठे-बैठे। जा जरा घूम फिर आ।

लिलि : कहां ?

सुप्रीति : जहां मर्जी हो—यहीं कहीं आसपास ये पार्क-वार्क में। अरविन्द बेचारा सारे दिन बैठा-बैठा लिखता रहा है···ऐसे तो आँखें खराब हो जाएँगीं।

लिलि : तो ये घूम आएं न। क्या जरूरत है शाम को बैठकर लिखने की ?

अरविन्द : नहीं-नहीं। मैं जरा लिस्ट खतम कर डालूं पहले।

सुप्रीति : तू जरा मदद भी तो कर सकती है। अकेले कब तक लिखा जा सकता है ऐसे ?

लिलि : इन्होंने ही तो कहा कि अकेले कर लेंगे। तभी तो मैं···

सुप्रीति : तभी तो आप जाकर सो गईं। मैं पूछती हूं इलेक्शन उसके बाप का है या तेरे बाप का ?

लिलि : सो गई थी मैं ? वाह-वाह···

सुप्रीति : तो कौन-सा पहाड़ खोद रही थी जरा मैं भी सुनूं ?

लिलि : मैं तो पोस्टर लिख रही थी। सारी दोपहर।

सुप्रीति : पोस्टर ? पोस्टर तो इलेक्शन आफिस में लिखे जा रहे हैं रोज

ढेर के ढेर। तू फिर···

लिलि : ये वो पोस्टर नहीं हैं।

सुप्रीति : तो कौन से पोस्टर हैं ?

लिलि : साहित्य-सभा के पोस्टर।

सुप्रीति : ओ ! लेकिन पोस्टर चिपकाएगा कौन ?

लिलि : उसका प्रबन्ध हमने कर लिया है।
मैं, वीथि, सुरमा, मन्दा, कज्वली, मीना, डोली, छाया, सुनयनी, शिप्रा, नन्दिता, दमयन्ती···

सुप्रीति : बस-बस···समझ गई ! आईडिया तो अच्छा है तेरा। ठीक है। अरविन्द ! तुम लिलि के साथ बैठकर पोस्टर क्यों नहीं लिखते ? कम से कम इससे इन्टरेस्टिंग तो होगा।

अरविन्द : आप कहती हैं तो···

लिलि : (दुविधा में) आपने कभी पोस्टर लिखा है पहले ?

अरविन्द : पोस्टर ? नहीं तो···वैसे—

सुप्रीति : नहीं लिखा है तो क्या हुआ ? सीखने में देर कितनी लगती है ?

(पांचू का प्रवेश)

पांचू : मास्टर साब आए हैं।

सुप्रीति : कौन ? सनत् बाबू ?

पांचू : जी हां।

सुप्रीति : तेरे बाबू जी तो अभी तक लौटे नहीं। अब मैं क्या करूं— समझ में नहीं आता। मुझे भी तो स्टेशन जाना है। पांच दस तो यहीं हो गये।

लिलि : मैं मिल लूं ?

सुप्रीति : हां, ऐसा ही कर···यह भी तो जरूरी है। (पांचू से) जा, बुला ला।

(पांचू का प्रस्थान)

तू बल्कि उन्हें आफिस में ले जा, यहां अरविन्द काम कर

रहा है।

अरविन्द : नहीं-नहीं। मुझे कोई असुविधा नहीं होगी।

सुप्रीति : असुविधा क्यों नहीं होगी? जरूर होगी। एक इतना इम्पॉरटेन्ट काम कर रहे हो;... (पांचू सनत् को छोड़ जाता है) सनत् बाबू! वो जरा बाहर गये हैं। मुझे भी अभी स्टेशन जाना पड़ रहा है। लिलि और आप उस कमरे में बैठकर वो फाइनलाईज कर डालिए। तब तक वो भी आ जाएंगे।

(लिलि सनत् के साथ आफिस रूम में जाती है। अरविन्द विस्फारित नेत्रों से देखता रह जाता है।)

अरविन्द : क्या काम है? शायद मैं हैल्प कर सकूं?

सुप्रीति : नहीं-नहीं, तुम्हारा यह काम ज्यादा जरूरी है। वो... लिलि ही कर लेगी। तुम बल्कि थोड़ा घूम फिर आओ।

अरविन्द : इलेक्शन के बाद घूमने का बहुत टाईम मिलेगा।

सुप्रीति : हां फिर भी इस तरह सारी शाम बैठ कर... ठीक है! तुम मेरे साथ स्टेशन चलो।

अरविन्द : स्टेशन!

सुप्रीति : हां चलो। चंचला आ नहीं सकी...मैं तब से सोच ही रही थी कि अकेले जाना कुछ ठीक नहीं लगेगा।

अरविन्द : मगर...यह लिस्ट?

सुप्रीति : देखा जाएगा। यह ज्यादा जरूरी है।

अरविन्द : (करुण स्वर में) अगर आप कहतीं हैं तो...

सुप्रीति : हां कह तो रही हूं। चलो, अब बिल्कुल समय नहीं है।

(आफिस की ओर झांक कर अरविन्द सुप्रीति के पीछे-पीछे चल देता है। थोड़ी देर बाद लिलि का प्रवेश)

लिलि : मां! अरे कहां गये सब—पांचू!

(पांचू का प्रवेश)

मां क्या बाहर गयी हैं ?

पांचू : जी'''अभी तो गाड़ी में गईं।

लिलि : और अरविन्द बाबू ?

पांचू : वो भी मां जी के साथ गये।

लिलि : मां के साथ ?

पांचू : जी, गाड़ी में।

लिलि : चलो, ठीक है। तू चाय ला, दोनों के लिए।

(पांचू अन्दर जाता है। लिलि आफिस के दरवाजे पर) सनत् बाबू, आप इस कमरे में ही आ जाइए। कोई नहीं है यहां।

(सनत् कागज वगैरह हाथ में लिए आ जाता है। कमरे में किसी के न होने से उसका उद्वेग बढ़ा है, घटा नहीं) बैठिये।

(सनत् को सोफे पर बैठाकर खुद पास बैठ जाती है। सनत् यथासंभव दूरी पर बैठा है, पर लिलि उधर ध्यान नहीं देती, कागज में डूबी है)

पर'''यह बात तो ठीक नहीं है।

सनत् : (सशंकित) कौन सी ?

लिलि : यह लाईन—'इसलिये नास्तिकता तो दूर रही यह कविता ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण ही सूचित करती है।' अमानिशा देवी की कविता का सही अर्थ यह तो नहीं है।

सनत् : नहीं, ऐसा तो नहीं है। पर नास्तिकता के प्रश्न का जवाब तो देना ही होगा। इसीलिए'''

लिलि : इसीलिए कविता का उल्टा अर्थ तो नहीं निकाला जा सकता।

सनत् : जी,

लिलि : तो फिर आपकी इस लाईन का क्या हो ?

सनत् : नहीं, उसे आप काट दीजिये।

लिलि : पर उसे काटकर आप लिखेंगे क्या ?

सनत् : नास्तिकता का प्रश्न फिर भी रह ही जाता है।

लिलि : अच्छा ! अगर सिर्फ ऐसे कहा जाए···नास्तिकता-आस्तिकता का प्रश्न यहां उठता ही नहीं। ये प्रश्न ही बेमतलब है यहां। वैसे भाषा को जरा सजाकर बनाना होगा।

सनत् : ठीक है मगर···

लिलि : मगर क्या ?

सनत् : लगता है आपके पिताजी···माने इलेक्शन के समय शायद वो चाहेंगे, और भी डेफिनिट कुछ···मेरा मतलब है···

लिलि : आप कहना चाहते हैं कि बाबूजी नहीं राजी होंगे ?

सनत् : (जल्दी से) नहीं, यह सिर्फ मेरा अन्दाज है ! आप बल्कि कहकर देखिए न उनसे।

लिलि : पर आप मुझ से तो सहमत हैं ?

सनत् : बिलकुल !

लिलि : तो फिर ! इलेक्शन है, इसलिए कविता का अर्थ बदला जा सकता है ? आप और मैं अगर बाबू जी से जरा जोर डालकर कहें···

सनत् : (घड़बाकर) ऐं ? आप और···मैं ?

लिलि : क्यों ? आप डरते हैं ?

सनत् : नहीं, डरता तो नहीं। पर प्रोबेशन है न···मतलब, इलेक्शन है न, इस वक्त···

लिलि : सनत् बाबू, आपने सारी जिन्दगी साहित्य चर्चा की है··· इलेक्शन की वजह से आप एक कविता का अर्थ पलट देंगे ?

सनत् : नहीं-नहीं, मैं क्यों अर्थ पलटने लगा। पलटा तो चिदानन्द ने है।

लिलि : हां उन्होंने ही किया है। पर इसका मतलब यह तो नहीं कि उनका जवाब देने के लिए एक बार फिर से कविता का उल्टा मतलब निकाला जाए।

सनत् : जी नहीं। ऐसा हम नहीं करेंग। जरा सोचना पड़ेगा···यह मुझे दीजिए। मैं घर ले जाकर देखता हूं, कुछ रद्दोबदल से शायद कुछ बन ही जाए।

लिलि : अब घर किसलिए जाऐंगे ? यहां भी एकान्त है।

सनत् : जी, जी हां···एकान्त तो है।

लिलि : आइये यहीं कर डालें। मैं चाय के लिए कहे देती हूं।

सनत् : नहीं नहीं, चाय किसलिए···

लिलि : मैंने भी तो चाय नहीं पी है अब तक।

सनत् : जी हां, तब तो···आप···मतलब मैं···मेरे लिए—

(सनत् घबरा जाता है। उसे ऐसा लगता है कि अगर किसी ने दोनों को साथ देख लिया तो प्रोबेशन के बारह बजा देगा। और अगर चाय का प्याला हाथ में दिख गया तो फिर क्या कहना···हाथों हाथ बरखास्त)

लिलि : क्यों आप चाय नहीं पीते ?

सनत् : जी हां, पीता हूं-पीता हूं।

(चाय न पीने से भी नौकरी जा सकती है। इसी के बाप के हाथ तो नौकरी है)

लिलि : अच्छा! अगर इस नास्तिकता आस्तिकता का प्रश्न छोड़ दिया जाए तो वैसे आपको यह कविता कैसी लगी ?

सनत् : (सतर्क होकर) अच्छी ही है। काफी अच्छी है।

लिलि : क्या लगता है आपको ? कुछ प्रतिभा है इस अमानिशा देवी में ?

सनत् : मैंने कुछ खास तो पढ़ा नहीं है इनका···किसी और पत्रिका में तो···

लिलि : नहीं। और किसी पत्रिका में तो नहीं छपता। भास्वती में ही जो कुछ छपा है·· यह 'हनन किया है मेरा' और आषाढ़ संख्या में 'दिगंत के चील।'

सनत् : दिगंत के क्या ?

लिलि : चील।

सनत् : मतलब वो परिन्दा···चील

लिलि : हां! पर यह चील तो एक सिम्बल है। एक क्षुधित आत्मा का प्रतीक। पढ़ी है आपने ?

सनत् : ऐं ? जी नहीं, यानी मिली नहीं। है आपके पास ?

लिलि : मुझे तो याद ही है···

हे चील, दिगंत में तुमने पंख विस्तार, किये बार-बार,
तीखी दृष्टि पृथ्वी की ओर,
क्षुधित सन्धान···

(मणिभूषण का प्रवेश। 'मर गये' सनत् उछल कर खड़ा हो जाता है।)

मणि : अरे बैठो-बैठो। (लिलि से) क्यों रे, तेरी मां बाहर गई है क्या ?

लिलि : स्टेशन गई हैं।

मणि : चिट्ठी आई कोई ? तुम्हारे···उस सान्याल की ?

लिलि : नहीं।

मणि : लो। अब आएंगे कि नहीं यह भी नहीं पता। तेरी मां बड़ा कच्चा काम करती है।

(पांचू चाय लेकर आता है)

लिलि : बाबूजी, तुम भी चाय लोगे।

मणि : नहीं, तुम ही पियो। सनत् कुछ आगे बढ़ा काम ?

(पांचू का प्रस्थान)

सनत् : एक ड्राफ्ट बनाया है। पर ये—माने मिस मजूमदार कहती थीं कि···

मणि : देखें जरा क्या किया है तुमने···(कागज लेकर पढ़ने लगते हैं)

लिलि : पूरा नहीं हुआ है अभी। बदलना पड़ेगा···

मणि : ठहरो ! वाह्-वाह्, बढ़िया बना है। बहुत खूब। सनत् तुम तो जीनियस हो।

लिलि : लेकिन एक लाईन···

मणि : लाजवाब बना है। एक शब्द भी नहीं बदलेगा। खासतौर से इस लाईन का····'नास्तिकता तो दूर रही यह कविता ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण ही सूचित करती है। मार्वेलस !

लिलि : यही लाईन तो बदलनी है।

मणि : क्या कहा ?

लिलि : यह कविता का असली अर्थ नहीं है।

मणि : तू कविता क्या समझती है रे !

लिलि : तो तुम सनत् बाबू को पूछ लो न, यह लाईन ठीक बनी है कि नहीं।

(राजा और राजकन्या की लड़ाई में सनत् नीरव प्रजा बन जाता है)

मणि : वाह् ! अगर वह ठीक नहीं समझता तो लिखता ही क्यों ?

लिलि : सनत् बाबू ?

सनत् : माने, यह कह रहीं थी कि···

मणि : ये जो कहती है उसमें तुम्हें माथा-पच्ची की जरूरत नहीं। ये कविता क्या खाक समझेगी ?

(पांचू का प्रवेश)

पांचू : एक बुड्ढे बाबू जो आए हैं।

(कार्ड देता है)

मणि : अरे ! जल्दी बुलाकर ला। जा। खातिर से लाना···नहीं, ठहर। मैं जाता हूं। तू इन्हें ले जा—(चाय का सामान दिखाते हैं) और जरा बढ़िया सी चाय ले आ। तुम जरा उस कमरे में बैठो। (बाहर दौड़े। पांचू चाय की ट्रे लेकर अंदर गया। सनत् आफिस के दरवाजे तक चला गया)

लिलि : सनत् बाबू, अगर यह लाईन नहीं बदली गयी तो···

सनत् : हो जाएगा, हो जाएगा। आप आइए तो सही···

(अटल बाबू के साथ विगलित मणिभूषण का प्रवेश। अटल बाबू गंभीर हैं। उन्होंने लिलि और सनत् का प्रस्थान देखा)

मणि : आइए! आइए अटल बाबू, बैठिये। अच्छा हुआ मैं घर ही था। आजकल सारे दिन बाहर ही बाहर रहना होता है, अभी लौटा हूं। बिना किसी खबर के, इस तरह आप के चरणों की धूल···

अटल : खबर मैंने जानबूझ कर ही नहीं दी थी।

मणि : एं! सो क्यों?

अटल : इलेक्शन कैम्पेन कैसा चल रहा है, वह मैं खुद अपनी आंखों से देखना चाहता था।

मणि : कैम्पेन! कैम्पेन तो बढ़िया चल रहा है। इस शहर में प्रायः सभी घरों में जा चुका हूं। एक सिर्फ गगनपुर को छोड़कर··· और···और···सभी···जगह···

(अटल बाबू जेब से वही तस्वीर वाली लीफलेट निकालते हैं। मणिभूषण की बातें उसे देखकर स्टेशन पर रुकती रेलगाड़ी की तरह रुक जाती है)

अटल : हां। कहिए?

मणि : यह एक बेकार का स्कैन्डल है। अंग्रेजों के जमाने में··· आज से तीस साल पहले···कोई मतलब थोड़े ही है इसका!

अटल : एक मतलब तो निकलता है इसका।

मणि : क्या आप कहना चाहते हैं कि अंग्रेज प्रेसीडेन्ट के गले माला पहनाने से ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद···

अटल : नहीं, मैं ऐसा कुछ भी नहीं कहता।

मणि : तो?

अटल : इसका एकमात्र अर्थ यह निकलता है कि कुछ सौ वोट हाथ से निकल गये।

मणि : कुछ सी ! नहीं नहीं, यह तो कोई समझ सकता है कि···

अटल : मणि बाबू ! आपको तो पहली बार नामिनेशन मिला है न ?

मणि : जी ? जी हाँ।

अटल : और मैं पहले इलेक्शन से आज तक पार्टी के इलेक्शन कैम्पेन आर्गनाईज़ करता आ रहा हूँ।

(थोड़ी देर के लिए मणिभूषण के मुँह से कोई आवाज नहीं निकलती।)

मणि : उन्होंने पुराने कालेज मैगजीन से···

अटल : आपने चिदानन्द के पुराने इतिहास से कितनी बातें निकाली हैं आज तक ? बताइये ?

मणि : मैं कोशिश कर रहा हूँ, पूरी कोशिश···

अटल : कोशिश !

मणि : शायद कल तक ही···

अटल : शायद !

मणि : नहीं नहीं, शायद माने···

अटल : इलेक्शन के अब कितने दिन बाकी हैं मणि बाबू ?

(मणि निरुत्तर) अब भी···कोशिश। शायद कल ? (मणि फिर भी चुप) हाँ ! आपकी पत्नी एक मासिक पत्रिका भी निकालती हैं।

मणि : (प्रतिवाद के साथ) नहीं नहीं, यह झूठ है बिल्कुल।

अटल : पत्रिका नहीं निकालतीं ?

मणि : ऐं ! निकालती तो हैं, पर आप उस कविता में नास्तिकता की बात कर रहे हैं ना ?

अटल : हाँ।

मणि : वो एकदम झूठ है। मैं प्रमाण देता हूँ, यह देखिए, पढ़कर 'नास्तिकता तो दूर, यह कविता ईश्वर के प्रति···'

अटल । क्या है यह

मणि : उस स्कैन्डल का जवाब ! कल सुबह ही लीफलेट निकाल दूंगा।

अटल : कल ? क्यों, अब तक क्यों नहीं निकाला यह ? यह तो उनका तीन दिन का बासी प्रोपागन्डा है ?

मणि : मैं···यानी—सनत् आज ही मिला।

अटल : सनत् कौन ?

मणि : साहित्य में आनर्स। अभी जिसे आपने देखा जाते हुए।

अटल : ओह ! मैं समझता था वह आपका लड़का है।

मणि : जी नहीं। मेरा लड़का नहीं, वह तो हाई स्कूल का टीचर है।

अटल : और वह लड़की भी टीचर है ?

मणि : जी नहीं, लड़की मेरी अपनी है।

अटल : ओह अच्छा ! (रुककर)। मणिबाबू, मेरे विचार हमेशा उदार रहे हैं, प्रगतिशील। लड़की लड़कों के मेलजोल में मुझे कोई बुराई नहीं नजर आती। सिर्फ इस इलेक्शन के समय को छोड़ कर।

मणि : जी नहीं। मेलजोल की कोई बात नहीं है इसमें। दोनों सिर्फ मिलकर जवाब लिख रहे थे···

अटल : यह बात चिदानन्द अपने अगले लीफलेट में बिना इतना समझाए इनके बारे में भी लिख सकता है।

मणि : ऐं ! (एक मुहूर्त रुककर) लिलि !

(लिलि का प्रवेश) जाओ ! अन्दर जाओ।

लिलि : अन्दर !

मणि : हाँ।

लिलि : पर सनत् बाबू···

मणि : बहस मत करो। जो कह रहा हूँ, सुनो। (लिलि आफिस की ओर जाती है) अब कहाँ जा रही हो ?

लिलि : कह आऊँ जरा।

मणि ; नहीं, कुछ कहने की जरूरत नहीं। जो कहना है, मैं कह दूंगा।

(लिलि अन्दर जाती है, पद-ध्वनि में विद्रोह का आभास)

अटल : बहुत अच्छा। काफी स्पिरिटेड लड़की मालूम पड़ती है।

(मणिभूषण चुप बैठे रहते हैं) अच्छा, तो चलूं। जितना हो सके···चलाए चलिए।

मणि : (सचकित) अमूल्य बाबू यहाँ कब आ रहे हैं मीटिंग करने ?

अटल : हाँ, यह बात भी हो जानी चाहिए।

मणि : जी, इस पर भी काफी भरोसा है। कब का तय किया।

अटल : अमूल्य बाबू नहीं आ सकते।

मणि : ऍं !

अटल : उन्हें बहुत जगह इलेक्शन मीटिंग करनी हैं। समय बहुत कम है।

मणि : यह भी इलेक्शन का ही काम है। वाईटल काम।

अटल : आप कहते हैं !

मणि : जरूर ! यहाँ कैम्पेन का आधा तो इसी मीटिंग पर डिपेंट करता है।

अटल : और बाकी आधा ?

मणि : बाकी आधा···माने ?

अटल : मणि बाबू ! एक लास्ट कौज पर नष्ट करने लायक समय अमूल्य बाबू के पास अभी नहीं है।

मणि : लास्ट कौज ?

अटल : चलूं अब मैं।

मणि : तो पार्टी अब मेरे लिए कुछ भी नहीं करेगी ?

अटल : पार्टी ने आपको नौमिनेशन दिया है। क्या आपने यह सोच रखा था कि पार्टी आपको गोद में लेकर एसेम्बली सीट

पर बैठा आएगी ?

मणि : नहीं, ऐसा नहीं पर...

अटल : और पार्टी अगर जानती कि आप ऐसे सोते-सोते कैम्पेन चलाऐंगे, तो नौमिनेशन न देती।

मणि : सोते-सोते ?

अटल : यह सीट तो आपने डुबो दी। नौमिनेशन के लिए आगे पीछे घूमते वक्त अपनी जिम्मेदारी का भी ख्याल रखा होता।

(मणि भूषण चुप एक मुहूर्त बैठे ही रहे)

मणि : तो अमूल्य बाबू नहीं आऐंगे। (तब तक अटलबाबू जा चुके हैं। पाँचू का अन्दर से चाय के साथ प्रवेश) क्या है ?

पाँचू : जी चाय।

मणि : नहीं ! चाय नहीं चाहिए।

पाँचू : जी आपने कहा था चाय लाने...(मणिभूषण का क्रोध अब फट पड़ता है।)

मणि : अच्छा किया था...कहा था। उल्लू गधा कहीं का... (आसन्न ध्वंस के हाथों से चाय के बर्तन बचा कर पाँचू का ऊर्ध्वश्वांस पलायन) मणिभूषण पिंजराबद्ध श्वःपद की तरह पदचारण करने लगते हैं। सनत् सतर्क होकर प्रवेश करते रुक जाता है। ठीक इसी समय मणिभूषण के पदचारण कक्ष पथ पर एक तिपाई आ जाती है एवं एक पदघात से स्थानच्युत होती है। सनत् भी तिपाई की तरह ही छिटक कर हट जाता है। मणिभूषण और दो चक्कर काटते हैं। टेबिल पर माल्यभूषित मैजिस्ट्रेट की सहास्य मूर्ति नजर आती है। कागज उठा लेते हैं। आँख मुंह और दाँत की भंगिमा से लगता है कि कुछ चबा रहे हैं। संभावतः चिदानन्द का सिर। इसके बाद एक भीष्ण हुंकार करते हैं...)

मणि : सनत् ! (सनत् का चोरों की भांति प्रवेश। मणिभूषण उसको उपस्थित नहीं जान पाते।) सनत् !

सनत् : सर ? (मणिभूषण के जरा चौंककर सर उठाने के साथ ही साथ सनत् एक साँस में बिना बिराम, कामा के अपना वक्तव्य बोलता ही चला जाता है), सर मैं क्या कर सकता हूं। वो चली गईं। मिसेज मजूमदार चली गईं और मिस मजूमदार से कह गईं कि जबाब देख लेना उसके बाद उस कमरे में वो चली गईं और ये जो भद्र पुरुष वहां बैठे काम कर रहे थे तब वो बोलीं, मिस मजूमदार बोलीं कि इस कमरे में आ जाओ उसके बाद चाय मैंने कहा चाय रहने दीजिए पर वो बोलीं··· (मणिभूषण शुरू में इन बातों के प्रवाह से हतवाक् हो जाते हैं। इसके बाद इशारे से रोकते हैं। सनत् की आवाज उतरने लगती है) वो बोलीं—वो चाय नहीं पीतीं।

मणि : क्या कहना चाहते हो तुम ? कौन चाय नहीं पीती ?

सनत् : नहीं नहीं। पी है, बाद में पी है। मिस मजूमदार।

मणि : तुम्हें चाय दी थी इन्होंने, या यह भी अक्ल में नहीं आया इनके ? लिलि ! पांचू !

सनत् : जी नहीं। मैंने पी है चाय।

मणि : कब ?

सनत् : अभी तो, आपके जाने के बाद यहीं तो दे गया था।

मणि : ओ हाँ। (पाँचू का प्रवेश) और लोगे ?

सनत् : जी नहीं। अब और नहीं।

मणि : तुम माँग लिया करना सनत्···जब भी जो कुछ जरूरत हो। पाँचू, यह कागज़ फौरन इलेक्शन ऑफिस में रामबाबू को दे आ। कहना सुबह तक छप जाना चाहिए। दौड़कर जा। (पाँचू नास्तिकता का प्रतिवाद लेकर भागा) तुम अब···इसका एक जवाब सोचो तो। (सनत् को साम्राज्य-

वादी लीफलेट दिया) जरा फड़कता हुआ···(लिलि का प्रवेश। कंठ में काफी विद्रोह)

लिलि : क्या है ?

मणि : ऐं ! ओ हाँ, सनत् को चाय···नहीं नहीं, चाय तो नहीं पियोगे कहा था तुमने। अरे जरा देखा करो कब सनत् को किस चीज की जरूरत होती है।

लिलि : पता नहीं क्या-क्या कहते रहते हो। मेरी तो समझ में नहीं आता।

मणि : क्यों क्या हो गया ?

लिलि : होगा क्या ?

मणि : ओ, हाँ ! हाँ !—इलेक्शन के समय इस तरह मेल जोल···(रुके। मुखमंडल पर एक हिंस्र भाव प्रगट हुआ) ओह ! आने के लिए वक्त नहीं है। लास्ट कौज !

लिलि : कह क्या रहे हो ?

मणि : तू जो सनत् के साथ लीफलेट लिख रही थी—वह क्या मेलजोल···

लिलि : ऐं ?

मणि : क्यों सनत् तुम क्या लिलि के साथ मेलजोल कर रहे थे ?

सनत् : नहीं तो सर ! बिल्कुल नहीं।

मणि : तो फिर ? अरे ! अगर मेलजोल ही करते तो ऐसा लिख कैसे सकते। इधर उनके पास मीटिंग के लिए समय नहीं है, उधर ये कहते हैं लास्ट कौज !···अच्छा सनत्···तुम भी तो इस शहर में रहते हो, स्कूल में पढ़ाते हो। तुम्हें क्या लगता है···मेरा कौज क्या लास्ट है ?

सनत् : आप यह क्या कर रहे हैं ?

मणि : एक ये अटल कमबख्त और दूसरा वो अमूल्य घोष। कौड़ी भर की मदद तो करेंगे नहीं इलेक्शन में, और ऊपर से मेरे घर के मामले में मुझ पर उपदेश झाड़ेंगे। ठीक है,

कोई जरूरत नहीं इनकी। मेरा इलेक्शन है न···मैं अपने ढंग से ही चलाऊंगा। तुम उस पर जुट जाओ, सनत्। (सनत् फौरन लीफलेट हाथ से लेकर आफिस की तरफ चल देता है।) यहीं बैंठ जाओ। आफिस में अभी मुझे बैंठना होगा। (सनत् चोरों की तरह आकर अरविन्द की टेबल पर बैंठ जाता है)

लिलि : अभी जो लिखा था उसका क्या हुआ?

मणि : उसे प्रेस भेज दिया है। कल ही छप जाएगा···तू चिन्ता न कर।

लिलि : पर वह लाइन?

मणि : कौन-सी लाइन?

लिलि : वह, वह नास्तिकता तो दूर···

मणि : हाँ हाँ। भई बहुत बढ़िया बनी है वह लाइन। एक ही लाइन में चारों खाने चित हो जाएँगे, सब के सब।

लिलि : पर अमानिशा देवी···

मणि : कौन अमानिशा?

लिलि : जिसने यह कविता लिखी है। अगर उसने···यह बात ऐसे न कही हो तो···

मणि : तू मुझे यह बता कि इस अमानिशा देवी के लिए तुझे इतना सरदर्द क्यों हो रहा है?

लिलि : अमानिशा देवी मेरी खास मित्र हैं।

मणि : और मैं भी तेरा खास बाप हूं। मेरे इलेक्शन से तेरे दोस्त बढ़कर हैं? (लिलि चुप बैंठी रहती है) अच्छा! तू ऐसे क्यों करती है? तू नहीं जानती कि अब अमूल्यघोष नहीं आ रहा है। कहाँ तो तुम लोगों को इस काम पर जुट जाना चाहिए, और कहाँ एक के बाद एक बखेड़ा पैदा किये जा रही हो।

लिलि : (कुछ रुककर) और अगर अमानिशा देवी अपना प्रतिवाद

लिख भेजे तो ?

मणि : भेजने तो दे पहले।

लिलि : कहो ना ? अगर भेजे तो क्या करोगे ?

मणि : तब तक इलेक्शन खत्म हो चुका होगा। मैं मान लूँगा कि व्याख्या में भूल हो गई थी। बस ! अब बात ही खत्म हो गई। अब शुरू हो जाओ इस लीफलेट पर

लिलि : वह तो सनत् बाबू लिख रहे हैं।

मणि : तू भी मदद कर इनकी। यह तो साम्राज्यवाद का मामला है···शायद तेरी इकनामिक्स काम आ जाए।

लिलि : (खुश होकर) मैं मदद करने गई तो शायद इन्हें और असुविधा हो जाए।

सनत् : नहीं नहीं, असुविधा क्यों होने लगी। असुविधा किस बात की। (मगर शक्ल बताती है कि असुविधा होगी। पर लिलि ध्यान नहीं देती)

लिलि : आप ठीक कह रहे हैं न ?

सनत् : हाँ-हाँ। जैसा आप ठीक समझें···

मणि : वाह ! ठीक तो तुम समझोगे भाई।

सनत् : मैं ? मेरे···जैसा आप कहें···मुझे कोई···(लिलि नया खतरा नहीं उठाती)

लिलि : तो आइये सनत् बाबू, यहाँ आ जाइए। (उसी सोफे पर)

सनत् : यहाँ ?

लिलि : यहीं ठीक रहेगा। (सनत् क्या कहता। धीरे-धीरे कागज लेकर आगे बढ़ता है)

मणि : इसे खत्म कर डालो आज ही। (पाँचू का प्रवेश)

पाँचू : दे आया।

मणि : रामबाबू को ही दिया न ?

पाँचू : जी ! उन्होंने कहा कि कल तक छप जाएगा।

मणि : अच्छा। (पाँचू बाहर गया, मणिभूषण आफिस गए)

लिलि : आपने कुछ लिखा है क्या ?

सनत् : दो-चार लाइनें लिखी हैं सिर्फ। (कागज देता है, लिलि पढ़ती है)

लिलि : (प्रायः दुखित स्वर में) सनत् बाबू। मेरी मदद की आपको कोई जरूरत नहीं है।

सनत् : नहीं, नहीं। यह क्या कहती हैं आप ? यह आपसे किसने कह दिया ?

लिलि : आप मुझसे बहुत अच्छा लिख लेते हैं।

सनत् : नहीं-नहीं। क्या कहती हैं आप—मैं तो···

लिलि : आप सचमुच अच्छा लिखते हैं, है न ?

सनत् : क्या लिखता हूँ ?

लिलि : कहानी या कविता ?···आप ही बताइए···

सनत् : कभी-कभी।

लिलि : क्या लिखते हैं ? कविता ?

सनत् : कविता ? हां—दो-एक···

लिलि : सुनाएंगे ?

सनत् : सुनाऊँ ?

लिलि : याद है आपको ?

सनत् : है, मगर···

लिलि : सुनाइए ना एक। कविता मुझे बड़ी अच्छी लगती है।

सनत् : अभी ? पर···यह भी आज रात ही लिखना···

लिलि : हां। सो तो है। (फिर से सनत् का लिखा पढ़ती है आप पहले इसे लिख डालिए।

सनत् : लिख डालूं ?

लिलि : हां। फिर दोनों साथ बैठेंगे। (सनत् फौरन उठकर टेबल पर चल देता है) उठे क्यों ? यहां बैठकर लिखने में कोई असुविधा है ?

सनत् : नहीं, असुविधा तो कुछ नहीं ! (फिर सोफे पर आकर तीव्र वेग से कलम चलाने लगता है। उसकी गति देखकर लगता है कि अगर शिक्षक न होकर वह कोई संवाद पत्र-सेवी होता, तो उन्नति करता। लिलि विस्मय से उसका लिखना देखती रहती है कुछ देर, फिर उठ जाती है। सनत् ध्यान तक नहीं देता। लिलि दूर से देखती है फिर पास आकर देखती है।

फिर उसकी गर्दन के पीछे झुककर देखती है। उसका मुग्ध विस्मय बढ़ता ही जाता है। सनत् कुछ भी नहीं जानता—उसकी कलम चलती ही रहती है।)

लिलि : बाप रे ! आप···(पास जो खड़ी थी उसकी आवाज से चौंककर सनत् खड़ा हो जाता है। लिलि भी चौंककर पीछे हट जाती है) क्या हुआ ?

सनत् : (लज्जित) सॉरी···मैं समझ नहीं पाया—एकाएक—

लिलि : आपकी कनसन्ट्रेशन खराब कर दी मैंने ?

सनत् : नहीं-नहीं। आप क्या कह रही थीं, कहिए।

लिलि : कुछ खास नहीं। कह रही थी···आप लिखते समय सोचने के लिए भी नहीं रुकते एक सेकण्ड ?

सनत् : ऐं ? (घबड़ाकर) हाँ, सोचकर लिखना चाहिए था। ठीक कहती हैं आप। (लिलि के कुछ कह सकने से पहले, तेज कदमों से टेबिल तक गया और कागजों को वेस्ट पेपर बास्केट में डाल दिया। टेबिल से कोरा कागज उठाकर आकर बैठ गया और ऊपर की तरफ देखकर सोचना शुरू कर दिया। लिलि हतवाक् रह गई। फिर मुस्कराने लगी। टोकरी से कागज उठाकर आकर सनत् के पास बैठ गई। सनत् चौंककर कुछ दूर खिसक गया)

लिलि : सनत् बाबू, आप मुझे गलत समझ बैठे।

सनत् : क्यों-क्यों, कैसी गलती ?

लिलि : आप यह बढ़िया लिख रहे थे।

सनत् : हैं ! आपने तो पढ़ा भी नहीं।

लिलि : पढ़ा है।

सनत् : कब पढ़ा आपने ?

लिलि : जब आप लिख रहे थे। बहुत अच्छा बन रहा है। (थोड़ी देर बाद फोन बज उठता है। लिलि उठती है, पर फोन तक पहुंचने से पहले ही मणिभूषण आकर फोन पकड़ते हैं। मणि के प्रवेश के साथ ही साथ सनत् खड़ा होकर लिखने लगता है। लिलि आकर कंधा पकड़कर बैठा देती हैं और खुद बैठ जाती है)

मणि : हैलो···हाँ मणि मजूमदार बोल रहा हूँ···हैलो···हाँ दीजिए···हैलो, मणि मजूमदार···कौन ? और जरा जोर से बोलिए, सुनाई नहीं दे रहा है···मोहन ? तुम गए नहीं बिष्णुनगर ? ओ हाँ-हाँ, नहीं तो ट्रंककाल होगा कैसे···क्या कहा ?
(मणि सहसा उत्सुक हो उठते हैं) इतनी जल्दी ? क्या कह रहे हो ?···क्या, चीज क्या है ? चिदानन्द ?···तो फिर ?···सदानन्द ? (सुनते-सुनते क्रमशः उज्जवल होने लगे। अन्त में आनन्द से फट गए) स्पैंलन्डिड (लिलि और सनत् चौंककर उठते हैं। देखकर मणिबाबू संयम लाते हैं) कैपिटल। कैपिटल। (हाथ के इशारे से बैठा देते हैं इन्हें) कब जा रहे हो तुम ?···कल सुबह ? क्यों रात गाड़ी नहीं है कोई····? जंक्शन ? वहीं चले आओ। मैं जंक्शन में गाड़ी भेज देता हूँ···हाँ-हाँ, तीस मील तो हैं···ग्यारह कितना ? ठीक है, इतने हिसाब की कोई जरूरत नहीं, ग्यारह बजे गाड़ी जंक्शन पहुँच जाएगी। ए···हाँ, जरूर···हाँ, अच्छा···नमस्कार। (फोन रखकर परमानन्द से दोनों हाथ रगड़ते हैं) समझी लिलि !

जितना हो सके चलाइए।

लिलि : क्या ?

मणि : ये अटल ! कह गया···जितना हो सके चलाईए। कितना हो सकता है, अगर जानता तो जुबान नहीं मिलती उसकी।

लिलि : अरे हुआ क्या ?

मणि : बताएंगे। बताएंगे ! समय आने पर सब पता चल जाएगा। पाँचू ! सनत् तुम्हारा काम कितना आगे बढ़ा ? (सनत् मुंह बाए मणिभूषण का आनन्द देख रहा था, चौंक उठा)

सनत् : एं ! जी हो गया है—मतलब एक ड्राफ्ट तैयार किया है—वो देख लें तो···

(पाँचू का प्रवेश)

लिलि : मैंने देख लिया है बाबू जी। इससे अच्छा हो ही नहीं सकता। (लिलि के हाथों कागज थमा देता है)

पाँचू : बाबूजी बुलाया मुझे ?

मणि : हाँ। गंगाराम को बुला।

पाँचू : जी ड्राइवर साहब तो माँजी को लेकर स्टेशन गए हैं।

मणि : ओ, हाँ ! हाँ ! ठीक है, आते ही भेज देना मेरे पास। बहुत जरूरी काम है। (पाँचू का प्रस्थान। मणिभूषण थोड़ा-सा पढ़ते हैं फिर सनत् की ओर प्रशंसा सूचक-दृष्टि से देखते हैं। लिलि के हावभाव से लगता है कि यह कृतित्व उसी का है। सिर्फ सनत् फटी-फटी आँखों से देख रहा है। जैसे इसके बाद की लाइन से उसका प्रोबेशन डूब जाएगा।)

मणि : पाँचू !

सनत् : चलेगा सर ?

मणि : चलेगा मतलब ? (पाँचू का प्रवेश) इलेक्शन आफिस।

रामबाबू। यह कल ही छप जाना चाहिए। (कागज लेकर पाँचू का प्रस्थान) सनत्, आज रात···, तुम्हारे घर में कौन-कौन हैं ?

सनत् : घर···माने···वह गाँव में हैं। मैं तो स्कूल के क्वाटर में हूँ। जीवन बाबू और मैं एक कमरे में···

मणि : ठीक है। आज उस कमरे में जीवनबाबू को ही रहने दो। तुम यहीं खा-पी लो और रह जाओ।

सनत् : यहाँ !

मणि : हाँ, नहीं तो रात बारह बजे तुम्हें कहाँ ढूँढूँगा। (सनत् इस बार डरा नहीं। पर यहाँ रात काटना उसके लिए कोई आनन्द संवाद भी नहीं।)

सनत् : बारह बजे ?

मणि : काम है सनत्। बड़ा जरूरी काम। तुम्हारे अलावा और लिखेगा भी कौन ?

सनत् : ओ, लिखना। दीजिए न, मैं अभी···

मणि : अभी हो सकता तो मैं बारह बजे कहता ही क्यों ?

सनत् : तो फिर मैं बारह बजे ही जाऊँगा।

मणि : नहीं, नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है। इतनी रात गए··· क्यों यहाँ कोई असुविधा है क्या ?

सनत् : जी नहीं, असुविधा कैसी। मगर—शायद जीवनबाबू फिक्र करें इसलिए···

मणि : मैं खबर किए देता हूँ।

लिलि : बाबूजी, आपने तो अच्छा सस्पैन्स बना दिया।

मणि : अरे, तेरा क्या ख्याल है कि इलेक्शन में कम सस्पैन्स होते हैं। सनत्, बैठो, खड़े क्यों हो गए। चाय पी है ? बैठो तुम लोग···मुझे अभी बहुत काम करने हैं। (आफिस की तरफ जाते हुए)

सनत् : पर अभी ? अभी हम क्या करेंगे ?

मणि : तो फिर, मैं घड़ी-घड़ी तुम्हें काम कहाँ से लाकर दूं ? अब फिर रात बारह बजे होगा। (मणिभूषण गए, सनत् असहाय लटकता रहा)।

लिलि : बहुत काम है, सनत् बाबू।

सनत् : है ? कहाँ, लाईए। (कागज लेकर कलम निकालता है)

लिलि : लिखना नहीं है।

सनत् : लिखना नहीं है (कागज कलम रख देता है) तो फिर ?

लिलि : आप कविता सुनाएँगे कह रहे थे न ?

सनत् : मैं···मैं···मैंने कब कहा ?

लिलि : वाह ! तभी नहीं कह रहे थे कि बहुत काम है ! अब तो हो गये काम !

सनत् : (असहाय) एँ ! हाँ हो गये, पर (करुण आवेदन) अब कोई काम नहीं है ? (लिलि सहसा ही-ही कर हँस उठती है) क्यों, क्या हो गया ? (पर लिलि हंसी की रुकती नहीं। अरविन्द का प्रवेश। लिलि का हँसना देखता है। सनत् को लिलि के पास देखता है। देखकर जड़वत् खड़ा हो जाता है। लिलि बाद में देखती है)

लिलि : अरे ! आप आ गये। मां कहाँ है ? स्मरजीत सान्याल नहीं आए ? (कहते कहते ही सुप्रीति की अभ्यर्थना सूचक आवाज सुनाई देती है। सनत् अरविन्द को देखते ही खड़ा हो चुका है। महा समारोह से सुप्रीति स्मरजीत सान्याल को लेकर प्रवेश करती है। मर्माहत अरविन्द अपने टेबिल पर जाकर कब स्लिप और लिस्ट लेकर बैठ गया है किसी ने देखा तक नहीं। दीर्घदेही स्मरजीत सान्याल के चेहरे, आंखों, केश-विन्यास, चश्मा, चादर और धोती से कवि प्रतिभा फूट-फूटकर निकल रही है।)

सुप्रीति : आइये आइये, स्मरजीत बाबू ! लिलि, तेरे बाबू कहाँ हैं ? यह मेरी लड़की है लिलि। आपकी रचनाओं की बड़ी

प्रशंसक है। और देखा जाए तो प्रशंसक है कौन नहीं ? लिलि, अपने बाबूजी को बुला ला। बैठिए स्मरजीत बाबू ! (सनत् को देखकर) और ये हैं··· (सनत् ने स्मरजीत के दर्शन के साथ ही साथ जो मुंह फाड़ा था, अब तक बंद नहीं किया। आँख मिलते ही स्मरजीत चौंक उठे मुहूर्त भर के लिए। लिलि तब तक मणिभूषण को आफिस से बुलाने गई है।)

सनत् : आप !

स्मरजीत : हाँ सनत्, मैं। स्मरजीत सान्याल ! ठीक ही पहचाना है तुमने। बल्कि मैं ही शुरू में नहीं पहचान पाया था। बहुत बदल गये हो तुम !

सुप्रीति : आप लोगों में तो परिचय है। वाह ! (सनत् के होंठ हिले पर कुछ सुनाई नहीं दिया। मणिभूषण का प्रवेश, पीछे-पीछे लिलि।)

मणि : नमस्कार, नमस्कार, स्मरजीत बाबू !

स्मरजीत : नमस्कार !

मणि : हमारा सौभाग्य है कि आप पधारे। परिचय-वरिचय हो गया है न ? यह मेरी लड़की है लिलि···

स्मरजीत : हाँ ! मिसेज मजूमदार ने सबसे परिचय करा दिया है।

मणि : बैठिए, बैठिए।

सुप्रीति : जानते हो ! सनत् बाबू के साथ इनका पहले से ही परिचय था।

लिलि : सच ! वाह सनत् बाबू ! आपने पहले तो कभी नहीं बताया।

मणि : अचरज की क्या बात है ? आप भी साहित्य में आनर्स होंगे, है न, स्मरजीत बाबू ?

सुप्रीति : आह ! तुम क्या कहते हो, कुछ पता भी नहीं है ?

स्मरजीत : (हँसकर) नहीं, नहीं, ठीक ही कह कहे हैं। अपराध

स्वीकार करता हूँ। पर सनत् के साथ मेरा परिचय इस कारण से नहीं है। हमारे पड़ोसी के तौर से···क्यों सनत्? लिखना तो नहीं छोड़ा? (सनत् से कोई जवाब नहीं मिलता। वह वैसे ही फटी-फटी आँखों से देखे जा रहा है। अरविन्द मुड़कर एक बार लेखक को और एक बार सनत् को देख लेता है)

मणि : (उच्छवसित होकर) लिखना? बढ़िया लिखता है सनत्। इसे पाकर मुझे जो लाभ हुआ है मैं बता नहीं सकता। (पाँचू का प्रवेश) क्या है?

पाँचू : राम बाबू को दे आया।

मणि : अच्छा।

पाँचू : ड्राईवर साहब को बुलाएँ?

मणि : नहीं मैं खुद जा रहा हूँ, थोड़ी देर बाद।

सुप्रीति : पाँचू, ठहर। तुम बातें करो, मैं चाय का बंदोबस्त कर आऊँ। पाँचू चल। (सुप्रीति और पाँचू का अंदर प्रस्थान)

मणि : हमने तो उम्मीद ही छोड़ दी थी। आपकी चिट्ठी नहीं आई। सुप्रीति—याने मेरी पत्नी तो काफी परेशान हो उठी थी।

स्मरजीत : चिट्ठी मुझे बड़ी देर से मिली। सरकार के डाक विभाग की मेहरबानी! सोचा कि जब तक तार पहुँचे तब तक मैं खुद ही रेल से पहुँच जाऊँगा। (लिलि इन बातों को निगल रही थी। बड़े-बड़े कवियों का अंदाज ही कुछ और होता है। अरविन्द के हाथों कलम है पर सरक नहीं रही)

मणि : पोस्टल सर्विस आजकल ऐसी हो गई, कि कुछ कहा नहीं जा सकता। मैं इसका एसेम्बली में कोश्चेन उठाऊँगा, आप देखते जाइए।

स्मरजीत : खबर भेज नहीं पाया, इसलिए आप लोगों को काफी परेशानी हुई होगी।

मणि : बिल्कुल नहीं, बिल्कुल नहीं। मैं तो शुरू से कह रहा हूँ कि आपने जब कहा है कि आएंगे तो जरूर आएंगे। सुप्रीति जरा नर्वस हो रही थी···आप साहित्य-सभा में आ रहे हैं इसका काफी प्रचार हो रहा है।

स्मरजीत : मारे गये !

मणि : क्यों ? मारे क्यों गये ?

स्मरजीत : सब शायद ऐसी आशा लेकर आऐंगे कि कोई बहुत बड़ी बात होने वाली है। (लिलि अब रह नहीं सकी)

लिलि : क्यों ? (स्मरजीत की सहास्य दृष्टि सीधे लिलि पर पड़ी, लिलि कुछ सकपका सी गई।)

स्मरजीत : क्यों ? आप ही कहिए ? मन में जरूर आपने भी एक चेहरे की कल्पना की होगी ? मिली आपकी कल्पना ? (लिलि सिर नीचा कर लेती है अरविन्द पलट कर देखता है। लिलि का उत्तर नहीं मिला।)

मणि : पर मैंने आपकी ऐसी ही कल्पना की थी। सुप्रीति घबरा रहीं थीं कि स्टेशन पर आपको पहचान पाएंगी या नहीं। मैंने कहा···अरे जाकर देखो तो सही। कवि हैं, देखते ही पहचान जाओगी।

स्मरजीत : और देखिए। मिसेज मजूमदार एक नजर में पहचान गईं। गाड़ी से उतरते ही सीधे मेरे सामने आ खड़ी हो गईं। मैं तो हैरान रह गया। और सच पूछे तो इस इलेक्शन के वक्त आकर मैंने आप लोगों के लिए काफी असुविधा पैदा कर दी !

मणि : बिल्कुल नहीं, बिल्कुल नहीं। आप ऐसा सोचें भी नहीं। इलेक्शन की वजह से साहित्य को थोड़े ही भूला जा सकता है। इलेक्शन की मीटिंग से साहित्य-सभा की कीमत बहुत

ज्यादा है। मैं तो यही कह रहा था सुप्रीति से कि···
(सुप्रीति का प्रवेश)

सुप्रीति : क्या कह रहे थे ?

मणि : कह रहा था न कि साहित्य-सभा पहले है, इलेक्शन पीछे।

सुप्रीति : अरविन्द, फिर तुम वही लिस्ट लेकर बैठ गये ?

अरविन्द : यह आज ही करना जरूरी है।

सुप्रीति : कोई जरूरी नहीं है।

मणि : मैंने तो कहा···

सुप्रीति : छोड़ दो उसे। आओ यहाँ आकर बैठो। प्राय: जबरदस्ती उसे कागजों से छुड़ाकर लाकर बैठा देती है।

स्मरजीत : देखिए, मुझे बुरा लग रहा है। सारे काम छोड़ कर आप मेरे साथ···

मणि : (सहसा याद आ जाता है) सारे काम···ओ हो! मुझे जरा माफ करें स्मरजीत बाबू, एक बार इलेक्शन आफिस जाना बहुत जरूरी है···

स्मरजीत : शौक से! (मणि भूषण बाहर जाते हैं)

सुप्रीति : चाय बन रही है स्मरजीत बाबू। बस दस मिनट।

स्मरजीत : आप परेशान न हों, मैं भागा थोड़े ही जा रहा हूँ।

सुप्रीति : सच, मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा है कि आप आए हैं, यहाँ रहेंगे, कल शाम तक रहेंगे।

स्मरजीत : आप तो ऐसे कह रही हैं जैसे मैं कोई बड़ी दुर्लभ वस्तु हूँ।

सुप्रीति : नहीं है दुर्लभ ? मैंने तो सुना था कि आप साहित्य-सभा से दूर ही रहते हैं।

स्मरजीत : (हँस कर) हाँ, इस मामले में बदनामी है तो सही मेरी। (इसे कहते हैं कवि···लिलि ने सोचा ? नखरे···अरविन्द ने सोचा)

अरविन्द : आप क्या सिर्फ कविता ही लिखते हैं ?

लिलि : क्या कहते हैं आप ? 'वाष्प तृष्णा' नहीं पढ़ी आपने ?

'सीता और ऐन्ड्रेमिडा' ! 'मेघ ज्वाला' ?

स्मरजीत : लगता है आप तो मेरे सभी दुष्कर्मों से परिचय हैं,।

लिलि : सनत् बाबू आपने तो पढ़ी होगी ?

सनत् : हाँ, पढ़ी है।

स्मरजीत : वाह ! इसे कहते हैं मित्रता। मुलाकात तक नहीं होती पर सम्बन्ध नही छूटते। क्यों सनत् कविताएँ भी पढ़ी हैं, मेरी ?

सनत् : हाँ पढ़ी हैं।

स्मरजीत : वाह ! घबराओ मत, कैसी लगी है पूछकर तुम्हें परेशान नहीं करूँगा।

लिलि : सनत् बाबू, आपने 'मेघ ज्वाला' पढ़ी है ?

सनत् : जी हाँ।

लिलि : अच्छा, विदिशा के आत्महत्या का असली कारण क्या है आपके विचार से ?

सुप्रीति : यह सवाल तो लेखक से भी पूछ सकती है। वह तेरे सामने ही खड़े हैं··· (लिलि यही चाह रही थी)

लिलि : हिम्मत नहीं हो रही है।

स्मरजीत : क्यों ? मुझे देखकर क्या डरावना कुछ लग रहा है ?

लिलि : नहीं, मतलब···मैं···अच्छा, कहिए न ?

स्मरजीत : क्या ?

लिलि : विदिशा ने क्यों आत्महत्या की ?

स्मरजीत : क्यों ? आप ही बताइये ?

लिलि : वाह, मैं कैसे बता सकती हूं।

स्मरजीत : आपने तो पढ़ी है। पढ़कर कुछ तो लगा ही होगा।

लिलि : मैं समझती ही क्या हूं ?

स्मरजीत : जो समझती हैं वही बताइए।

लिलि : मैं···मुझे लगता है कि शान्तनु का चला जाना ही विदिशा की आत्महत्या का असली कारण नहीं है। ऐसा

ही है न ?

स्मरजीत : आप कहे चलिए।

लिलि : नहीं, मैं इतना नहीं समझती···

स्मरजीत : आप ठीक समझी हैं। आगे कहिए न।

लिलि : (उत्साह पाकर) मुझे लगता है···विदिशा के मंन में एक खालीपन महसूस हो गया था। यह खालीपन उसके सेक्स कम्पलेक्स की वेदना पर इस युग की प्रतिक्रिया है। इसी लिए विदिशा अन्दर ही अन्दर···मैं कहना चाहती हूं कि शान्तनु का चला जाना सिर्फ इसी शून्यता को और साफ कर देना है, और सर्वव्यापी कर देना है और कुछ नहीं।

स्मरजीत : (सप्रशंस) मिसेज मजूमदार, आपकी बेटी की साहित्य चेतना बड़ी तीव्र है।

(मणिभूषण का प्रवेश)

मणि : बड़ी मुश्किल हो गई भई।

सुप्रीति : क्या हुआ ?

मणि : मुझे अभी जाना पड़ रहा है इलेक्शन आफिस तक।

सुप्रीति : वाह ! स्मरजीत बाबू आए और···

स्मरजीत : नहीं नहीं, यह भी कोई बात हुई। मैं आया तो क्या सारे काम रुक जाएंगे ?

सुप्रीति : ऐसा कौन सा काम पड़ गया ?

मणि : एक बार प्रेस तक जाना जरूरी है। इसके अलावा···। छोड़ो भी इन बातों से यहाँ क्या फायदा ? तुम बातें करो, मैं जितनी जल्दी हो सके आने की कोशिश करूंगा। स्मरजीत बाबू आप बुरा न मानें···

स्मरजीत : अरे वाह ! यह आप क्या···

सुप्रीति : चाय पीकर जाते ?

मणि : नहीं, मैं जरा हो आऊं। (प्रस्थान)

सुप्रीति : मेरी भास्वती पत्रिका देखी है ?

स्मरजीत : नहीं—हां—ठीक से याद नहीं आता।

सुप्रीति : लिलि, ले आ तो एक अंक···

लिलि : एक भाद्र संख्या तो यहीं पड़ी है। (स्मरजीत पन्ने पलटने लगते हैं)

सुप्रीति : कोशिश तो पूरी कर रही हूं कि इस पत्रिका का कुछ बन जाए, पर सिर्फ मेहनत से ही तो सब कुछ नहीं हो जाता। जब तक दो एक वाकई में अच्छी रचनाएँ न मिलें···की किताब आ गई ?

स्मरजीत : ऐं ? (हंस कर) अब मैं क्या बताऊं, आप तो सभी कुछ जानती हैं, खासकर मिस मजूमदार।

लिलि : "सुनहली सिम्फनी" के बाद और कुछ छपा है क्या ? सुना तो नहीं ?

स्मरजीत : (सुप्रीती से) देखा ? (लिलि से नहीं,) इसके बाद कुछ नहीं आया।

सुप्रीती : लिखा तो जरूर होगा इसके बाद कुछ ?

लिलि : क्यों अबके "काकली" में ही तो छपी है "मैं एक टूटी फूटी सीढ़ी"।

सुप्रीती : वह तो देखा है। मैं कह रही थी कुछ ऐसा जो अब तक कहीं न छपी हो।

स्मरजीत : हैं, एक आध···

सुप्रीती : सुनाऐंगे ?

स्मरजीत : ऐं ?

लिलि : (अधिक आग्रह से) हां, सुनाईए ? (स्मरजीत इसके लिए प्रस्तुत नहीं थे)

स्मरजीत ; सुनाऊँ ? अब क्या सुनियेगा···सुनाने लायक कुछ नहीं···

सुप्रीती : यह भी कोई बात हुई कि आपकी कविता सुनाने लायक नहीं है।

लिलि : प्लीज ! स्मरजीत बाबू !

स्मरजीत : मुझे ठीक से याद नहीं है। यह भी एक बीमारी है मुझे···लिखने के बाद फिर याद नहीं रहता।

लिलि : जितना याद है उतना ही सुनाइये।

स्मरजीत : अच्छा, तो सुनिए।

(सुप्रीति लिलि को इशारा करती है। लिलि सनत् को कागज पकड़ाती है और लिख लेने के लिए इशारा करती है। स्मरजीत अनमने से भास्वती के पन्ने पलटने लगते हैं।)

कोमल त्वचा। पसंद ? वह तो है अलंकार, विशुद्ध पता लगाएं···सम्पादना। प्रीति और शुभेच्छा बैंगनी रश्मि का विकीरण. न्यूट्रोन, इलक्ट्रोन··· दुःसंवाद। सुजाता फिर भी चुप है, आधी रात। अगर मैं जानती तुम हो, पर आज यहीं, अगले अंक की समापिका।

(स्मरजीत की काव्य प्रतिभा "अगर मैं जानती तुम हो," पर हाहाकार करती हुई 'समापिका' पर आकर धड़ाके से गिरती है, स्मरजीत खुद भी गर्दन झुकाकर बैठे हैं। मुट्ठी में मुचड़ी हुई भास्वती। लिलि, सुप्रीति और मुग्ध अरविन्द शायद अर्थ ढूंढ़ने की कोशिश कर रहा है। सनत् ने लिख तो लिया है, पर उसकी आंखें और गोल हो गई हैं। कुछ देर चुप्पी।)

सुप्रीति : कैसे लिख लेते हैं ऐसा। (स्मरजीत ने जैसे किसी और दुनिया से लौटकर नजर उठाई)

स्मरजीत : मुझ से कुछ कहा ?

सुप्रीति : (संभलकर) नहीं नहीं, कुछ नहीं। मैं समझ नहीं पाई कि आप···

स्मरजीत : (हंसकर) आप कहिए न। यह कुछ नहीं है।

अरविन्द : अच्छा ! "अगली संख्या की समापिका" क्या हुई?

लिलि : आ :! अरविन्द बाबू !

अरविन्द : मैं तो सिर्फ़...

स्मरजीत : (गहरी हंसी हंसकर) संख्या की ही तो समापिका होती अरविन्द बाबू। और किसकी होती है ?

सुप्रीति : बिल्कुल ! और हो ही किसकी सकती है ?

लिलि : (अरविन्द से) संख्या किसे कहा गया है यहां...सोचा है आपने ?

अरविन्द : (घबड़ाकर) ओ, हां ! हाँ ! अब समझ गया।

सुप्रीति : स्मरजीत बाबू, एक बात मानो आप मेरी ?

स्मरजीत : कहिए ?

सुप्रीति : यह कविता मुझे दे दीजिए—भास्वती के लिए।

स्मरजीत : यह कविता ?

सुप्रीति : बहुत ज्यादा मांग लिया मैंने, है न ? पर आप ही सोचिए, भास्वती खड़ी कैसे होगी अगर आप जैसे कवि—

स्मरजीत : नहीं, ऐसी बात नहीं है। मतलब—अच्छा, दूंगा यह कविता...

सुप्रीति : (उत्साह से) सच ?

स्मरजीत : हां, पर अब दुबारा कहने के लिए न कहिए। बाद...बाद में लिख दूंगा।

लिलि : लिखने की जरूरत नहीं। लिखा जा चुका है। (सनत् से कागज लेकर दिखाती है)

स्मरजीत : यह क्या ? कब लिख डाला ?

लिलि : अभी, सनत् बाबू से कहा था लिख डालें।

स्मरजीत : लो, तब तो हो ही गया। मिल गया आपको।

लिलि : अपना नाम नहीं लिखेंगे इस पर ?

स्मरजीत : (सहास्य) लाईये। दस्तखत करते हैं। (पांचू का प्रवेश)

पांचू : मां जी।

सुप्रीति : ऐं ? हां, चल, मैं आती हूं। (पांचू का प्रस्थान) स्मरजीत बाबू चाय बन गई है, आप हाथ मुंह धो लें। लिलि, इन्हें साथ ले जा।

लिलि : (कागज देते हुए) सनत् बाबू, इसे आप रखिए। आइए स्मरजीत बाबू। (लिलि तथा स्मरजीत का प्रस्थान)

सुप्रीति : अरविन्द, तुम सनत्‌बाबू से बातचीत करो। मैं तब तक जरा नाश्ता लगा लूं। (सुप्रीति का प्रस्थान। सनत् कविता देखने लगता है।)

अरविन्द : आप भी साहित्य करते हैं ?

सनत् : साहित्य को क्या मैं चाटूंगा ? यही साहित्य के चक्कर में बड़े मामा खुद भी डूबे और मुझे भी साथ ले डूबे।

अरविन्द : मामा ?

सनत् : मामाजी के चक्कर में ही तो मुझे साहित्य आनर्स लेना पड़ा। मेरे जैसे और कितनों का सत्यानाश किया है इस भलेमानुस ने—खुद ही जानें। प्रदेश में कोई ऐसा जिला नहीं है जहां से मामाजी ने पत्रिका नहीं निकाली हो।

अरविन्द : सब अपने खर्चे पर ?

सनत् : और नहीं तो क्या ? और खर्चा क्या मामूली था ! हर नए लेखक की तस्वीर छापे बिना बड़े मामा को चैन ही नहीं पड़ता था।

अरविन्द : एक भी नहीं चली ?

सनत् : कैसे चलेगी ? कलकत्ते जैसी जगह में बड़े-बड़े रथी-महारथी नहीं चला पाए तो बड़े मामा और यह कस्बे। दो पत्रिकाएँ तो निकलते के साथ ही साथ प्रोस्क्राईब हो गई।

अरविन्द : अच्छा ?

सनत् : जी हाँ, कापियाँ जब्त, मुकद्दमा—इनमें जब सब-कुछ गंवाकर अल्लामियाँ को प्यारे हुए तो लड़के को वसीयत में कुछ

कर्ज मिला और मुझे मिला इस साहित्य का बोझ।

अरविन्द : साहित्य का बोझ ?

सनत् : बोझ नहीं तो क्या ? एक बोझ आनर्स और दूसरा···दूसरा कार्नर्स में एक बोझ ही है···एक बोरी।

अरविन्द : बोरी ?

सनत् : जितनी पत्रिकाएँ उन्होंने निकाली थी उनके कापियों की फाइलें। न रखा जा सकता है और फेंका जा सकता है। इससे तो कर्ज मुझपर छोड़कर लड़के को आनर्स दे जाते तो अच्छा था। पर लड़का सयाना है···ओवसियरी पढ़कर मौज से रहता है। मरा मैं। (अरविन्द अवाक् हो जाता है। यह कह क्या रहा है ?)

अरविन्द : सनत् बाबू ! आप नहीं जानते आपके पास क्या है।

सनत् : क्या है ?

अरविन्द : जो मेरे पास नहीं है।

सनत् : क्या नहीं है ?

अरविन्द : अगर मैं कामर्स न पढ़कर···अच्छा सनत् बाबू !

सनत् : क्या ?

अरविन्द : मुझे इस कविता का अर्थ समझा देंगे ?

सनत् : अर्थ ? इसका ?

अरविन्द : (लज्जित होकर) आपको अजीब लग रहा होगा। पर पर मैं सचमुच साहित्य नहीं समझता। आप अगर मुझे समझा दें···

सनत : मैं कैसे समझा सकता हूँ ? मैं खुद ही कौन-सा समझ पाया हूँ ?

अरविन्द : नहीं समझे ?

सनत् : एक अक्षर भी नहीं।

अरविन्द : यह-यह—अंक भी नहीं समझे ?

सनत् : नहीं।

अरविन्द : कमाल है।

सनत् : क्यों ?

अरविन्द : आप तो साहित्य में आनर्स हैं।

सनत् : आनर्स में ऐसी कविताएँ नहीं पढ़ाते।

अरविन्द : पर वो तो समझ गए ?

सनत् : कौन ?

अरविन्द : लिलि, मौसी जी ?

सनत् : वो भी···(संभलकर), हाँ वो शायद···क्यों, शायद वो जरूर समझ गए होंगे।

अरविन्द : और आप नहीं समझे ?

सनत् : नहीं ! (अरविन्द अचरज में पड़ जाता है। फिर सोचता है)

अरविन्द : पर मैं शायद एक लाइन समझ गया हूँ।

सनत् : कौन-सी लाइन ?

अरविन्द : वही "अगर मैं जानती कि तुम हो।" यह शायद ईश्वर से कहा गया है।

सनत् : कम से कम एक और कविता में ईश्वर से जरूर कहा गया है।

अरविन्द : जी हाँ। अमानिशा देशी की कविता "हनन किया है मेरा।"

सनत् : नहीं, ऐसे भी नहीं कहा गया है।

अरविन्द : क्यों ?

सनत् : वहाँ था एक अभियोग, एक विक्षोभ, एक अन्तर्दाह की ज्वाला।

अरविन्द : क्या कहा आपने ?

सनत् : मैं ठीक से नहीं जानता अरविन्द बाबू, मैंने जो कुछ कालेज में सीखा था लगता है मैं सब भूला जा रहा हूँ। अंग्रेजी के एक शब्द ने मेरा ज्ञान उलट-पुलट कर रख दिया।

अरविन्द : अंग्रेजी शब्द ? कौन-सा अंग्रेजी शब्द ?

सनत् : प्रोबेशन। (बातें करते हुए स्मरजीत तथा लिलि का प्रवेश)

स्मरजीत : कहिए न ?

लिलि : नहीं, आप हँसेंगे।

स्मरजीत : हँसूगा क्यों ?

लिलि : नहीं···मतलब···ऐसा कोइन्सिडेन्स, एक मामूली कवि की एक लाइन हू-ब-हू आपके एक लाइन से मिल गई है।

स्मरजीत : अच्छा ! कौन-भी लाइन ?

अरविन्द : यदि मानती मैं कि तुम हो।

स्मरजीत : आप सो जानते हैं ?

अरविन्द : हाँ, भास्वती के इसी अंक में तो है वह कविता, "हनन किया है मेरा।"

स्मरजीत : वाह ! यह कमाल हो गया। जरा देखें···

लिलि : यहाँ, वैसे उसका दूसरा अर्थ है।

अरविन्द : हाँ, वहाँ एक अभियोग, एक···एक···इत्यादि है।

(लिलि को घूरते देख दुर्बल हँसी हँसता है)

लिलि : आपको शायद बुरा लग रहा है ?

स्मरजीत : बुरा ? क्यों ?

लिलि : एक ऐसी बेकार की कविता के साथ आपकी लाईन मिल गई इसलिए ?

स्मरजीत : नहीं, ऐसी बात तो नहीं है।

लिलि : अच्छा, सच सच बताइये। यह कविता बहुत ही बुरी है, है ना।

स्मरजीत : ऐं ? (पढ़ते हैं)

लिलि : (उत्कक्ंठित) बिल्कुल ही सच्चा सा है न ?

(स्मरजीत तीक्ष्ण दृष्टि से लिलि की उत्कंठा को ताड़ते हैं। दुबारा पढ़ते हैं)

स्मरजीत : इसे कच्चा नहीं कहा जा सकता !

(सनत् अवाक होकर देखता है)

लिलि : नहीं ?

स्मरजीत : नयी हैं अभी भी, पता चलता है। रवीन्द्रनाथ का काफी असर है। पर···संभावनाएँ हैं इनमें।

लिलि : हूँ ?

सनत् : मतलब ?

(मुँह से बात निकल गयी, कहने के साथ ही साथ सनत् चौकन्ना हो उठता है।)

स्मरजीत : (सनत् की आँखों में देखकर) तुम्हें ऐसा नहीं लगता ?

सनत् : हाँ, हाँ, मैं तो कह रहा था उनसे; मतलब···मैं हैरान हूँ कि आप भी···

स्मरजीत : क्यों ? क्या यह जरूरी है कि जो तुम्हारा साहित्य विचार हो मेरा उससे उल्टा ही हो ?

लिलि : क्या आप सचमुच ऐसा ही मानते हैं, सनत् बाबू ?

सनत् : बिल्कुल। पर जब स्मरजीत दा ही कह रहे हैं तो मेरे कहने न कहने से क्या होता है ?

लिलि : नहीं होता ? वाह !

अरविन्द : मैं तो शुरू से ही कह रहा हूँ···"

(लिलि उसे घूर कर देखती है। सुप्रीति का प्रवेश)

सुप्रीति : अब ज़रा सा तकलीफ देंगे आपको स्मरजीत बाबू ! आप का बन्दोवस्त उस कमरे में किया है। कभी कभी इस कमरे में इलेक्शन के ऐसे हंगामे होते हैं···

स्मरजीत : चलिए। अ···मिसेज मजूमदार !

सुप्रीति : जी ?

स्मरजीत : मैं कह रहा था कि यह कविता भास्वती में नहीं छापें।

सुप्रीति : (निराश होकर) न छापें ?

स्मरजीत : मतलब···भास्वती में प्रकाशित एक और कविता के साथ

इसकी एक लाइन मिल गई है।

लिलि : सिर्फ इतनी सी बात पर···

सुप्रीति : स्मरजीत बाबू···

स्मरजीत : नहीं, नहीं, इसके बदले एक और दूंगा मैं···

सुप्रीति : देंगे ?

लिलि : एक और ?

स्मरजीत : जरूर दूंगा। आज रात ही लिख डालूंगा मैं।

सुप्रीति : बहुत अच्छा। (लुब्ध) अच्छा, अगर दोनों ही···

लिलि : आह माँ ! स्मरजीत बाबू, आपके दस्तखत किए कागज तो मैं रख सकती हूँ न ?

स्मरजीत : ऐं ! हाँ···नहीं···क्या ज़रूरत है ? मैं एक और कविता अपने हाथों लिखकर दो जगह दस्तखत कर दूंगा। चलेगा न ?

सुप्रीति : हाँ, हाँ, जैसा आप चाहें। वह कविता कहाँ है ?

सनत् : यह रही···

(स्मरजीत काग़ज़ लेकर जेब में डालते हैं)

सुप्रीति : अब चलिए, स्मरजीत बाबू।

(स्मरजीत एक सेकण्ड कुछ सोचते हैं।)

स्मरजीत : पाँच मिनट और लग जाए तो चलेगा ? सनत् के साथ इतने दिनों बाद मुलाकात हुई, दो चार घरेलू बातें हो जाएँ। अभी तक मौका ही नहीं मिला।

सुप्रीति : हाँ, हाँ, हमें खुद ही सोचना चाहिए था। छिः छिः ! अरविन्द, लिलि तुम मेरे साथ आओ।

(अरविन्द और लिलि भी छिः छिः करते हुए सुप्रीति के पीछे-पीछे जाते हैं। सनत् उछलकर उठ खड़ा होता है, बहुत सारी बातें—एक साथ बाहर आना चाहती हैं।)

सनत् : कानाई दा !

(स्मरजीत को यही डर था। उछलकर सनत् को रोकते हैं और दरवाजे के पास से खींचकर लाते हैं।)

स्मरजीत : चुप, गधे ! चिल्ला क्यों रहा है ?

सनत् : कानाई दा, आप···?

स्मरजीत : कानाई दा कौन—मैं स्मरजीत सान्याल हूँ।

सनत् : मेरे कुछ समझ में नहीं आ रहा है, मैं···

स्मरजीत : मेरे भैया, बगैर समझे भी तूने मुझे बचा लिया। मेरा तो कलेजा उछलकर गले में आ गया था।

सनत् : कानाई दा, यह मामला क्या···?

स्मरजीत : फिर, कानाई दा ? क्या तू चाहता है कि तेरे कानाई दा को मणि मजूमदार के चेले जिन्दा गाड़ दें ?

सनत् : ऐं !

स्मरजीत : मैं बिल्कुल बढ़ा-चढ़ा कर नहीं कह रहा। पता चल गया तो यही करेंगे। यह इलेक्शन है···

सनत् : आप···आप क्या—चिदानन्द ब्रह्मचारी के दल के आदमी हैं ?

स्मरजीत : किसी दल का आदमी नहीं हूँ मैं। मैं तो भैया एक गरीब नौकर आदमी हूँ। अखबार में नौकरी करता हूँ।

सनत् : यह तो मैंने भी सुना है, लेकिन···

स्मरजीत : अखबार चिदानन्द का है, यह भी सुना होगा ?

सनत् : नहीं तो, उसके सम्पादक तो···

स्मरजीत : हाँ भाई हाँ। चिदानन्द है सम्पादक का सम्पादक। इस दुनिया में कौन किसका बाप है, कहना मुश्किल है।

सनत् : पर इसका मतलब यह तो नहीं कि आपको इस तरह शेर की मांद में अकेला···

स्मरजीत : नहीं, उन्होंने मुझे नहीं भेजा है। मैं खुद ही आया हूँ, नहीं तो सारी ज़िन्दगी रिपोर्टर ही बना सड़ता रहूँगा।

सनत् : पर अगर असली स्मरजीत आ जाएँ तो ?

स्मरजीत : आएगा कहाँ से ? इनकी चिट्ठियाँ तो पहुँचने से पहले ही चिदानन्द के लोगों ने हाथ लगा ली हैं।

सनत् : कैसे ?

स्मरजीत : यह मुझे कैसे पता चल सकता है—मेरा डिपार्टमेंट थोड़े ही है। मैंने तो सिर्फ देखा कि अगर कोई हिम्मत का काम नहीं किया तो एसोसिएट एडिटर बनते-बनते बूढ़ा हो जाऊँगा।

सनत् : पर यहाँ करना क्या चाहते हैं आप ?

स्मरजीत : साहित्य सभा।

सनत् : साहित्य सभा ? माने ?

स्मरजीत : अबे गधे ! यहाँ सब देखेंगे कि स्मरजीत सान्याल साहित्य सभा कर गया है। फिर जब जाकर स्मरजीत सान्याल को पता चलेगा तो वह इसका प्रतिवाद जरूर करेगा।

सनत् : तब क्या होगा ?

स्मरजीत : तू इलेक्शन का कुछ नहीं समझता। लोग नहीं कहेंगे कि मणि मजूमदार ने वोट बटोरने के लिए एक आदमी को स्मरजीत सान्याल बनाकर बदमाशी से साहित्य सभा की थी ?

सनत् : और अगर वह समझाकर कहें कि क्या हुआ था···

स्मरजीत : समझाकर ? अरे समझेगा कौन ? चिदानन्द क्या बैठा रहेगा हाथ पर हाथ धरे ? मानने देगा सबको यह ऊट-पटाँग कहानी ?

सनत् : आई-सी !

स्मरजीत : ऊपर से भास्वती में कविता। चिदानन्द खुद पैसे खर्चकर स्मरजीत सान्याल से मुकदमा नहीं करवाएगा ?

सनत् : समझा। लेकिन···कानाई दा···

स्मरजीत : (धमकाकर) स्मरजीत दा।

सनत् : स्मरजीत दा !

स्मरजीत : क्या है ?

सनत् : काश, मैं आपको न पहचानता···

स्मरजीत : क्यों ?

सनत् : मैं यहाँ स्कूल में मास्टरी करता हूं। प्रोबेशन में हूँ।

स्मरजीत : तो क्या हुआ ?

सनत् : मणि मजूमदार हमारे स्कूल के सेक्रेटरी हैं।

(स्मरजीत चौंककर सनत् की ओर देखते हैं)

स्मरजीत : माई गाड ! इसका मतलब है···ज्यों इन्हें पता चलेगा कि तूने जानबूझकर कुछ नहीं कहा, तेरी नौकरी···(बाकी मुँह में बात नहीं ला सके। नौकरी का मतलब दोनों ही समझते हैं। एक मुहूर्त नीरवता) रहने दे, अभी इन बातों के लिए वक्त नहीं है। तू है कब तक इस मकान में ?

सनत् : आज रात यहीं रहूँगा।

स्मरजीत : क्यों ?

सनत् : रात बारह बजे कोई काम दिया जाएगा।

स्मरजीत : किस कमरे में ?

सनत् : काम शायद इसी कमरे में है, या आफिस रूम में होगा। सोऊँगा कहाँ, पता नहीं।

स्मरजीत : जहाँ तक हो सके, इसी कमरे में रहना। मैं जैसे भी हो सकेगा, तुझसे मुलाकात करूँगा।

सनत् : कैसे ? ये घेरे रहेंगे आपको···

स्मरजीत : वह मैं देख लूंगा। अभी तो चल।

(दो कदम आगे बढ़ते हैं)

अबे, इस तरह उल्लू सी शक्ल मत बना। दोनों मर जाएँगे। हँस तो ज़रा—

(सनत् हँसने की कोशिश करता है।)

ऐसे नहीं, ज़ोर से।

(खुद ही उच्च स्वर से हँस उठे। सनत् भी कोशिश करता है। स्मरजीत सनत् के कंधे पर एक हाथ मारकर जोर से)

वाह-वाह सनत्, बड़ी खुशी हुई सुनकर, बड़ी खुशी हुई।

(कहते-कहते दोनों का प्रस्थान)

तृतीय दृश्य

(रात ग्यारह बजे है। स्मरजीत, लिलि, सुप्रीति, मणिभूषण, सनत्, अरविन्द सब बैठे हैं। स्मरजीत के किसी मज़ाक पर सब हँस उठते हैं, पर्दा उठता है। मज़ाक साहित्यिक नहीं है, क्योंकि अरविन्द भी हँस रहा है। सनत् अब पहले से खुल गया है। लगता है सनत् ने सबको ही जीत लिया है।)

सुप्रीति : (हँसते-हँसते आँख पोंछकर) ओफ ! बाप रे······आप तो···

स्मरजीत : एक बार दिल्ली में मुझे फ्रेन्च शराफत का एक नमूना मिला था।

सुप्रीति : कैसे-कैसे—

लिलि : बताइये न···

स्मरजीत : अशोका होटल में ठहरा था। पहले ही दिन बैरे के एक टेबिल पर बैठा देखा तो एक फ्रेंच साहब बैठे थे। जाते ही उठ खड़े हुए, हाथ मिलाकर बोले, "बं आपेति।" मैंने भी अपना परिचय दिया—स्मरजीत सान्याल। खाना आते तक फिर कोई बात नहीं हुई। वह अंग्रेजी नहीं समझते और मैं फ्रेंच में वैसा ही पंडित। डिनर में फिर वही, हैंडशेक और 'बं-आपेति।' मैं परेशान, भई, कितनी बार अपना परिचय दूं ? खैर, स्मरजीत सान्याल कहकर खाने बैठा। अगले

दिन फिर लंच में वही हुआ। अब मुझसे नहीं रहा गया। खाना खाकर मैनेजर से पूछा कि यह मामला क्या है? दिमाग खराब तो नहीं है इसका? मैनेजर तो हँसते-हँसते लोटपोट हो गया। उसे सारे देशों की बोली सुननी पड़ती है, जानता था। 'बं-आपेति' माने गुड एपेटाईट, मतलब आपको ठीक से भूख लगे, तृप्ति से भोजन हो—ऐसी शुभेच्छा। (हँसी शुरू हो जाती है) ठहरिए, अभी खत्म नहीं हुआ। बेवकूफ बन गया था—अब उसे पूरा करना था। डिनर में फिर जो मिला, मैंने चुस्त फ्रेन्च में कहा—'बं आपेति।' सुनते ही उसका चेहरा दमक उठा। मेरे हाथ को पकड़कर जोर से हिलाते-हिलाते, हमारी भाषा में मुझे शुभेच्छा की—"स्वँर जीत् स्यानियाल" (उच्च हंसी। हँसी कम होते ही स्मरजीत फिर शुरू हो गये) फ्रेन्च के के मैनर्स, और अंग्रेज़ों की सभ्यता। अफ्रिका के अंग्रेज मिशनरी की कहानी सुनी है?

मणि, लिलि सुप्रीती : नहीं, नहीं, आप बताइये।

स्मरजीत : एक मिशनरी अफ्रीका के जंगल से अपने बड़े पादरी को रिपोर्ट भेजते थे। लिखा—यहाँ के आदमखोरों को मैंने काफी सभ्य बना दिया है। बड़े पादरी ने जवाब भेजा—"मैंने तो सुना है कि अब भी वे आदमी मार कर खाते हैं।" अंग्रेज पादरी ने जवाब भेजा—"जनाब, खाते तो हैं, पर अब छुरी-काँटे से खाते हैं।"

(फिर हँसी सबकी)

लिलि : (हँसी घटने पर) आपकी रचना पढ़कर कभी ऐसा नहीं लगता कि आप ऐसी मजेदार कहानियाँ भी जानते होंगे।

मणि : हाँ, मुझे भी कभी आपका लिखा पढ़कर ऐसा नहीं लगा

कि आप ऐसे—ओह, काँटे-छुरी से खाते हैं, याने कि सभ्य हो गये।

(अरविन्द एकाएक घड़ी देखकर चौंक उठता है)

अरविन्द : ग्यारह दस! मैं चलता हूँ। घर में सब सोच रहे होंगे।

सुप्रीति : कल आ रहे हो न?

अरविन्द : जरूर, सुबह ही आ जाऊँगा। नमस्कार स्मरजीत बाबू! अच्छा, सनत् बाबू!

(अरविन्द का प्रस्थान)

स्मरजीत : अरे, ग्यारह दस हो गये।

लिलि : तो क्या हो गया!

मणि : शायद इन्हें जल्दी सो जाने की आदत हो।

सुप्रीति : क्यों स्मरजीत बाबू?

स्मरजीत : नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं, पर आपको तो भास्वती के लिए एक कविता चाहिए?

सुप्रीति : (उत्कंठित) आपने तो कहा···

स्मरजीत : तो फिर मुझे ज़रा सा समय देना होगा।

सुप्रीति : हाँ-हाँ! चलिए आपको आपका कमरा दिखा आऊँ।

(सभी उठते हैं। स्मरजीत की आंखें गुलदस्ते पर अटक जाती हैं। कदम-कदम आगे बढ़ते हैं उस तरफ)

क्या हुआ?

स्मरजी : (पलट कर) ऊँ?

(उनकी आँखें स्वप्नाविष्ट हैं। जैसे एक झटके से वास्तव में लौट आए हों)

एँ, क्या कहा?

सुप्रीति : (डरते-डरते) कविता लिखेंगे कह रहे थे, तो मैंने कहा जरा आपका कमरा दिखा दूं···

स्मरजीत : (सिहरकर) कमरा ! जिस कमरे में मैं सोऊँगा ?

सुप्रीति : (और भी घबराकर) हाँ, क्यों ?

स्मरजीत : असंभव । सोने के कमरे में मैं कभी नहीं लिखूँगा ।

सुप्रीति : तो फिर ?

(तब तक स्मरजीत जाकर गुलदस्ते पर हाथ फेरने लगते हैं)

स्मरजीत : गुलदस्ता । गुलदस्ता । (सहसा पलट कर) मणि बाबू, इस कमरे में आपको कोई काम है आज रात ?

सुप्रीति : नहीं, नहीं, कोई काम नहीं है···

मणि : नहीं, हाँ—जरा-सा···

सुप्रीति : क्या काम पड़ गया इतनी रात गये ।

मणि : मोहन आएगा कोई बारह बजे । बहुत जरूरी एक···

स्मरजीत : बारह बजे ! बारह से पहले ही मैं कमरा छोड़ दूंगा । आध घंटा सिर्फ आध घंटा छोड़ दीजिए मेरे लिए यह कमरा··· मुझे अफसोस है, पर यह गुलदस्ता···गुल···द···स्ता··· (स्मरजीत आविष्ट हो गये, सुप्रीति ने सबको बाहर कर दिया ।)

सुप्रीति : चलो, चलो, लिलि चल, सनत् बाबू···

स्मरजीत : (बिना पलटे) सनत् को रहने दे ।

सुप्रीति : एँ ?

स्मरमीत : सनत् की जरूरत है । सनत् एक कागज ले लो । प्लीज़ आप जरा ध्यान रखें···आध घंटे के अन्दर कोई आ गया तो फिर···

सुप्रीति : नहीं, कोई नहीं आएगा···

(मणि और लिलि अंदर गये, सुप्रीति पीछे पीछे । स्मरजीत सहसा सनत् की ओर पलटकर गरज उठे)

स्मरजीत : गुलदस्ता !

(सुप्रीति जो भी जरा देर लगा रही थी, अब छिटक कर बाहर निकल गई। स्मरजीत ने एक सेकण्ड यही भंगिमा बनाए रखी।)

चलो, आध घंटे के लिए शांति हुई। पर बहुत काम है। पहले कविता से निपट लें।

सनत् : आप क्या वाकई में कविता लिखने लगे हैं? मुझे नहीं मालूम था।

स्मरजीत : कविता? कविता मेरे बाप ने कभी नहीं लिखी।

सनत : वह तो बहुत से कवियों के बाप ने नहीं लिखी।

स्मरजीत : तूने तो स्मरजीत सान्याल की कवितायें पढ़ी होंगी?

सनत् : बहुत सी पढ़ी हैं।

स्मरजीत : मुझे जल्दबाजी में सिर्फ एक कविता की किताब मिली थी, वही ट्रेन में पढ़ता हुआ आया।

सनत् : सिर्फ एक? और उपन्यास?

स्मरजीत : एक भी नहीं पढ़ा।

सनत् : तो फिर यह विदिशा की आत्महत्या कैसे बता दी?

स्मरजीत : बताया किसने? बोली तो लिलि ही। कौन विदिशा, कौन शान्तनु, मुझे क्या पता?

सनत् : हिम्मत है आपमें कानाई दा, सिर्फ एक किताब के सहारे···

स्मरजीत : और कितनी किताबें लगती हैं? देखो न, इन्होंने तो स्मरजीत सान्याल को घोलकर पिया हुआ है। पर अभी जो माल छोड़ा मैंने, कोई न कर सका?

सनत् : ना कैसे करे कोई? बिल्कुल स्मरजीत ब्रान्ड। अच्छा इतनी सारी उटपटाँग बातें इतनी जल्दी कैसे निकाल लीं आपने—आपकी कल्पना शक्ति माननी पड़ेगी।

स्मरजीत : अरे धत्! कल्पना से कहीं काम चलता है और वह भी मेरी कल्पना।

सनत् : तो फिर कहाँ से ये लाए?

स्मरजीत : छपा है भैया, सब छपा है। भास्वती में ही छपा है। ले पकड़।

(कविता निकालकर सनत् को देते हैं, खुद भास्वती उठा लेते हैं) पढ़े चल।

सनत् : कोमल त्वचा······

स्मरजीत : पहला पन्ना—साबुन का विज्ञापन। आगे ?

सनत् : पसंद—वह तो है अलंकार······

स्मरजीत : मनपसंद अलंकार—नन्दी ज्वैलर्स प्राईवेट लिमिटेड।

सनत् : विशुद्ध—

स्मरजीत : घी।

सनत् : पता लगाएं—

स्मरजीत : पता लगाएँ···तिरपन नम्बर इत्यादि। विज्ञापन चल रहा है।

सनत् : सम्पादना···

स्मरजीत : सुप्रीति मजूमदार।

सनत : ऐं !

स्मरजीत : ऐं क्या ? भास्वती की सम्पादना—पहले पन्ने पर आ गया हूँ।

सनत् : प्रीति और शुभच्छा—

स्मरजीत : सम्पादकीय का अंत।

सनत् : बैंगनी रश्मि का विकीकरण, न्युट्रोन, इलेक्ट्रोन, दुः-संवाद—

स्मरजीत : इलेक्ट्रोन तक प्रबंध से—बीसवीं सदी का पदार्थ विज्ञान। 'दुःसंवाद' अगली कहानी का नाम।

सनत् : सुजाता फिर भी चुप है, आधी रात···

स्मरजीत : कहानी चल रही है।

सनत् : अगर मैं जानती तुम हो···

स्मरजीत : यह। बस यहीं मार खा गया मैं। नहीं तो यही माल

चल जाता। तब मुझे क्या मालूम था कि अमानिशा देवी सम्पादिका की कन्या हैं ?

सनत् : एँ !

स्मरजीत : एँ क्या बे ? यह लिलि का लिखा हुआ है, यह तो उसकी दो बातों से ही पता चल जाता है। तू नहीं समझा था ?

सनत् : (सोचकर) हाँ, हाँ, ठीक। समझना चाहिए था। जबसे इस घर में पैर रखा है, दिमाग ही नहीं चल रहा।

स्मरजीत : नहीं तो क्या मैं यूँ ही इस बेकार सी कविता की तारीफ के पुल बाँध रहा था ? कविता लिखना नहीं जानता तो क्या समझता भी नहीं ! कुछ भी हो जर्नलिस्ट तो हूँ।

सनत् : मैं खूब बच गया।

स्मरजीत : कैसे ?

सनत् : मुझसे भी जिरह कर रही थी। मैं बिना समझे ही अच्छा-अच्छा कर गया।

स्मरजीत : बहुत अच्छा किया। यह हमेशा याद रखना, लड़कियों की कविता को कभी खराब न कहना। इससे उनका पकाया हुआ खराब कहना कम खतरनाक है। हाँ फिर, कुछ और है ?

सनत् : हाँ, दो लाईनें हैं। "पर आज···"

स्मरजीत : उपन्यास, कविता के बाद···

सनत् : आगामी अंक की समापिका। इस लाईन पर काफी हंगामा हो गया।

स्मरजीत : वही उपन्यास।

सनत् : वह कैसे ? ऐसी लाईन तो···?

स्मरजीत : अबे धत् ! सीरीयल है न—आगामी अंक में समाप्त ?

सनत् : आप जीनियस हैं।

स्मरजीत : मुसीबत आने पर सभी जीनियस बन जाते हैं। बात न चीत—कविता सुनाओ। यह पत्रिका पास न होती तो मैं

तो मर गया होता। पर अब दूसरी नई कविता कहां से लाऊँ ?

सनत् : क्यों भास्वती !

स्मरजीत : धत्। पकड़ा जाऊँगा। मैं तब क्या जानता था कि तू लिख रहा है और इनका इरादा भास्वती में छापने का है ?

सनत् : तो फिर क्या लेंगे ? यहाँ तो सब वोटर्स लिस्ट हैं (टेबल पर ढूँढ़ता है।)

स्मरजीत : वोटर्स लिस्ट ? ज़रा दिखा तो।

राधानाथ तालुकदार,
नम्बर बत्तीस,
बाबूबगान रोड—

नहीं। सिर्फ नाम, पते पर नहीं चल सकता। पहली लाईन तो लिख ही डाल, उसे तो रखना ही होगा।

सनत् : कौन सी लाईन ?

स्मरजीत : गुलदस्ता रे गधे ! जिस बात पर सबको यहाँ से हटाया। गुलदस्ता ! (चारों तरफ देखता है) टेबिल। कुर्सी। दरवाजे पर पर्दा। ना, ऐसे नहीं होगा। देख तो सही, तेरे जेब में कुछ हैं ?

सनत् : (जेब टटोलकर) जेब में क्या होगा ?

स्मरजीत : अरे अरे यह क्या है ?

सनत् : कौन सी ? यह तो एक चिट्ठी है···

स्मरजीत : प्राइवेट तो नहीं है ?

सनत् : माँ की चिट्ठी है।

स्मरजीत : दे तो। गुलदस्ता तो लिखा है न ?

सनत् : हाँ, गुलदस्ता, टेबिल, कुर्सी,

स्मरजीत : नहीं, नहीं, काट दे उसे। सिर्फ गुलदस्ता रहने दे। गुलदस्ता ! ! "बेटा सनत्, बहुत दिनों से तुम्हारी कोई खबर

नहीं मिली।" लिख, बहुत दिनों तुम्हारी खबर। "पत्र मिलते ही अपना कुशल समाचार भेजकर मुझे चिन्ता से मुक्त करना।" चिन्ता मुक्त। "घर में यहाँ सब फिक्र करते रहते हैं।" 'घर में। "चिट्ठी क्यों नहीं लिखते ? 'क्यों। अबे ! तू माँ को चिट्ठी क्यों नहीं लिखता ?

सनत् : आप कविता तो लिखिए ?

स्मरजीत : "तुम्हारी नौकरी पक्की होने में अब और कितनी देर है।" लिख, 'अब और कितनी देर।" "हम सभी इन्तजार में हैं।" "इन्तजार" "इन्तजार में हैं कि तुम्हारे यहाँ जाकर रह सकेंगे—" यह क्या है··· सू···सू···

सनत् : सूनू, मेरी छोटी बहन।

स्मरजीत : हाँ, हाँ सूनू। "सूनू की शादी किये बिना अब तो गांव में टिकना मुश्किल हो गया है" —किये बिना। "बाघबन्दी बड़ा शहर है"—बंदी"—"बड़ा शहर है, वहाँ शायद इतना कष्ट भोग न करना पड़े" कष्ट भोग। "धीरे-धीरे पता लगाते रहना अगर कोई अच्छा सा संबंध मिले तो—" अरे, ए !

सनत् : क्या ?

स्मरजीत : मैं तो तेरे पारिवारिक मामलों में घुसा जा रहा हूँ। चिट्ठी पढ़ूँ आगे ?

सनत् : आप पढ़िए। ऐसे पारिवारिक मामले तो हर घर में ही हैं।

(स्मरजीत एक मुहूर्त्त देखते रहते हैं। फिर पढ़ना शुरू करते हैं।)

स्मरजीत : लिख—धीरे-धीरे। सम्बन्ध ! "यहाँ अब कहाँ ढूंढ़े ?" यहाँ अब कहाँ। "मुन्ने (खोका) के परीक्षा का फल अबके—" परीक्षा फल— "परीक्षा का फल अबके बहुत ही बुरा हुआ है। शासन भी नहीं मानता।" शासन। "इसलिए जाने के लिए और भी बेसब्र हो रही हूँ।"

बेसब्र। "नौकरी पक्की होने पर क्या कोई मकान मिल सकता है ?" मकान। "हम सब यहाँ ठीकठाक हैं। मेरे गठिया का दर्द इन दिनों जरा बढ़ गया था।" दर्द। "अभी काफी अच्छी हूँ।" काफी !! "उस दिन कराली मामा यहाँ आए थे," कराली—नहीं लिख—कराल। "संध्या तक थे"—संध्या ! "बहुत सी बातें हुई।" बहुत। नहीं नहीं, काट दे, 'बहुत' पहले आ चुका है। "रात नहीं रह सके" रात ! "घर में बीमारी थी, चले जाना पड़ा" चले जाना पड़ा ! लिख रहा है न ?

सनत् : हाँ।

स्मरजीत : "सूनू की बड़ी इच्छा है कि आगे पढ़े"—इच्छा। "यहाँ तो असंभव है।" यहाँ असंभव। "वहाँ जाने पर फिर भी कुछ हो सकता है।" फिर भी। "मुन्ने का अगर पढ़ाई में मन होता"—मन !—"तो भी बच जाते" बचना। चिट्ठी तो खत्म होने को आ गई है। कितना हुआ दिखा जरा। (सनत् कागज दिखाता है) हो जाएगा। ठहर जरा —"और क्या लिखें"—और क्या। "तुम्हारी चिट्ठी की आशा हर रोज लगी रहती है।" आशा, हर रोज। "शरीर का ध्यान रखना"—। तो अब पढ़, क्या लिखा है तूने।

सनत् : (सपाट पढ़ जाता है) गुलदस्ता, बहुत दिनों तुम्हारी खबर, चिन्तामुक्त, घर में, क्यों, अब और कितनी देर, इन्तजार, किए बिना, बंदी, कष्टभोग, धीरे-धीरे सम्बन्ध —कुछ बात नहीं बनी जी ?

स्मरजीत : तुझे कविता पढ़ना ही नहीं आता, तो बात कैसे बने ? ला मुझे दे।

(कागज में कुछ रद्दोबदल करके पढ़ता है)

गुलदस्ता,

बहुत दिनों तुम्हारी खबर
चिन्तमुक्त घर में।
क्यों !
अब और कितनी देर ?
इन्तजार, किए बिना,
धीरे-धीरे सम्बन्ध यहाँ,
अब कहाँ ?
परीक्षा फल ?
शासन से बेसब्र।
गुलदस्ता
मकान, दर्द काफी,
कराल संध्या,
रात,
चले जाना पड़ता है।
इच्छा यहाँ असंभव।
फिर भी,
मन बचता है।
और क्या ?
आशा हर रोज
गुलदस्ता ।।

क्यों कैसा रहा ?

सनत् : हाँ, अब बिल्कुल स्मरजीत सान्याल बन गया।

स्मरजीत : देखा ! पंचुयेशन ही असली बात है। पर एक कसर रह गई।

सनत् : कैसी ?

स्मरजीत : तुम्हारी माँ अंग्रेजी नहीं जानती शायद ?

सनत् : नहीं तो।

स्मरजीत : लीजेन्ड्स आफ ग्रीस ऐण्ड रोम भी नहीं पढ़ीं होंगी उन्होंने।

सनत् : नहीं तो, कैसे पढ़ेगी बेचारी ?

स्मरजीत : कहीं-कहीं डायाना, आफ्रोदिते, हरक्युलिस वगैरह और बिखेर देते तो जम जाता।

सनत् : तो बिखेर दीजिए न ?

स्मरजीत : नहीं, रहने ही दे। माँ को स्मरण कर यह काम शुरू किया था, अब विदेशी देवता न ही लाएँ तो अच्छा है। ला, एक कागज़ दे, ज़रा इसे लिख डालें।

(कागज़ लेकर स्मरजीत लिखने बैठते हैं।)

सनत् : अभी बजा क्या है ?

स्मरजीत : बड़ा वक्त है, घबरा मत।

सनत् : नहीं, घबड़ाता कौन है ? पर आपने कुछ सोचा है ?

स्मरजीत : बिल्कुल सोचा है।

सनत् : सच।

स्मरजीत : नहीं तो क्या सिर्फ बकवास ही किए जा रहा हूँ ?

सनत् : क्या सोचा ?

स्मरजीत : चिदानन्द ब्रह्मचारी शरणम्।

सनत् : चिदानन्द ब्रह्मचारी ?

स्मरजीत : ज़रा ठहर जा। अभी बताता हूँ। कहीं लिखने में गड़बड़ हो गई तो कविता का अर्थ ही बदल जाएगा। धीरे-धीरे सम्बन्ध यहाँ, अब कहाँ।

सनत् : (हँसकर) परीक्षा फल। शासन से बेसब्र।

स्मरजीत : अरे वाह। तूने तो रट ही लिया।

सनत् : रटकर ही तो सारे इम्तहान झेल गया मैं।

स्मरजीत : —बेसब्र—

सनत् : कुछ याद ही नहीं रहता। दो दिन बाद सब साफ हो जाता है।

स्मरजीत : मेरे साथ भी ऐसा ही है—मकान-दर्द काफी कराल संध्या।

सनत् : आपके इस चिदानन्द ब्रह्मचारी का नाम कहीं और भी

सुना है, पर याद ही नहीं आ रहा।

स्मरजीत : धत् ! यहीं अखबार या पोस्टर में देख लिया होगा तूने।

सनत् : नहीं-नहीं बहुत पहले कहीं—पढ़ा है या सुना है···

स्मरजीत : आनन्दमठ में पढ़ा होगा।···चले जाना पड़ता है।

सनत् : उँ हूँ ! आनन्दमठ में तो कोई चिदानन्द नहीं है।

स्मरजीत : —इच्छा यहाँ असंभव।

सनत् : चिदानन्द ब्रह्मचारी। चिदानन्द ब्रह्मचारी। कहाँ सुना है···

स्मरजीत : तुझे ईल्युशन हो गया है। कुछ दिन बाद तुझे लगेगा शायद पिछले जनम में सुना था। इसे कहते हैं माडर्न पब्लिसिटी।

सनत् : हो सकता है। पर···

स्मरजीत : आशा हर रोज़।

सनत् : ऐं ? (हँसकर) ओ हाँ, आशा हर रोज, गुलदस्ता।

स्मरजीत : स्म···र···जी···त···सान्याल। खतम नहीं, दो दस्तखत चाहिएँ। ले, एक ऊपर भी कर दिया। क्यों, कैसे मार रहा हूँ, दस्तखत।

सनत् : कमाल। जैसी कविता वैसे दस्तखत। समझ ही नहीं आते।

स्मरजीत : (गर्व के साथ) देखा ?

सनत् : पर आपने ठीक क्या किया मेरा ?

स्मरजीत : तेरी नौकरी जाती है तो जाने दे।

सनत् : ऐं ?

स्मरजीत : तुझे मैं नौकरी दिलाऊँगा।

सनत् : आप ?

स्मरजीत : तुझे फरमायशी लिखना आता है ? या फिर सिर्फ 'सूक्ष्म साहित्य, ही करते हो ?

सनत् : वाह ! आज ही दो लीफलेट लिख मारे हैं मैंने। तिल को

ताड़ बनाकर छोड़ा है···फार्स्ट ड्राफ्ट ही प्रेस में चला गया।

स्मरजीत : फिर तो बात ही खत्म हो गई। अपनी नौकरी तुझे दिला दूंगा।

सनत् : आपकी नौकरी ?

स्मरजीत : यह काम कल खत्म हो जाए तो परसों मैं एसोसिएटेड एडिटर बन जाऊंगा। पक्का काम करता हूँ मैं। तू रिपोर्टर बन जाना।

सनत् : बन कैसे जाऊँ, मुझे लेगा कौन ?

स्मरजीत : लेगा कैसे नहीं ? परसों से मैं जो कहूँगा—चिदानन्द वही करेगा। मेरे जैसा रिस्क और कौन लेगा उसके लिए ?

सनत् : आप ठीक तो कह रहे हैं न ?

स्मरजीत : अबे बुद्धू ! उन्हें क्या नुकसान है ? तू साहित्य में आनर्स है। और फिर ऐसी कौन सी बड़ी भारी नौकरी है ? तेरी मास्टरी से मुश्किल से पचास रुपये ज्यादा मिलेंगे।

सनत् : पचास रुपये !

स्मरजीत : मुझसे जितना हो सकेगा ज्यादा करवाने की कोशिश करूंगा।

सनत् : कानाई दा !

स्मरजीत : फिर ? अबे मरवायगा तू मुझे।

सनत् : स्मरजीत दा ! मैं···मैं आपको कैसे···

स्मरजीत : ठहर, अभी पुरा एक दिन बाकी है। पहले इसे ठीक-ठाक पार कर लेने तो दे।

(बाहर मोटर रुकने की आवाज। फिर हार्न की आवाज। स्मरजीत झटके से फालतू कागज जेब में घुसेड़ लेते हैं।)

स्मरजीत : जल्दी से यह फूलदान हाथ में लेकर बैठ जा।

सनत् : फूलदान ?

मोहन : (नेपथ्य से) मणि बाबू !

स्मरजीत : आह ! जो कह रहा हूँ, कर।

(स्मरजीत कविता वाले कागज को लेकर टेबिल पर बैठते हैं। जैसे अभी साहित्य सृष्टि सम्पूर्ण कर क्लान्त हो गये हों । अर्धनिमीलित नेत्र सनत् के हाथ के गुलदस्ते पर निबद्ध है) (दबी आवाज में)

ज़रा और ऊपर उठा। किसी की बात का जवाब नहीं देना, समझा ?

(नेपथ्य से मोहन पुकारे जा रहा है। अंदर से सुप्रीति और मणि मजूमदार की आवाज। मणि बाबू की आवाज़ ज्यादा साफ है।)

सुप्रीति : नहीं-नहीं ।

मणि : अरे मैं नहीं गया तो मोहन थोड़े ही रुकेगा। मैं चुपचाप चला जाऊँगा, बिल्कुल दबे पांव ।

(मणि दबे पाँव पार हो जाते हैं। सुप्रीति और लिलि सहमे से पर्दा उठा कर देख रही हैं। स्मरजीत जैसे सहसा नींद से उठे हों।)

स्मरजीत : कौन ?

सुप्रीति : (पीछे हटते हुए) कुछ नहीं, कुछ नहीं।

स्मरजीत : आइये आप।

सुप्रीति : आऊँ ?

स्मरजीत : (क्लांत) हाँ, हो गया है ।

(कागज उठाते हैं। सुप्रीति और लिलि फूलदान हाथ में लिए सनत् को देखती हैं, फिर आगे बढ़ती हैं। एक प्रचण्ड दीर्घश्वास)

फूलदान !

(सुप्रीति और लिलि चौंक उठती हैं। स्मरजीत

शायद कागज़ पर कविता का नाम लिखते हैं।
फिर, कागज़ को सुप्रीति की ओर बढ़ा देते हैं।
फिर सनत् की ओर देखते हैं जैसे पहली बार देख
रहे हों।)

कौन ? ओह, सनत् ! हो गया भाई, अब रख दो।

(सनत् उठकर फूलदान रखता है। मणि, मोहन
के साथ दबे पाँव प्रवेश करते है और आफिस की
तरफ बढ़ते हैं। स्मरजीत चौंककर उधर देखते हैं)

कौन, ओ, मणि बाबू ! आइए, हो गया।

मणि : (खुश होकर) हो गया ?

स्मरजीत : जी। एक गिलास पानी···

सुप्रीति : लिलि···

(लिलि सुनते ही दौड़ी। मोहन मुंह बाए देख रहा
था, मणि उसे आफिस ले गये। स्मरजीत जैसे
(धीरे-धीरे सभ्य जगत में लौट रहे हों।

स्मरजीत : मैंने आप लोगों को तकलीफ दी।

सुप्रीति : यह आप क्या कह रहे हैं ? आज बल्कि हमें कुछ पता चला
कि ऐसी कविताएँ यूँ ही नहीं बन जातीं।

स्मरजीत : यह कविता चलेगी न आपके भास्वती के लिए ?

सुप्रीति : चलेगी ? भास्वती धन्य हो गई आपकी कविता को पाकर
लाजवाब है यह कविता आपकी। शायद यह आपकी दूसरी
सब कविताओं को छोड़कर आगे निकल जाएगी। (लिलि
पानी लाती है) देखा लिलि ?

(लिलि कविता निगल रही है, स्मरजीत पानी)

स्मरजीत : पहले जो कविता सुनाई थी, उससे इसमें सृष्टि की वेदना
मुझे अधिक मिली। यह शायद उससे अच्छी हुई हो।
आपका क्या ख्याल है ?

लिलि : एक अद्भुत कविता बनी है यह। कैसे लिख लेते हैं आप

ऐसा ?

स्मरजीत : इसमें मेरा कोई गुण नहीं है। यह आपका गुलदस्ता···

(लिलि और सुप्रीति फूलदान को नई नज़रों से देखते हैं)

सुप्रीति : स्मरजीत बाबू, अगर आपकी इस कविता की सृष्टि का इतिहास हम भास्वती में छापें तो आप ना तो नहीं करेंगे ?

स्मरजीत : ऐं ? हाँ, अगर आप चाहें तो छाप लें। (तन्द्राच्छन्न) मुझे···मुझे बड़ी नींद आ रही है।

सुप्रीति : (व्यस्त होकर) जी, चलिए, चलिए।

(सुप्रीति के साथ स्मरजीत का प्रस्थान)

लिलि : सनत् बाबू, क्या क्या हुआ मुझे बताइए सब।

सनत् : ऐं। क्या हुआ ?

लिलि : हाँ, हाँ कहिए ?

सनत् : आप सब चले गये···

लिलि : फिर ?

सनत् : वो दुबारा बोले, गुलदस्ता।

लिलि : फिर ?

सनत् : फिर ? फिर एकदम से मेरे पास आए और मुझसे कागज़ छीन कर फेंक दिया।

लिलि : फेंक दिया ?

सनत् : हाँ। फिर कागज़ लेकर वहाँ जा बैठे।

लिलि : फिर ?

सनत् : दस मिनट तक चुप बैठे रहे। फिर एकदम चिल्ला पड़े— गुलदस्ता ? कहाँ गया गुलदस्ता ?

लिलि : फिर, फिर क्या हुआ ?

सनत् : अब मैं फौरन गुलदस्ता उठाकर यहाँ बैठ गया और वो गुलदस्ते की तरफ देखते हुए एक के बाद एक लाईन लिखते

चले गये।

(मणिभूषण अंदर झाँकते हैं। समरजीत को देखकर तसल्ली से अंदर आते हैं, पीछे-पीछेमोहन)

मणि : समरजीत बाबू कहाँ गये ?

लिलि : वो सोने चले गये।

मणि : सोने गये ? सनत् तो फिर अब···लिलि तू जा।

लिलि : कल फिर आपसे ठीक से सुनूँगी मैं, सनत् बाबू !

मोहन : (दाँत निपोरकर) नमस्कार।

लिलि : नमस्कार···(प्रस्थान)

मणि : सुनो सनत्। एक लाजवाब स्कूप मिला है।

मोहन : बड़ी मुश्किल से मिला, सर। देना ही नहीं चाहता था।

मणि ; और हाँ मोहन, तुमने बड़ी मेहनत की है। तुम्हें अब नहीं रोकूँगा···

मोहन : हाँ सर, अब मैं बतलाता हूँ, एक बात थी सर···

मणि : क्या ?

मोहन : पचास से कम में नहीं माना सर ! इतने पैसे तो थे नहीं साथ, मामाजी से उधार लेकर···

मणि : कल सुबह ले जाना।

मोहन : (खुश होकर) ठीक है सर ! चलूँ मैं (फिर पलट कर) फिर भी सस्ता ही पड़ा सर, क्यों ?

मणि : हाँ, हाँ, अच्छा तो···

मोहन : चलूँ सर, नमस्कार। (प्रस्थान)

मणि : बैठो सनत्। (दोनों बैठते हैं। मणि सावधानी से लिफाफे में से एक फोटो निकाल कर सनत् को देते हैं।) इस फोटो को ज़रा ध्यान से देखो। क्या दिखता है ?

सनत् : एक लड़का है और एक लड़की है।

मणि : और ध्यान से देखो। क्या कर रहे हैं ?

सनत् : बैठे हैं।

मणि : कैसे बैठे हैं ?

सनत् : ऐं ?

मणि : हाथों को देखो।

सनत् : हाथ पकड़े हैं।

मणि : ठीक। और क्या देख रहे हो ?

सनत् : और तो कुछ···

मणि : वाह ! अरे लड़का किस तरफ देख रहा है ?

सनत् : लड़की की तरफ।

मणि : और लड़की ?

सनत् : जी, लड़के की तरफ।

मणि : हां, अब तस्वीर को पलटकर देखो। क्या लिखा है ? देखा ? अब इन्हें देखो।

(कुछ चिट्ठियाँ देते हैं। सनत् एक की दो लाईन पढ़कर उनकी तरफ देखता है।)

सनत् : पढ़ूँ ?

मणि : जरूर पढ़ो। तुम नहीं पढ़ोगे तो कौन पढ़ेगा ?

सनत् : पर ये तो,ये तो···

मणि : प्रेमपत्र हैं। ठीक समझा है तुमने। किसने लिखे हैं जानते हो ?

सनत् : चिदानन्द ?

मणि : (दु:खित स्वर से) नहीं। उस कम्बख्त ने अपना चरित्र सीधा ही रखा था।

सनत् : तो ?

मणि : सदानन्द ब्रह्मचारी। चिदानन्द का भाई। उनकी पार्टी के वीरभूम कमिटी का चेयरमैन भी है। अगले हफ्ते आ रहा है चिदानन्द की मीटिंग करने।

सनत् : पर आपको ये···ये···

मणि : कहाँ से मिले, ऐं ?

सनत् : नहीं, नहीं, कोई कान्फिडेन्सिल बात हो तो...

मणि : नहीं, तुमसे क्या छुपाएँ ? सदानन्द विष्णु नगर में पढ़ता था। यह लड़की उस वक्त होस्टल में रहती थी। इस लड़की के कमरे में यह फोटो और चिट्ठियां मिली थीं। लड़की के घर वालों का शायद कुछ इन्फ्लूएन्स था। सुपरिटेंडेंट ने इन्हें जब्त करने के बाद मामला दबा दिया था। उसी सुपरिन्टेंडेंट के नाती को पैसे खिलाकर निकलवा लिए उससे, मोहन को भेजकर।

सनत् : पर आपको पता कैसे चला ?

मणि : हूँ, हूँ, सब पता रखना होता है। इलेक्शन क्या यूं ही हो जाता है ? खबर निकालकर मैंने मोहन को भेज दिया। जाने दो इस बात को...समय कम है, तुम शुरू हो जाओ। फड़कता हुआ एक लीफलेट लिख डालो। बड़ा हो जाए तो परवाह नहीं। तस्वीर छापेंगे। और चिट्ठियों से कुछ खास हिस्से चुन दो, उनके फैसिमिल छापेंगे। कितनी देर लगेगी ?

सनत् : कब तक चाहिए आपको ?

मणि : जितनी जल्दी हो सके। प्रेस में आदमी रोके हुए हैं...शाम को तभी तो गया था। छापकर कल सुबह निकाल देंगे। अब तुम पर है...

सनत् : कोई घंटा भर लगे तो ?

मणि : राईट ! शुरू हो जाओ। डाकुमेंट सावधानी से रखना।

सनत् : आप बेफिक्र रहिए।

मणि : अब डिस्टर्ब नहीं करता मैं तुम्हें...ठीक एक बजे आऊँगा।

(सनत् चिट्ठियां पढ़ने लगता है। मणिभूषण दरवाजे तक जाकर लौटते हैं)

पाँचू जगा रहेगा। चाय वाय चाहिए हो तो शर्म न करना...

सनत् : नहीं, सर, शर्म किस बात की। वैसे कोई जरूरत नहीं होगी।

मणि : फिर भी···

(प्रस्थान। सनत् चिट्ठी पढ़ता है। तस्वीर उठा कर देखता है। फिर कुछ सोचने लगता है)

सनत् : (अपने आप से) सदानन्द। चिदानन्द ब्रह्मचारी। संकोच सं···को···च···शंख···शंखचील। दैट्स ईट! शंखचील आफ···अब तक···

(चैन की साँस भरता है। पर्दा)

चतुर्थ दृश्य

(पर्दा उठने से पहले इस बार सुनाई देता है—वोट फॉर चिदानन्द ब्रह्मचारी। पूर्वापेक्षा दुर्बल ध्वनि है। उस आवाज़ को दबाती हुई, प्रचण्ड ध्वनि—वोट फॉर मणि मजूमदार। पर्दा उठने पर उत्फुल्ल मणि मजूमदार दिखाई देते हैं। मोहन भी उपस्थित है। आकर्ण विस्तृत हँसी)

मणि : धत्! सच!

मोहन : माँ कसम कह रहा हूँ सर! उनका एक भी लड़का सड़क पर नहीं है। आपके लीफलेट के आधे घंटे के अंदर सब दुम दबाकर भाग गये।

मणि : कौन सा लीफलेट?

मोहन : असली वाला सर! नास्तिकता और साम्राज्यवाद से कुछ खास नहीं हुआ सर। पर 'सदानन्द का प्रेम' निकलते ही सब ठंडे हो गए। इसे कहते हैं स्कूप—मैंने कहा था न आपको?

मणि : सुनाओ, और खबर सुनाओ।

मोहन : वर्कर्ज की जोरदार मीटिंग चल रही है उनके इलेक्शन आफिस में। दरवाजा बंद करके।

मणि : हा! हा! इस धक्के को बच्चू सारे दिन भी मीटिंग कर लें तो भी नहीं संभाल पायेंगे।

मोहन : चिदानन्द है ही नहीं मीटिंग में सर ! यही तो असली खबर है।...

मणि : क्यों कहां गया चिदानन्द ?

मोहन : भाग गया सर, दुम दबाकर भाग गया।

मणि : भाग गया ?

मोहन : कलकत्ता चला गया। सुबह की गाड़ी से चम्पत हो गया सर !

मणि : सच ?

मोहन : सच न होता तो आपसे कहने कैसे आ जाता ?

मणि : भाग गया ?

मोहन : भागेगा नहीं तो क्या करेगा ? यह क्या कोई मामूली धक्का था।

मणि : सदानन्द अब तो यहाँ मीटिंग नहीं करेगा ? क्या ख्याल है ?

मोहन : अजी दिमाग खराब हो रहा है उसका ? सदानन्द अब शक्ल तक नहीं दिखा सकता यहाँ। फोटू भी फस्ट क्लास छपी है उसकी, सर—एकदम साफ। कोई ना नहीं कर कर सकता।

मणि : अटल बाबू को भी कल ही आना था। आज आते तो बात थी...

मोहन : अटल बाबू हैं तो सर ! आज सुबह ही तो देखा है मैंने।

मणि : देखा है ?

मोहन : मैंने अपनी आँखों से देखा है सर ! बाजार के मोड़ पर खड़े 'सदानन्द का प्रेम' पढ़ रहे थे।

मणि : (महानन्द से) पढ़ लिया है तो फिर ?

मोहन : ये पूछिए, किसने नहीं पढ़ा है शहर भर में ?

मणि : अब देखें क्या कहते हैं।

मोहन : उन्हें बुलाकर लाऊँ सर ?

मणि : कोई जरूरत नहीं, खुद ही आएगा। आते ही कहेगा—मणिबाबू। अमूल्य बाबू कब यहाँ मीटिंग करें, तो आपको सहूलियत रहेगी ?

मोहन : अमूल्य घोष ?

मणि : जी ! अमूल्य घोष। अब फिक्र न करो मोहन—नास्तिकता, साम्राज्यवाद, सदानन्द, रमरजीत सान्याल, अमूल्य घोष। फटाफट निकल जाऊँगा। अब तो 'वोट फॉर' कहकर सड़क पर न चिल्लाओ तो भी चलेगा।

मोहन : नहीं सर। ये मैं नहीं मानता। इसका नाम इलेक्शन है। जरा सी ढील दी और गये। चिदानन्द को ऐसा भोला न समझिए—भगवा पहनता है, पर है बड़ा काइयाँ। सदानन्द के बगैर भी लड़ जाएगा।

मणि : हाय, अगर यहाँ खुद चिदानन्द होता···

मोहन : तभी तो कहता हूँ सर, ढील न देना। चिदानन्द के भगवे पर अभी आँच तक नहीं आई है। बल्कि सर, इस मौके पर प्रोपागण्डा और बढ़ा दीजिए।

मणि : वाह, तुम गलत नहीं कह रहे हो वैसे।

मोहन : गलत तो मैं कह ही नहीं सकता, सर ! चौदह साल की उम्र से इलेक्शन कर रहा हूँ···वो जब किरमिच की गेंद से खेला करता था, तब से।

मणि : हाँ-हाँ, तुम लड़कों से कहो कि जी-जान से जुट जाएँ।

मोहन : वो कब का कहा जा चुका है। अब तक तो पचास साठ पोस्टर भी लग गये होंगे—सदानन्द की शान में। लेकिन एक बात थी सर···

मणि : क्या ?

मोहन : आज लड़कों ने जिद पकड़ी है, जरा ठीक से कुछ खाना-पीना हो जाए। वैसे देखा जाए तो आज बड़ी खुशी का दिन है।

मणि : वाह, जरूर। इसमें कहने की क्या बात है !

मोहन : ज्यादा कुछ थोड़े ही करना है सर—मैं इस मामले में काफी टाईट हूं। दो-दो समोसे और दो-दो रसगुल्ले ऊपर से हो जाएँ—बहुत हैं। कुछ खास खर्च भी नहीं पड़ने का।

मणि : हाँ-हाँ, चलने दो।

मोहन : इसी पर देखिए, सब खुश हो जाएँगे।

(स्मरजीत और सुप्रीति का प्रवेश)

मणि : आइए, आइए, स्मरजीत बाबू।

मोहन : नमस्कार सर। नमस्कार जी। आपकी साहित्यसभा का भी बड़ा प्रोग्राम है। खूब भीड़ होगी···

मणि : अच्छा, तो मोहन अब···

मोहन : हाँ सर। ये,···तो फिर मामा को···

मणि : ओ···हाँ हाँ।

मोहन : अभी रहने दीजिए सर, शाम को हो जाएगा। एक दिन में मामा मर थोड़े ही जाएँगे। चलता हूँ, सर—नमस्कार।

(मोहन का प्रस्थान)

मणि : चाय-वाय पी ली आपने, स्मरजीत बाबू ?

सुप्रीति : उसकी फिक्र तुम न ही करो तो बेहतर है। यह बताओ कि तुम अभी घर रहोगे ?

मणि : हाँ, क्यों ?

सुप्रीति : सनत् बाबू भी घर गये हैं। लिलि भी नहीं लौटी अब तक···

मणि : सनत् अभी आ जाएगा ? पर लिलि कहाँ गई।

सुप्रीति : वह साहित्य सभा के पोस्टर लेकर किसी लड़की के घर गई है। मेरा भी एक बार जाना जरूरी है। (स्मरजीत से) शाम साहित्य सभा है—ज्यादहतर काम मुझी पर है, नहीं तो···

स्मरजीत : आप मेरी चिन्ता न करें, मैं मजे में हूँ।

मणि : हाँ-हाँ, मैं तो हूँ ही। तुम फिक्र न करो !

सुप्रीति : मैं आध घंटे में लौट आऊँगी। तब तक तुम्हारे इलेक्शन की उछलकूद जरा बंद रखना।

मणि : हाँ-हाँ, जरूर वाह ! इलेक्शन भी कोई चीज़ है ? असली चीज़ तो साहित्य ही है।

सुप्रीति : तो मैं ज़रा हो आऊँ, स्मरजीत बाबू ?

स्मरजीत : ज़रूर !

(सुप्रीति का प्रस्थान)

मणि : आपको चुरुट चलेगा ?

स्मरजीत : जी नहीं, शुक्रिया। मेरे पास सिगरेट है, आप फिक्र न करें।

(मणि चुरुट सुलगाते हैं। स्मरजीत सिगरेट जलाकर, माचिस और सिगरेट टेबिल पर रखते हैं।)

मणि : समझे स्मरजीत बाबू—साहित्य से मेरा बचपन से ही लगाव था।

स्मरजीत : वह तो आपके घर आते ही पता चल जाता है।

मणि : हाँ, मैं एक साहित्यिक स्टमॉस्फियर रखने की कोशिश करता हूँ। यह भास्वती पत्रिका भी मैंने सुप्रीति से काफी कह सुनकर चालू की। लड़की को भी जितना हो सका···

स्मरजीत : जी हाँ उनकी साहित्यिक चेतना तो, जैसा कि मैंने देखा···

मणि : हाँ, मैं हूँ, सुप्रीति है, घर में साहित्य का एटमॉसफियर है—कुछ न कुछ तो होगा ही।

स्मरजीत : वह तो है ही।

मणि : अब जो मैं असेम्बली में जा रहा हूँ, मेरा असली उद्देश्य क्या है, जानते हो ?

स्मरजीत : क्या ?

मणि : साहित्य।

स्मरजीत : साहित्य !

मणि : जी ! साहित्य के सवाल असेम्बली में बिल्कुल नहीं उठते। ख्याल नहीं किया आपने ?

स्मरजीत : यह ठीक है।

मणि : पर सवाल उठने चाहिए। नहीं चाहिए ?

स्मरजीत : जरूर चाहिए।

मणि : सोच रहा हूँ आज साहित्य-सभा में सभापति के भाषण में इस पाइन्ट पर ही कुछ कहूँगा। क्या ख्याल है ?

स्मरजीत : बहुत अच्छा रहेगा।

मणि : आप मानते हैं ?

स्मरजीत : इसमें कोई कैसे ना कर सकता है ? खासकर एक—। साहित्यिक ?

मणि : (खुश होकर) अच्छा ! अब ज़रा यूँ सोचिए, कि अगर सभापति और प्रधान अतिथि के भाषण—मतलब कि—एक ही सुर में बंधे हों तो जरा अच्छा नहीं होगा ?

स्मरजीत : बहुत ही अच्छा होगा। आपका भाषण कैसा होगा, ज़रा बताइए तो ?

मणि : मेरा भाषण सनत्'''माने'''मेरा भाषण अभी मैंने ठीक से सोचा नहीं है। समय ही नहीं मिला। यही कोई घंटे भर में आपको एक डेफिनेट आइडिया दे दूंगा।

स्मरजीत : ठीक है, बिल्कुल ठीक है। अगर साथ ही साथ मेरी भी लाइन ज़रा बना दें'''पर आपको टाईम भी होगा ?

मणि : जरूर होगा। अजी साहित्य के लिए टाईम नहीं होगा तो क्या इलेक्शन के लिए होगा।

स्मरजीत : ज़्यादा कुछ नहीं, अगर सिर्फ आउट लाईन ही'''

मणि : जरूर। आउटलाईन ही क्यों, अगर आप कहें तो सारा ही'''

स्मरजीत : कहें ? मेरी तो जान बच जाए। लेक्चर देना मुझे बिल्कुल

नहीं आता।

(टेलिफोन बजता है। मणि भूषण उठाते हैं।)

मणि : माफ कीजिएगा…(फोन पर) हैलो ? ट्रंककाल ? कलकत्ता ?…नहीं मिसेज मजूमदार घर नहीं हैं। मैं मिस्टर मजूमदार…जी…हैलो…हाँ, मणि मजूमदार… नमस्कार मिसेज कौन ? …गुप्त ? मिसेज़ गुप्त ? (स्मरजीत चौंक उठते हैं)हाँ हाँ कहिए…मैं बता दूँगा… हाँ हाँ…जानता हूँ…क्या कहा स्मरजीत बाबू ने ? (स्मरजीत उठ खड़े होते हैं) नहीं आ सकते। कहते हैं ? (मणि हँस उठते हैं) आपको गलतफहमी हो गई है मिसेज गुप्त, स्मरजीत बाबू…

स्मरजीत : नहीं, नहीं, इन्हें मत बताइए।

मणि : ऐं ?

स्मरजीत : इन्हें न बताइए कि मैं यहाँ आया हूँ।

मणि : क्यों…एक सेकण्ड (फोन पर हाथ रख) क्या हुआ ?

स्मरजीत : आप समझ नहीं रहे। बड़ी मुसीबत हो जाएगी।

(स्मरजीत जल्दी जल्दी सोचने की कोशिश करते हैं।)

मणि : क्यों, क्या हो जाएगा ?

स्मरजीत : वो…माने…सब मुझे घेर लेंगे। सारे साहित्य-सभा वाले। इसीलिए तो उन्हें कहा था कि मैं नहीं आ सकता।

मणि : आई-सी।

स्मरजीत : जान गये तो मेरी जान खा जाएँगे।

मणि : तो फिर इन्हें अब क्या कहूँ।

स्मरजीत : कहिए…अच्छा ! बड़े अफसोस की बात है।

मणि : हैलो…अच्छा। अफसोस की बात है (और जोर से) मैंने कहा…अच्छा बड़े अफसोस की बात है…हाँ अफसोस की बात। जी हाँ, साहित्य-सभा का सारा इंतजाम हो चुका था…हाँ, उनका भी प्रचार किया था…नहीं-नहीं। आप

क्या कर सकती हैं इस बारे में ?…ऐं…फिर से कोशिश करेंगी ?

स्मरजीत : (झट से) कहिए…अब ज़रूरत नहीं है।

मणि : (फोन पर) अब ज़रूरत नहीं है।

स्मरजीत : हमने दूसरा बंदोबस्त कर लिया है।

स्मरजीत : अब वक्त नहीं है…

मणि : अब वक्त नहीं है।

स्मरजीत : इस तरह अनसर्टेनिटी में नहीं रह सकते…।

मणि : इस तरह अनसर्टेनिटी में नहीं रह सकते (फोन पर हाथ रख) कह रही हैं, बड़ी शर्मिन्दा है।

स्मरजीत : कहिए…नहीं नहीं, कोई बात नहीं।

मणि : नहीं-नहीं कोई बात नहीं। ऐं ! (फोन पर हाथ रख) कहती हैं…

स्मरजीत : आप नमस्कार कह कर फोन रख दीजिए।

मणि : (फोन पर) नमस्कार। (झट से फोन रख देते हैं। स्मरजीत हांफ से रहे हैं। मणि जी खोलकर हँस उठते हैं।) स्मरजीत सान्याल नहीं आ सकते, ऐं ? मज़ा आ गया, क्यों ?

स्मरजीत : (सूखी हँसी हँसकर) हाँ, मजे ही की बात है।

मणि : कल जब अखबार पढ़ेंगी तो सोचेंगी हमने किसी को स्मरजीत सान्याल बनाकर सभा कर ली…

(अपने मज़ाक पर हँसने लगते हैं। स्मरजीत भी जितना हो सकता है, हँसने की कोशिश करते हैं। लिलि का प्रवेश। आते ही धम् से कुर्सी पर बैठ जाती है !)

लिलि : ओह !

मणि : लगता है, जैसे दौड़ते-दौड़ते आई हो ?

लिलि : काफी भागदौड़ करके आई हूँ अभी। काम बहुत था।

मणि : तुझे कौन-सा काम आ पड़ा ?

लिलि : क्यों ! पोस्टर लेकर पहले वीथि के घर गई। वहाँ से वीथि के साथ सुरमा के घर, सुरमा के घर से नन्दा के घर। फिर विथि, सुरमा और नन्दा के साथ···

मणि : बस, बस, समझ गया।

स्मरजीत : इतने भाग दौड़ की ज़रूरत क्या थी आपको ?

लिलि : वाह, आपने ही तो सुबह कहा कि समझा देंगे ?

स्मरजीत : क्या समझा दूँगा ?

मणि : पागल हो गई है यह लड़की।

लिलि : मीना भी तो पागल हो गई थी।

मणि : मीना कौन ?

लिलि : वाह, तुमने इनकी "सीता और एन्ड्रोमिडा" नहीं पढ़ी ?

मणि : ओ, हाँ-हाँ, भूल ही गया था। सीता ही तो पागल हो गई थी।

लिलि : अरे सीता नहीं, मीना-मीना।

मणि : एक ही बात···हाँ-हाँ, मीना-मीना। सीता क्यों पागल होने लगी ? सीता तो···सीता तो···वो थी। पागल तो मीना हुई थी। अब याद आ गया।

लिलि : तो अब बताइए ?

मणि : हाँ-हाँ बताइयेगा। मेरे भी मन में यही प्रश्न था।

स्मरजीत : पागल न हो गई होती तो और क्या हो सकती थीं ?

मणि : (लिलि से) यह भी ठीक है। पागल न हो गई होती तो क्या होती? तू ही बता ?

लिलि : मान लीजिए, पागल अगर नहीं हुई होती···

मणि : हाँ, मान लीजिए, पागल नहीं हुई होती तो ?

स्मरजीत : हाँ, पागल नहीं भी हो सकती थी। पर मूल प्रश्न फिर भी रह ही जाता है।

मणि : (लिलि से) ले! मूल प्रश्न का क्या करेगी ? सोच।

है तूने ?

(लिलि के मूल प्रश्न पर कुछ कहने से पहले ही पाँचू का प्रवेश)

पाँचू : कल के वही बुड्डे से बाबूजी आए हैं।

मणि : (उछलकर) आए हैं, अरे आना ही पड़ेगा।

लिलि : वही बुड्ढा ? स्मरजीत बाबू चलिए हम ऊपर चलें। नहीं तो फिर लड़के-लड़कियों के मेल-जोल पर लेक्चर झाड़ेगा।

स्मरजीत : मामला क्या है, मैं तो कुछ…

मणि : हाँ, आप ऊपर ही जाइये। इलेक्शन के बेकार से काम हैं कुछ…

स्मरजीत : अच्छा, अच्छा।

मणि : (पाँचू से) जा बुला ला।

पाँचू : जी, मैं बुलाऊँ ?

मणि : हाँ-हाँ, तू ही बुला। आज मैं नहीं जाता। (लिलि और स्मरजीत अंदर गये। पाँचू बाहर गया।) (स्वगत) आए अब दौड़े दौड़े ? लौस्ट कोज़ ! अब ? हें हें… (पाँचू अटलबाबू को लाता है अटलबाबू गंभीर) आइये, अटलबाबू, आइये बैठिये। बैठिये। मैं तो सोच रहा था आप कल ही चले गये।

अटल : नहीं, मैंने सोचा एक और दिन देख लें आप क्या करते हैं। अगर कुछ ठीक लगा तो अमूल्य बाबू को कह सुन कर बुला ही लें।

मणि : अच्छा, अच्छा। तो अब क्या देखा आपने।

अटल : यह लीफलेट देखा।

(जेब से सदानन्द संबंधित लीफलेट निकालते हैं)

मणि : (तृप्त हँसी के साथ) सिर्फ यही देखा ? और भी दो थे, नहीं देखे ?

अटल : दूसरे दो पहले ही देख लिए थे। उन्हें देखकर जरा सी

उम्मीद बंधी थी। फिर यह देखा।

मणि : इसे देखकर पूरी तसल्ली हो गई, क्यों ? हा हा···।

अटल : हाँ, पूरी तसल्ली हो ही गई।

पाँचू : हा ! हा ! हा !···अमूल्य बाबू को इतवार को ही बुलाइये। इतवार को ही मीटिंग जमती है वहाँ।

अटल : अमूल्य बाबू ? हाँ, शायद आना ही पड़ जाए अमूल्य बाबू को। बड़ी दूर तक धक्का पहुँचाया है आपने।

मणि : हा हा ! ···नौमिनेशन क्या ऐसे ही माँगा था मैंने ? सदानन्द की हंड़िया से खबर निकाल कर छोड़ी कि नहीं ?

अटल : सदानन्द ! यह तस्वीर किसकी है आप जानते हैं ?

मणि : (हचकचा कर) क्यों सदानन्द की। क्या आप कहना चाहते हैं यह तस्वीर सदानन्द की नहीं है ?

अटल : मैं लड़की की बात पूछ रहा हूँ।

मणि : ओह, लड़की ? होगी कोई वैसे ही लड़की···विष्णुपुर स्कूल में पढ़ती थी।

अटल : नाम जानते हैं आप !

मणि : नाम···नाम ? भला सा नाम था···है तो लीफलेट में··· वेणु, वेणु।

अटल : (चबाचबा कर) जी, वेणु। अच्छा नाम···स्वर्णलता भद्र। गामुनिया कान्स्टिटूयेन्सी की कैन्डीडेट। हमारे नौमिनेशन से। (प्रति उक्ति पर मणि पत्थर बनते जा रहे हैं। थोड़ी देर चुप्पी।)

मणि : (दुर्बल स्वर से) स्वर्णलता भद्र !

अटल : एक नहीं, दो सीटें डुबो दी आपने।

मणि : पर मैं···मुझे कैसे पता कि···

अटल : स्वर्णलता भद्र गामुनिया कान्स्टिटूनेन्सी से खड़ी हुई हैं, आप नहीं जानते थे ?

मणि : जानता था···पर ये ही स्वर्णलता भद्र हैं, यह नहीं··

अटल : हर कैन्डीडेट की तस्वीर अखबार में निकली है।

मणि : हाँ, वह तो है···

अटल : आप शायद अपनी तस्वीर देखने में इतने व्यस्त थे कि और किसी की तस्वीर देखने का वक्त ही नहीं मिला।

(बात झूठ नहीं थी)

मणि : नहीं, नहीं, मैं, मैं···

अटल : चिदानन्द खुद कलकत्ता गया है आज···गामुनिया कान्स्टिट टूयेन्सी को डुबोने।

मणि : इसलिए गया है ?

अटल : नहीं तो क्या आपने सोचा था कि आपके डर से भाग गया है ?

मणि : नहीं, हैं···पर चिदानन्द तो···माने सदानन्द तो अब यहाँ शकल तक···

अटल : (अवहेलना के साथ) आपको हराने के लिए चिदानन्द अकेला ही काफी है। सदानन्द की जरूरत नहीं है उसे।

(मणि भूषण चुप बैठे रहते हैं)

अब कुछ कीजिएगा या बैठे ही रहेंगे ऐसे ?

मणि : एं ! क्या करूँ ?

अटल : एक स्टेटमेंट लिख दीजिए।

मणि : स्टेटमेंट ?

अटल : उसमें लिखिए कि यह आपने निकाला ही नहीं। आपके किसी और आदमी ने भी नहीं।

मणि : यह कैसे हो सकता है ?

अटल : लिखिए कि आपके पार्टी को नीचा दिखाने के लिए, उन्होंने खुद यह झूठा प्रचार किया है।

मणि : मगर···

अटल : मेहरबानी करके, जो मैं कह रहा हूँ, उसे सुनिये।

मणि : (सिमटकर) कहिये !

अटल : बाधवन्दी में एक ऐसी लज्जाजनक घटना के लिए आप शर्मिन्दा हैं। अब से आप इस तरफ निगाह रखेंगे ताकि ऐसी गंदी घटनाएँ फिर न घटें। इसे जरा ठीक से लिख कर मुझे अभी दे दें।

(मणि भूषण कुछ कहने जाते हैं, फिर चुप हो जाते हैं। उठकर आफिस रूम में जाते हैं। अटलबाबू इतनी देर बाद अपना मत प्रकट करते हैं)

ईडियट कहीं का।

(उठकर चहलकदमी करते हैं, आफिस रूम के दरवाजे पर जाते हैं। फिर मणि की हँसते हुए तस्वीर को देखते हैं!)

ईडियट।

(स्मरजीत का प्रवेश। आफिस टेबल पर पड़े सिगरेट और माचिस को सीधा जाकर उठाते हैं। अटल बाबू की तरफ नजर पड़ते ही एक लम्हे के लिए पत्थर हो जाते हैं, फिर सटकने की कोशिश करते हैं। पर अब तक अटल पलटे हैं और निगाहें मिल गई हैं)

अरे! कानाई दत्त! यहाँ कैसे आए आप?

स्मरजीत : मैं, मैं···ड्यूटी पर आया हूँ।

अटल : ड्यूटी? चिदानन्द के अखबार की?

स्मरजीत : नहीं··हाँ···बाधबन्दी कवर करने भेजा है। अ···आपकी तबीयत ठीक है?

अटल : बाधबन्दी कवर कर रहे हैं तो यहाँ कैसे?

स्मरजीत : यहाँ? वो···मणि बाबू ने प्रेस कान्फेंस बुलाया है न, इसीलिए····

अटल : प्रेस कान्फेंन्स? मणि मजूमदार ने बुलाया है?

स्मरजीत : जी हाँ। मैं जरा जल्दी आ गया हूँ।

(स्मरजीत धीरे-धीरे अन्दर सटक रहे हैं)

अटल : मणि बाबू तो इस कमरे में हैं, आप उधर कहाँ जा रहे हैं ?

स्मरजीत : ऐं ! अच्छा इधर से अन्दर का रास्ता है क्या ? मैंने सोचा था···

अटल : आप तो उधर से ही आए थे लगता है। इधर तो मैं ही खड़ा था।

स्मरजीत : इस तरफ से ?···हो सकता है, नई जगह है, शायद गलत रास्ते आ गया हूँगा (फिर सोचकर) नहीं, नहीं, दरअसल अन्दर मिसेज मजूमदार से साहित्य सभा के बारे में पूछ-ताछ···

अटल : आप आए किसलिए हैं ज़रा ठीक से बताएँगे ?

स्मरजीत : कोई खास बात थोड़े ही है—ऐसे ही आ गए।

अटल : यह मामला जरा समझना पड़ेगा—(आफिस के दरवाज़े से) मणि बाबू ज़रा आइये तो इस कमरे में···(अटल के मुंह फिराते ही स्मरजीत दरवाज़े से अन्दर सटक गये। मणि भूषण का प्रवेश) कानाई दत्त यहाँ···ऐं, यह क्या ? कहाँ गया ?

मणि : कौन ?

अटल : कानाई दत्त। अभी तो यहीं था।

मणि : कानाई दत्त कौन ?

अटल : चिदानन्द के अखबार का रिपोर्टर।···सुना है आपने प्रेस कान्फ्रेंस बुलाया है ?

मणि : मैं ? मैं प्रेस कान्फ्रेंन्स क्यों बुलाने लगा ?

अटल : यही तो मैं भी सोच रहा था। पर आपके दिमाग में कब क्या आ जाए कहा थोड़े ही जा सकता है। (मणि अपमान हजम कर जाते हैं) लेकिन···गया अन्दर ही है।

मणि : कौन अन्दर गया है ?

अटल : आह ! कितनी बार कहना होगा। कानाई दत्त सिर्फ यहीं नहीं, आया भी अन्दर से ही था।

मणि : यह क्या कह रहे हैं आप ? कौन अन्दर से—यानी, कानाई दत्त अन्दर से कैसे आ सकता है ?

अटल : यही तो मैं सोच रहा हूँ।

मणि : आपने गलत तो नहीं देख लिया कहीं ? (अटल मणिभूषण को घूरते हैं) नहीं, कह रहा था कि···किसी और को तो नहीं···मेरी लड़की या···?

अटल : आपकी लड़की क्या मर्दों की पोशाक पहने रहती है ?

मणि : नहीं तो ?

अटल : क्या आपकी लड़की मुझसे कहेगी कि यहाँ प्रेसकान्फ्रेंस करने आई है ?

मणि : नहीं, सो क्यों कहेगी ?

अटल : तो फिर आप क्या कहना चाहते हैं ?

मणि : मैं क्या कहना चाहूँगा ? आप ही तो कह रहे थे···

अटल : हाँ, कह रहा था। अब भी कहता हूँ।

मणि : क्या ?

अटल : कह रहा था···कानाई दत्त इस दरवाजे से आया था और इसी दरवाज़े से भागा है।

मणि : यह कैसे हो सकता है ? इस दरवाजे से तो सिर्फ अन्दर जा सकते हैं।

अटल : तो फिर अन्दर ही गया होगा।

मणि : ऐं ! ···लेकिन, अन्दर से आया कैसे होगा ?

अटल : शायद पहले से ही आ गया हो। या···इस मकान की खिड़कियों में सींखचे तो नहीं लगे हुए हैं ?

मणि : जी नहीं। (सहसा घबराकर) ए, पाँचू ! पाँचू ! गंगाराम महाराज ! लिलि-लिलि कहां गई ?

(पाँचू का प्रवेश)

मणि : फौरन अन्दर जा और सबको बुला ला। गंगाराम कहाँ गया ? गंगाराम ?

पाँचू : ड्राईवर साहब तो माँजी को गाड़ी में लेकर गए हुए हैं···।

मणि : तू खड़ा-खड़ा क्या देख रहा है ? दौड़कर अन्दर जा और सारा मकान ढूढ़ ! फिर खड़ा है।

पाँचू : जी ढूँढू क्या ?

मणि : कानाई दत्त को ढूंढ़ ! एक बात को कितनी बार समझाना पड़ता है । बेवकूफ कहीं का···(पाँचू अन्दर दौड़ा) लिलि ! लिलि ! ···मैं ही देखता हूँ । (अन्दर चले)

अटल : इतने परेशान होने की ज़रूरत नहीं···

मणि : यह क्या कह रहे हैं ? कानाई दत्त अब भी अन्दर ही घूम रहा होगा···

अटल : कानाई दत्त चोर डाकू थोड़े ही हैं। वह जरूर किसी खबर की तलाश में आया होगा।

मणि : खबर ? काहे की खबर ?

अटल : होगी कोई इलेक्शन के काम की खबर।

(लिलि का द्रुत प्रवेश)

लिलि : क्या, क्या हुआ बाबूजी ?

मणि : तूने कानाई दत्त को अन्दर जाते देखा था ?

लिलि : नहीं तो।

मणि : गया है।

लिलि : कौन ?

मणि : अरे भाई, कानाई दत्त ! एक ही बात बार-बार सुनोगी ?

लिलि : कहा कब तुमने ? पाँचू महाराज, महरी सब ने कानाई दत्त, कानाई दत्त कर, घर सर पर उठा रखा है। तुम भी···

अटल : कानाई दत्त चिदानन्द का आदमी है।

लिलि : चिदानन्द का आदमी यहाँ कैसे आ सकता है ?

मणि : भेद लेने···इलेक्शन की खबरें।

लिलि : इलेक्शन की खबर घर के अन्दर से कैसे मिल सकती है ?

मणि : मुझे क्या मालूम कैसे मिल सकती है ?

लिलि : तुमने गलत देखा है।

मणि : मैं क्यों देखने लगा ? अटल बाबू ने देखा है।

अटल : आप कहना चाहते हैं मैंने गलत देखा है !

मणि : मैंने कब कहा ? लिलि ही तो कह रही थी···

लिलि : वाह ! मैंने कब ऐसी बात कही ? मैं तो कह रही थी···'तुमने' गलत देखा है।

मणि : आह ! मैं कह रहा हूँ कि मैंने नहीं देखा। (पाँचू का प्रवेश) क्या है ?

पाँचू : जी कोई नहीं मिला।

मणि : नहीं मिला ?

अटल : तो ज़रूर भाग गया होगा खिड़की से।

मणि : सत्यानाश !

(सनत् का प्रवेश। हाथ में एक कागज का लिफाफा। घुसते ही हालात देखकर रुक गया।)

सनत : सॉरी ! बाहर कोई नहीं था, इसलिए सीधा अंदर आ गया।

मणि : बिल्कुल ठीक किया। तुम तो घर के आदमी हो।

सनत : यह एक चीज़ मिली सर, घर में। सोचा शायद आपके काम आ जाए।

मणि : अब काम ! यहां सत्यानाश हो गया है।

सनत : क्यों सर क्या हुआ ?

मणि : कानाई दत्त यहाँ से इलेक्शन की सारी खबरें लेकर चलता बना है।

(सनत चौंक उठा, पर उसे देखने लायक हालत किसी

की नहीं थी)

सनत : कानाई दत्त ?

मणि : हाँ, खिड़की से भाग गया, पकड़ में नहीं आया ! यह पाँचू कमबख्त ! किसी काम का नहीं है !

पाँचू : जी मैं···

मणि : निकल जा यहाँ से ! बैठे-बैठे तनख्वाह खाते हैं और कानाई दत्त आता है तो किसी को पता भी नहीं चलता।

(पाँचू भागा। पर सनत् घबरा गया। कानई दत्त अगर खिड़की से भाग गया तो स्मरजीत सान्याल क्या कर रहा है ? और वह भी 'घर का आदमी' कैसे बन गया ?)

लिलि : इलेक्शन की खबर ले कौन सी गया ?

मणि : ऐं ! मुझे क्या पता ?

लिलि : मुझे तो लगता है कि कोई आया ही नहीं था।

अटल : मैंने खुद देखा है।

लिलि : (विनीत हास्य से) भूल तो हर इन्सान से हो सकती है।

अटल : (क्रोध से) भूल ! मैं यहाँ खड़ा था···इस तरफ मुँह करके। ज्यों घूमा देखा कानाई दत्त यहाँ से···इस टेबिल से कुछ उठा रहा है।

मणि : उठा रहा है ? मर गये !

लिलि : क्या ले रहा था ? सिगरेट ?

अटल : हाँ हाँ ठीक, सिगरेट !

लिलि : कंधे पर चादर, चशमा पहने ?

अटल : हाँ, हाँ···

(लिलि हँस उठती है)

लिलि : मैं कह रही थी···भूल हो गयी है।

अटल : भूल !

लिलि : बाबूजी ! स्मरजीत बाबू को ये कानई दत्त समझ बैठे हैं।

मणि : एँ !

लिलि : स्मरजीत बाबू मीना के पागल होने की बात समझाते-समझाते एकाएक बोले—सिगरेट नीचे छोड़ आया हूँ। मैं खुद आने को हुई तो वो बोले, आप न जाइये, वहाँ वह बुड्ढा बैठा है·······

अटल : क्या ?

लिलि : (फौरन) नहीं, नहीं, बोले—वही साहब बैठे हैं, मैं खुद जाता हूँ। कह कर नीचे आए।

मणि : (साँस छोड़कर) यूँ कहो ! ओह अब तक इतनी हैरानी···

लिलि : कह तो रही हूँ कि तुमसे भूल हुई है···

अटल : (चिल्लाकर) कभी नहीं ? कम से कम दस प्रेस कान्फ्रेंसों में मैंने कानाई दत्त को देखा है। वही है कानाई दत्त।

(सनत भाग जाता, पर दरवाजे पर अटल खड़े हैं)

मणि : यह क्या कह रहे हैं, अटल बाबू ? स्मरजीत सान्याल कानाई दत्त कैसे हो सकते हैं ?

अटल : कानाई दत्त, स्मरजीत सान्याल बनकर घर में घुसा है।

मणि : ऐसा भी कभी होता है ?

लिलि : आप भी एक नामुमकिन सी बात कर रहे हैं।

अटल : मैं कहता हूँ, वही कानाई दत्त है।

मणि : अटल बाबू, सुनिए···

अटल : स्मरजीत सान्याल को आपने पहले कभी देखा है ?

मणि : नहीं, पर···

अटल : तस्वीर देखी है ?

मणि : नहीं, मगर···

लिलि : स्मरजीत सान्याल को देखते ही पहचाना जा सकता है।

अटल : हूं।

लिलि : (चिढ़कर) स्मरजीत बाबू ने यहीं बैठकर कविता लिखी है, जानते हैं ? वैसी कविता कानाई दत्त कहाँ से लिख

लेगा ?

अटल : कविता ? हूँ: !

लिलि : सिर्फ आपके धौंस से ही तो सब कुछ नहीं हो जाता···

मणि : लिलि !

अटल : धौंस ? मुझे साफ लग रहा है—किसी ने स्मरजीत सान्याल को देखा ही नहीं।

लिलि : कौन कहता है नहीं देखा—सनत् बाबू ने देखा है।

मणि : बिल्कुल ठीक !

लिलि : सनत् बाबू से पुरानी पहचान है। सनत् बाबू उन्हें स्मरजीत दा कहकर बुलाते हैं।

अटल : (सनत् से) आप जानते हैं स्मरजीत सान्याल को ?

लिलि : खूब जानते हैं। कल कितनी बातें हुई इनसे, पारिवारिक बातें। हम तो यह कमरा भी छोड़कर चले गये ताकि ये बातें कर सकें। फिर सनत् बाबू ने गुलदस्ता पकड़ा···

अटल : इतनी बातों से फायदा क्या है ? स्मरजीत बाबू को ही बुला लो न यहाँ।

लिलि : (दुर्विनय से) क्यों ?

मणि : लिलि ! यह क्या है ?

लिलि : तो ये क्यों स्मरजीत बाबू के बारे में उलटा-सीधा बोल रहे हैं ?

(अटल बाबू मुश्किल से अपने आप पर काबू पाते हैं)

अटल : तुम मुझे गलत समझ रही हो। मैंने स्मरजीत बाबू का कोई अपमान नहीं किया है। बल्कि मैं खुद उनकी कविता का भक्त हूँ। वह अगर कृपा कर यहाँ आएँ, तो अपनी भी पहचान हो जाए।

(लिलि मुहूर्त भर चुप रहती है)

लिलि : स्मरजीत बाबू नहाने गये हैं।

अटल : नहाने गये हैं ?

लिलि : सिगरेट लेकर लौटे तो बोले, गर्मी लग रही है, नहाना जरूरी है। मैंने ऊपर के बाथरूम में तौलिया वौलिया रख दिया···

अटल : (उत्तेजित होकर) अब तक हवा हो गया होगा। देखो तो सही ? (लिलि अंदर गई) गुसलखाने की खिड़की किधर खुलती है ?

मणि : बगीचे की तरफ पर···

अटल : जल्दी किसी को भेजिए बगीचे तक···

मणि : पर अटल बाबू···

(अटल बाबू खुद ही दरवाजे पर जाकर आवाज लगाते हैं)

अटल : पाँचू !

मणि : अटल बाबू आप···

(पाँचू का प्रवेश)

अटल : जल्दी से जाकर बगीचे से ऊपर के बाथरूम की खिड़की देख आओ।

पाँचू : बाथरूम ?

अटल : हाँ, हाँ ! बाथरूम की खिड़की !

पांचू : सिर्फ देख आऊँ ?

अटल : हाँ-हाँ, भागकर जाओ।

(पाँचू भागा)

मणि : आप बुरा न मानें अटल बाबू, पर यह आप···

अटल : आप चुप रहिए। आपकी होशियारी मैं पहले ही देख चुका हूँ।

(टेबल से 'सदानन्द का प्रेम' जमीन पर दे मारते हैं। मणिभूषण चुप। अटल बाबू चहलकदमी कर रहे हैं।)

सनत् : मैं—मैं चलता हूँ, सर···

मणि : एँ ? नहीं-नहीं, कहाँ जाओगे ? अभी बहुत काम बाकी है, बैठो।

(लिलि का प्रवेश)

लिलि : ना, अभी तक बाहर नहीं आए।

अटल : और आएँगे भी नहीं !

लिलि : मतलब ?

(पाँचू का प्रवेश)

पाँचू : जी, देख आया।

अटल : क्या देखा ?

पाँचू : खिड़की खुली थी।

अटल : खुली थी न ?

पाँचू : जी हाँ। और कवि बाबू जी की चादर लटक रही थी।

मणि : किसकी क्या लटक रही थी ?

पाँचू : जी चादर, कवि बाबू जी की। जो चादर उसके कंधे पर रहती थी, वही।

मणि : लटक रही थी का मतलब ?

पाँचू : जी, एक तरफ से खिड़की बँधी से थी और दूसरी तरफ से लटक रही थी।

लिलि : क्या बकता है ?

पाँचू : दीदी, आप खुद देख आइये।

(लिलि बाहर दौड़ी, पीछे पाँचू)

अटल : क्यों मणि बाबू ?

मणि : इम्पॉसिबल !

अटल : अब भी इम्पॉसिबल ?

मणि : पर सनत् ? तुम··· तुम तो पहचानते थे ?

सनत् : मैं···मैंने बहुत दिन पहले देखा था, पहचानने में गलती कर गया···

अटल : आप किसे पहचानते थे? समरजीत सान्याल को या कानाई दत्त को?

सनत् : मैं···मैं···

अटल : लगता है आप भी चिदानन्द ब्रह्मचारी के आदमी हैं।

सनत् : नहीं, यकीन कीजिए···

(लिलि का प्रवेश)

लिलि : मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा।

अटल : अब भी समझ नहीं आ रहा?

लिलि : शायद कहीं गये हों···

अटल : बाथरूम की खिड़की से? चादर से उतर कर?

लिलि : कवियों का कुछ कहा थोड़े ही जा सकता है? शायद मूड आ गया हो।

अटल : मूड! हूँ! (लिलि कुछ कहने को हुई, फिर कदम पटकते हुए चली गई) आपने स्टेटमेंट लिख ली मणि बाबू?

मणि : स्टेटमेंट? ओ, हाँ बस जरा सा बाकी है···

अटल : जल्दी से पूरा कर दीजिए। फिर मुझे गाड़ी पकड़ना है। (मणिभूषण आफिस को दौड़े) आप क्या करते हैं, सनत् बाबू?

सनत् : मैं? मैं बाघबेरी हाई स्कूल में टीचर हूँ। साहित्य पढ़ाता हूँ!

अटल : यहाँ कब से हैं?

सनत् : कोई नौ महीने से!

अटल : इससे पहले कहाँ काम करते थे?

सनत् : इससे पहले मैंने काम नहीं किया। पढ़ता था।

अटल : कहाँ?

सनत् : कलकत्ते में।

अटल : आई सी! कानाई दत्त के साथ आपकी कलकत्ते से जान-पहचान है?

सनत् : नहीं-नहीं, कानाई दत्त···

अटल : (धमकाकर) क्यों झूठ बोल रहे हैं ?

सनत् : आप यकीन कीजिए···

(मणि का प्रवेश। हाथ में कागज। चुपचाप अटल के हाथों दे देते हैं। अटल पढ़कर जेब में रख लेते हैं।)

अटल : ठीक है, इसीसे काम चल जाएगा। अब मेरे पास वक्त नहीं है, मैं चलता हूँ। सिर्फ एक बात—आप स्कूल के सेक्रेटरी हैं और आपको यह भी नहीं पता कि स्कूल के कौन-कौन से टीचर चिदानन्द के जासूस हैं ?

मणि : चिदानन्द का जासूस ? कौन ? जरूर वही टीचर होगा, मुझे शुरू से ही शक था।

अटल : वही का क्या मतलब ? वह तो आपके सामने खड़े हैं।

मणि : सनत् ? नहीं-नहीं। सनत् चिदानन्द का जासूस कैसे हो सकता है ?

अटल : हाँ, कैसे हो सकता है ? सिर्फ बेचारे ने चिदानन्द के जासूस कानाई दत्त का परिचय ही तो छुपाया था।

मणि : नहीं, छुपाएगा क्यों ? बहुत दिनों से स्मरजीत को नहीं देखा था—गलती कर गया।

अटल : जरा दिमाग भी इस्तेमाल कीजिए, मणि बाबू ! कानाई ने भी बहुत दिनों से स्मरजीत के दोस्त सनत् को नहीं देखा था, इसीलिए गलती से पारिवारिक आलोचना कर गया—वाह !

(अटल गये। सनत् बुत बना बैठा बना रहा। मणि बाबू मन ही मन अटल की बात को तौलने लगे।)

मणि : सनत् ! (सनत् सिर्फ बुद्धुओं की तरह देखता रहा) सच कहो ! तुम कानाई दत्त को जानते थे ? (सनत् चुप) कहो।

सनत् : (धीरे-धीरे) हाँ, जानता था।

मणि : तो तुम जानते कि वह समरजीत नहीं है ?

सनत् : हाँ जानता था।

मणि : तो बताया क्यों नहीं ?

सनत् : कानाई दा और मैं कलकत्ते में एक ही मेस में चार साल तक साथ थे।

मणि : (दुःखी स्वर में) इसके बाद तो तुम्हारी कनफर्मेशन मैं रिकमेण्ड नहीं कर सकता। (यह तो जानी ही बात है, सनत् क्या कहे) तो तुम चिदानन्द ब्रह्मचारी के आदमी हो ?

सनत् : नहीं सर, मैं चिदानन्द का आदमी नहीं हूँ। मैं किसी का आदमी नहीं हूँ। कानाई दा की बात छुपाई जरूर थी—कानाई दा मुझसे बड़ा स्नेह करते थे···पर चिदानन्द का आदमी मैं नहीं हूँ सर, यकीन कीजिए।

मणि : कैसे यकीन हो अब !

सनत् : आप पूछ लीजिए सर ! स्कूल में पूछ लीजिए···जीवन बाबू हैं, सब हैं···हेडमास्टर से भी पूछ लीजिए सर··· मेरा किसी से कुछ लेना देना नहीं।

मणि : अरे, मैं ही नहीं समझ पाया था तो स्कूल के टीचर क्या समझेंगे ?

सनत् : सर ! अगर मैं चिदानन्द का आदमी था तो मैंने आपके लीफलेट क्यों लिखे ?

मणि : वह तो नौकरी के डर से लिखे होंगे।

सनत् : हाँ, हो सकता है, पर मैं आपको···

मणि : बस सनत्, रहने दो, अब तुम जाओ।

(मणि बाबू लौटे। सनत् कुछ देर रुका रहा फिर धीरे-धीरे दरवाजे की तरफ चल दिया। सनत् का लिफाफा मणि बाबू को दिख गया। उठा लिया)

इसे छोड़े जा रहे हो।

(सनत् लौटा और लपक कर लिफाफा ले लिया।)

सनत् : यह देखिए सर ! अगर मैं चिदानन्द का आदमी होता तो इसे आपके पास लेकर क्यों आता ? कहिए सर, इसके बारे में आप तो जानते भी नहीं थे, मैं खुद ही लेकर आया।

मणि : क्या है यह ?

सनत् : मैंने आते ही कहा था—आपके शायद काम आ जाए ! याद कीजिए सर—कहा था कि नहीं ?

मणि : हाँ, पर वह है क्या ?

(सनत् लिफाफा खोलने लगता है।)

सनत् : शंखचील। (सफेद चील)

मणि : (एक कदम पीछे हटकर) शंखचील !

सनत् : यह देखिए सर—शंखचील ! सम्पादक जगत्पति गुह—मेरे बड़े मामा ?

मणि : बड़े मामा ?

सनत् : हाँ सर, मेरे सगे बड़े मामा प्रोसक्राईब्ड हो गई थी यह पत्रिका छपते के साथ ही साथ। यही एक कापी मामा ने छुपा रखी थी। और कहीं नहीं मिल सकती ?

मणि : इसे लेकर मैं क्या करूँगा ?

सनत् : चिदानन्द सर ! चिदानन्द ब्रह्मचारी की कविता है इसमें। तस्वीर भी हैं। बड़े मामा हर लेखक की तस्वीर छापते थे ?

मणि : तो क्या हुआ। इनक्लाबी कविता लिखी है। यह तो उसकी तरफ का पाईन्ट है।

सनत् : (चीखकर) इनक्लाबी नहीं सर···पढ़कर तो देखिए, अश्लीलता की वजह से जब्त हो गई थी शंखचील।

(एक मुहूर्त चुप्पी)

मणि : (धीरे-धीरे) क्या का ? अश्लीलता के लिए चिदानन्द···? (सहसा पत्रिका छीन लेते हैं और पागलों की तरह पन्ने पलट कर कविता निकालते हैं) चिदानन्द ब्रह्मचारी—

तुम्हारे छूने से—(स्पर्श से)

(रुक जाते हैं। सनत् की ओर देखते हैं। सनत् मुंह घुमाकर खड़ा हो जाता है। मणि कविता को निगल रहे हैं और कनखियों से कभी-कभी सनत् को देखते हैं। सनत् पर्दा किए खड़ा है। कविता पढ़कर मणि देखते हैं)

सनत् !

सनत् : कहिए सर !

मणि : (आनन्द से) सनत् !

(सनत् भी अब हँसता है)

सनत् : कहिए सर !

(मणि टेबिल पर शंखचील को रख सनत् के दोनों हाथ पकड़ लेते हैं)

मणि : स्कूप, सनत् ! स्कूप चिदानन्द ब्रह्मचारी ने अश्लील कविता लिखी है। सदानन्द नहीं—स्वयं चिदानन्द। भगवाधारी चिदानन्द का नाम भी है, तस्वीर भी है ! तुम्हें, तुम्हें मैं क्या दे सकता हूँ, सनत् ?

सनत् : (साथ ही साथ) कन्फर्मेशन सर।

मणि : कन्फर्मेशन ! कन्फर्मेशन तो मामूली बात है। और क्या दूं···वही सोच रहा हूँ।

सनत् : और कुछ नहीं चाहिए, सर।

मणि : (जैसे जागकर) अच्छा, यह सब बातें बाद में होंगी, अभी खराब करने के लिए वक्त नहीं है, जरा सोचो तो··· इसे जमाकर कैसे लिखा जाए फर्ज करो···

सुप्रीति : (नेपथ्य से) मालाओं को जरा ठीक से उतार यूँ, बेवकूफ कहीं का !

मणि : उस कमरे में आ जाओ—जरा इसे पहले ठीक कर लें।

(सनत् के साथ आफिस में आते हैं सुप्रीति का

प्रवेश, पीछे पीछे दो भारी महिलाओं के साथ पांचू अंदर से उसी समय लिलि का प्रवेश) उसका मिज़ाज बिल्कुल बिगड़ा हुआ है माला देखकर रुक गई, जैसे जले पर नमक छिड़का गया हो)

सुप्रीति : (आकर्ण हँसकर) देख तो लिलि ! समरजीत बाबू की माला कैसी रही ?

(लिलि भय से बैठ जाती है द्रुत यवनिका ?)

॥ समाप्त ॥

50/-